15वां अंक

# अभिव्यक्ति

## वार्षिक हिंदी पत्रिका

# अभिव्यक्ति

**अंक- चौदहवां, वर्ष- 2022 (डिजिटल संस्करण)**

**संरक्षक**

विवेक खनेजा

**संपादक**

डॉ. आरती नूर

सुनीता अरोड़ा

**सह संपादक**

ओम प्रकाश शर्मा

**कवर डिजाइन**

मुकुंद कुमार रॉय

**डिजिटल संस्करण**

अमिय मोहंती

**विशेष सहयोग**

नवीन चन्द्र

**प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं, उनसे सी-डैक, नोएडा और संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।**

**प्रगत संगणन विकास केन्द्र**

अनुसंधान भवन, सी-56/1, सैक्टर-62, नोएडा- 201309

फोन: 0120-2210800, ई-मेलः hindicellnoida@cdac.in

# इस अंक में

## तकनीकी लेख


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1 | स्मार्ट कार्ड: विभिन्न राष्ट्रीय सेवाओं के लिए एक समाधान (सॅलूशॅन) | सौरीश बेहेरा | 7 |
| 2 | स्मार्ट फोन सुरक्षा क्या है और अपने स्मार्टफ़ोन को सुरक्षित कैसे रखें | काजल कश्यप, बलराम रक्सवाल | 13 |
| 3 | प्रकाशमय ट्रेनिंग | वी. के. शर्मा, डॉ. लक्ष्मी कल्याणी | 17 |
| 4 | मेटावर्स से वर्चुअल दुनिया में एंट्री | अमिय मोहंती | 19 |
| 5 | डीप लर्निंग क्या है? | बबिता | 22 |
| 6 | 5 जी नेटवर्क | अमिय मोहंती | 24 |
| 7 | साइबर अपराध: कोविड -19 के बाद घर से काम करने के जोखिम | शिवम मिश्रा | 27 |
| 8 | सर्वर क्या है? | राहुल जेनवाल | 30 |
| 9 | राष्ट्रीय डिजिटल विश्वविद्यालय - एक अनोखी पहल | गौरव कश्यप, अनुभव जैन | 31 |


## गैर-तकनीकी लेख/कहानी


| | | | |
|---|---|---|---|
| 10 | राष्ट्रीय अनुवाद मिशन | ओम प्रकाश शर्मा | 33 |
| 11 | निकली हिन्दी सैर पर... | श्वेता नारंग | 36 |
| 12 | इंडिया@75 : हमने क्या खोया और क्या पाया | रवि कुमार सिंह | 38 |
| 13 | सूर्य नमस्कार-योगासनों में सर्वश्रेष्ट | नीता राणपरा | 40 |
| 14 | शास्त्रों में भोजन के नियम | नीरू शर्मा | 42 |
| 15 | योग का महत्व | नीता राणपरा | 43 |
| 16 | पर्यावरण संरक्षण बनाम शहरी विकास | गजेन्द्र सिंह | 45 |
| 17 | अनमोल उपहार | भुबन दास | 48 |
| 18 | राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 | ओम प्रकाश शर्मा | 49 |
| 19 | राष्ट्रमंडल खेल- 2022 | नितेश कुमार | 54 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 20 | भारत के शिल्प-आत्मा और आयाम | बैष्णवी कमल प्रसाद | 56 |
| 21 | भारत में लोकतंत्र | संजय कुमार | 63 |
| 22 | आजादी का अमृत महोत्सव | नवीन चन्द्र | 66 |
| 23 | प्रेम की शक्ति को पहचाने | अनिल कुमार | 69 |

**कविता**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 24 | अभिलाषा | ख्याति बलियान | 70 |
| 25 | इंसानियत | स्व. श्री सतीश नाथ पाठक | 71 |
| 26 | अनमोल वचन | नीरू शर्मा | 71 |
| 27 | पहली घड़ी | राजेंद्र सिंह | 72 |
| 28 | नारी | रियर एडमिरल के.एस. नूर | 73 |
| 29 | मोबाइल युग और आज के युवा | नीरू शर्मा | 74 |
| 30 | राजेंद्र के दोहे | राजेंद्र सिंह | 75 |
| 31 | नए दौर का संस्कार | अनिल कुमार | 76 |
| 32 | जिंदगी का सफर | सुदेश शर्मा | 77 |
| 33 | नारी का ममत्व | देव कुमार मिश्रा | 78 |
| 34 | मेरे सपनों का संसार | सुदेश शर्मा | 79 |
| 35 | कोविड-19 | शिवम मिश्रा | 80 |

**श्रद्धांजलि**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 36 | लता मंगेश्कर | सुनीता अरोड़ा | 81 |
| 37 | शिंजो आबे | ओम प्रकाश शर्मा | 83 |

**राजभाषा कॉर्नर**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 38 | सी-डैक, नोएडा में राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन रिपोर्ट : | नवीन चन्द्र | 85 |
| 39 | संसदीय राजभाषा निरीक्षण | ओम प्रकाश शर्मा | 88 |


♦♦♦

## संरक्षक की कलम से

# संदेश

स्वतंत्रता के पश्चात संविधान सभा द्वारा गहन विचार विमर्श एवं मंथन करने के बाद देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का सुविचारित निर्णय लिया गया। अत: इसके अंतर्गत बनाए गए अधिनियमों, नियमों का अनुपालन करना सांविधिक अनिवार्यता है। सरकारी कर्मचारी होने के नाते हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम अपने दैनिक सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग अवश्य करें और इसके निरंतर प्रयोग को बढ़ावा देने में अपना सक्रिय योगदान दें। इसको दृष्टिगत रखते हुए हिन्दी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सी-डैक, नोएडा द्वारा वर्ष 2009 से गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" का प्रकाशन किया जा रहा है।

यह पत्रिका हमारे केन्द्र में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए सतत प्रयासों का एक आइना है। हम सूचना प्रौद्योगिकी की नई-नई तकनीकों का विकास करने के साथ-साथ मौलिक हिन्दी लेखन को भी प्रोत्साहित करने में भी किसी से पीछे नहीं है। हमारे कर्मचारियों की हिन्दी में मौलिक सोच कल्पनाओं की अनूठी उड़ान है, जो तकनीकी लेखों, कविताओं और गैर तकनीकी लेखों का स्वरूप लेकर आगे बढ़ी है। हमारा यह प्रयास होगा कि यह पत्रिका अपने कलेवर को और अधिक संवारे निखरे। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के संवैधानिक प्रावधानों के निर्वाहन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए यह पत्रिका मील का पत्थर साबित होगी, ऐसा हमारा मानना है।

सी-डैक, नोएडा की गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" का 14वां अंक अपने आकर्षक कलेवर में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। हमें विश्वास है कि इसके तकनीकी लेख, कविताओं और गैर तकनीकी लेख आपके लिए उपयोगी होंगे। आशा है कि गृह पत्रिका का यह अंक आपको पसंद आएगा। कृपया अपने बहुमूल्य सुझाव देकर आगामी अंकों को और भी आकर्षक बनाने में हमें सहयोग प्रदान करें। अगर किसी कारणवश आपने इस अंक के लिए नहीं लिखा है तो अगले अंक के लिए पूरे मनोयोग से लेख तैयार रखें।

अंत में मैं, इस पत्रिका के लिए रचनाओं का योगदान देने वाले और इसके प्रकाशन से जुड़े कर्मचारियों को उनके सराहनीय योगदान के लिए हार्दिक बधाई देता हूं और इस पत्रिका के अनवरत प्रकाशन की कामना करता हूं।

(विवेक खनेजा)
कार्यकारी निदेशक
सी-डैक, नोएडा

♦♦♦

# संपादकीय

भाषा की बात करना राष्ट्रीय महत्व का विषय है। राजभाषा हिन्दी एक वैज्ञानिक एवं ध्वन्यात्मक भाषा है। उच्चारण तथा लेखन में एकरूपता इसकी वैज्ञानिकता का आधार है। गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" को स्तरीय एवं सफल बनाने के दृष्टिगत इसमें प्रकाशित सामग्री को लेखों, कविताओं एवं आलेखों के रूप में सूचनाप्रद, तथ्यात्मक, तकनीकी एवं रोचक होने के साथ-साथ आवश्यकतानुसार शुद्ध, साहित्यिक, सरल, भावपूर्ण एवं परिमार्जित भाषा शैली से संपन्न होना चाहिए, ताकि वह पाठकों के मानस पटल पर अपने रचना कौशल की अमिट छाप छोड़ सके।

सी-डैक इस वर्ष अपनी स्थापना की 35वीं वर्षगांठ मना रहा है। अपनी अनेक विशेषताओं में सी-डैक की प्रमुख विशेषता बहुयामी तकनीक का विकास करना है, कंप्यूटर, मोबाइल आदि उपकरणों पर चलकर जनसाधारण के जीवन को सुगम बनाने के साथ-साथ सरकार को भी ई-गवर्नेंस और डिजिटल इंडिया के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सी-डैक सहायता कर रहा है। भारत में भाषा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहा विकास पाश्चत्य देशों के वैज्ञानिकों के लिए उत्सुकता और कौतुहल का विषय बन चुका है। संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा 17 दिसम्बर, 2021 को किए गए इस केन्द्र के राजभाषा निरीक्षण के दौरान सी-डैक में भाषा संबंधी हो रहे तकनीकी विकास की भूरी-भूरी प्रशंसा की गई है।

"अभिव्यक्ति" के 14वें अंक में शामिल की गई रचनाओं की निष्पक्षता से जाँच-परख करके आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। आपके सुभावों का सदैव स्वागत है। पुरस्कार की श्रेणी में भाषा, भाव, तथ्य, मौलिकता और तारतम्यता का ध्यान रखकर रचनाओं की परख की गई है। इन रचनाओं का पत्रिका में प्रकाशन यह दर्शाता है कि हमारी सोच कल्पनाओं की ऐसी उड़ान है, जिसका लक्ष्य और इरादे ऊंचे हैं। हमें एक ऐसा मानक स्थापित करना होगा जो पत्रिकाओं की पंक्ति में एक मिसाल स्थापित कर सके। पत्रिका के इस अंक में दैनिक जीवन के लिए उपयोगी आधुनिक तकनीकों से परिपूर्ण तकनीकी लेख, सोचने को विवश करने वाली आज की जीवंत समस्याओं पर लेख व कविताएं सरल हिन्दी भाषा में प्रस्तुत की गई हैं।

हमे पूर्ण विश्वास है कि "अभिव्यक्ति" का यह अंक आपको पसंद आएगा तथा अन्य कर्मचारी भी भविष्य में इस पत्रिका के लिए रचनाओं का योगदान देने के लिए प्रेरित होंगे। रचनाओं का योगदान देने वाले कर्मचारियों एवं उत्साहवर्धन करने वालों को हदय से आभार व्यक्त करते हुए "अभिव्यक्ति" का 14वां अंक आप सभी को समर्पित है।

शुभकामनाओं के साथ,

- संपादक

♦♦♦

# स्मार्ट कार्ड: विभिन्न राष्ट्रीय सेवाओं के लिए एक समाधान (सॅल्यूशॅन)

सौरीश बेहेरा,
सह निदेशक

**सार (Abstract)** -

डिजिटल रूप से सक्षम सेवाएं प्रदान करना सरकार की प्राथमिकता बन गई है। स्मार्ट कार्ड गेम चेंजर बन गया है, क्योंकि इसमें डिलीवरी प्रक्रिया की दक्षता के स्तर को बढ़ाने की क्षमता है। ई-गवर्नेंस एप्लिकेशन, ई-पासपोर्ट आदि के प्रसार के कारण स्मार्ट कार्ड की मांग में तेजी आई है, जो स्मार्ट कार्ड बाजार के चालक बने हुए हैं। दूरसंचार के साथ-साथ ई-गवर्नेंस स्मार्ट कार्ड के लिए सबसे बड़े बाजारों में से एक है।

## I. प्रस्तावना (Introduction)

स्मार्ट कार्ड का एक लंबा इतिहास रहा है, यद्यपि हाल के वर्षों में उनका प्रसार हुआ है। भारतीय बाजार में, प्रारंभ में वे मुख्य रूप से दूरसंचार क्षेत्र में प्रयोग में लाए जाते थे, तथापि विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग किए जाने वाले उत्पाद की तीव्र मांग और विविधीकरण के साथ इस परिदृश्य में काफी परिवर्तन आया है। स्मार्ट कार्ड, कार्ड पर डेटा को संसाधित करने का एक सुरक्षित तरीका या दूरस्थ डेटा तक पहुंचने का एक सुरक्षित तरीका उपलब्ध करता है। स्मार्ट कार्ड अपनी कम्प्यूटेशनल और सुरक्षा विशेषताओं के कारण अधिक बहुमुखी (Versatile) हैं।

स्मार्ट कार्ड के कई उपयोग या फायदे हैं, जैसे उच्च स्तर की सुरक्षा, अधिक मेमोरी, उपयोग में आसानी, विश्वसनीयता, कम लागत आदि। एक स्मार्ट कार्ड अनिवार्य रूप से तीन मुख्य कार्यों को जोड़ता है: पहचान, प्रमाणीकरण और डेटा भंडारण।

### स्मार्ट कार्ड एप्लीकेशन (Smart card application)

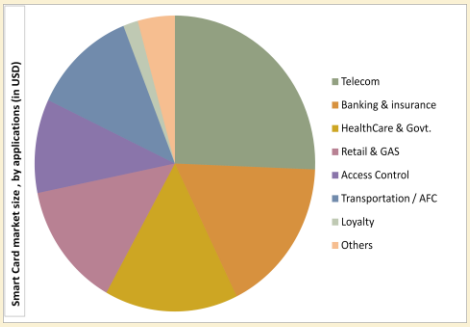


इसके कुछ प्रमुख एप्लीकेशन निम्नलिखित हैं:

- दूरसंचार
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली
- पे टीवी
- वित्तीय सेवाएं
- यात्रा पहचान

• स्वास्थ्य सेवा
• परिवहन/स्वचालित किराया संग्रह

चित्र 1: भारतीय स्मार्ट कार्ड मार्केट शेयर एप्लिकेशन (gminsights.com के अनुसार)

**स्मार्ट कार्ड मूल बातें: (Smart card basics)**

स्मार्ट कार्ड में एक सुरक्षित माइक्रोप्रोसेसर कोर, मेमोरी और इसके कामकाज को शक्ति देने के कुछ और साधन शामिल होते हैं।

प्रोसेसर (Processor): प्रोसेसर तेजी से विकसित हो रहे अनुप्रयोगों (Applications), बढ़ती मेमोरी और त्वरित आवश्यकताओं, सख्त लागत नियंत्रण और कम बिजली की खपत की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निरंतर विकसित हो रहे हैं। प्रोसेसर आमतौर पर चीन, यूरोप, ताइवान और अमेरिका से आयात किए जाते हैं। यह बहुत बड़ी निर्भरता है। सरकार की मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया पहल अब इन निर्भरताओं को समाप्त करने के लिए डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। इसका चिपसेट (chipset) कुल लागत का 40-50 प्रतिशत भाग होता है, जबकि कार्ड, ओएस और एकीकरण लागत शेष लागत में शामिल होता है।

सुरक्षा (Security) स्मार्ट कार्ड घटकों के बारे में बात करें तो सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इसे पिन, पासवर्ड, बायोमेट्रिक्स या एन्क्रिप्शन कुंजी (Key) के रूप में कार्यान्वित किया जाता है।

सामान्य प्रोसेसर बहुत कम या कहें कि कोई सुरक्षा प्रदान नहीं करता है। दूसरी ओर एक सुरक्षित प्रोसेसर कोर छेड़छाड़-प्रतिरोधी (tamper-resistant) होता है और यह FIPS 140 और EAL 5 जैसे प्रमाणन के साथ, साइड चैनल हमले जैसे सबसे परिष्कृत भौतिक हमलों के दौरान भी ऑन-चिप जानकारी की पुनर्प्राप्ति या संशोधन को रोकने में सक्षम होता है।

**ऑपरेटिंग सिस्टम (Operating System)**

यह हार्डवेयर-विशिष्ट फर्मवेयर है जो ऑन-कार्ड स्टोरेज, प्रमाणीकरण, एन्क्रिप्शन और संचार प्रोटोकॉल के प्रबंधन के लिए सुरक्षित पहुंच के लिए बुनियादी कार्यक्षमता प्रदान करता है। अधिकांश ओ.ई.एम. स्मार्ट फोन की तरह एक देशी ओएस देंगे। ड्राइविंग लाइसेंस में इस्तेमाल

होने वाले स्कोस्टा (SCOSTA) जैसे मानकों पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। यह भी सरकार के राजपत्र अधिसूचना में प्रकाशित किया गया है। सी-डैक ने अपने ग्राहकों के लिए SCOSTA-PKI और इसके संस्करण (जैसे कि MISCOS, e-Passport) भी विकसित किए हैं।

के.एम.एस. (KMS): के.एम.एस. एक अन्य घटक (component) हैं जो स्मार्ट कार्ड पारिस्थितिकी तंत्र में सुरक्षा को सक्षम बनाता है। इसकी कुंजी (key) एक गुप्त पासवर्ड है जिसका उपयोग जानकारी को एन्क्रिप्ट या डिक्रिप्ट करने के लिए किया जाता है। यह केएमएस (KMS) एक क्रिप्टोसिस्टम में क्रिप्टोग्राफ़िक कुंजियों (keys) के प्रबंधन को संदर्भित करता है। इसमें कुंजियों (keys) के निर्माण, विनिमय, भंडारण, विनाश (destruction) और प्रतिस्थापन (replacement) से निपटना शामिल है। फ़ाइल सिस्टम या ले आउट तक पहुंच को सुरक्षा शर्तों के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है, जैसा लागू हो।

**मेमोरी आवश्यकताएँ (Memory requirements):**

अनुप्रयोग की बढ़ती जटिलता और कड़े सुरक्षा उपायों दोनों को पूरा करने के लिए अधिक मेमोरी (memory) की आवश्यकता होती है। 256+ AES जैसे सुरक्षा एल्गोरिदम को बड़ी कुंजियों (keys) की आवश्यकता होती है, बायोमेट्रिक पहचान में बड़े डेटा सेट और ऑपरेटिंग सिस्टम शामिल होते हैं और इससे फ़ाइल सिस्टम बढ़ सकते हैं। इस तरह की मेमोरी आवश्यकताओं को माइक्रो प्रोसेसरों की वर्तमान पीढ़ी में उच्च कोड घनत्व और 32/64 बिट एड्रेसिंग का उपयोग करके पूरा किया जाता है।

पॉवर (Power): स्मार्ट कार्ड के संचालन को पॉवर प्रदान करने के लिए, विशेष रूप से संचार कार्य के लिए पॉवर  की आवश्यकता होती है। जबकि संपर्क आधारित कार्ड को स्रोत पॉवर से संपर्क की आवश्यकता होती है, संपर्क रहित कार्ड रीड ऑपरेशन के दौरान टर्मिनल से ही (आर.एफ. के माध्यम से) पॉवर (Power) संग्रहित करने में सक्षम होते हैं।

**डेटा पढ़ने के लिए स्मार्ट कार्ड रीडर या टर्मिनल (Smart card readers or terminal to read the data):**

रीडर फॉर्म फैक्टर (जैसे वॉल माउंट, हैंडहेल्ड आदि) स्मार्ट कार्ड एप्लिकेशन पर निर्भर करता है। सामान्यत:, एक स्मार्ट कार्ड रीडर/टर्मिनल को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है:- यू.एस.बी. या पोर्ट आधारित स्मार्ट कार्ड रीड/राइट पेरिफेरल डिवाइस (पी.सी./एस.सी.) के साथ पी.सी./वर्कस्टेशन या स्वयं निहित वायर्ड या वायरलेस एम्बेडेड सिस्टम जो कार्ड रीडर/राइटर को

एकीकृत कर सकता है, जिसे पेरिफेरल (प्वाइंट ऑफ सेल एप्लीकेशन) के रूप में प्रयोग किया जाना है।

**संचार प्रोटोकॉल और मानक (Communication protocol & standards)**

इसके अतिरिक्त, स्मार्ट कार्ड कॉन्टैक्ट या कॉन्टैक्टलेस या ड्यूल मोड में काम कर सकते हैं। कॉन्टैक्टलेस सेटअप विभिन्न संचार तकनीकों जैसे आरएफ इंडक्शन का उपयोग करते हैं। आरएफ संचार को एल.ओ.एस. (LOS) की आवश्यकता नहीं होती है।

आई.एस.ओ. मानकों (ISO Standards) के अनुसार, T0 करैक्टर (character) स्तर पर संचरण प्रोटोकॉल है और T1, ISO,IEC-7816-3 में परिभाषित ब्लॉक स्तर संचरण है, जबकि ISO/IEC 14443 संपर्क रहित इंटरफेस के माध्यम से नियंत्रित होता है। IS 16695 Part-I (SCOSTA: मूल कमांड सेट) और Part-II (SCOSTA:-PKI)) बी.आई.एस. (BSI) द्वारा प्रकाशित हाल ही का मानक हैं।

**II स्मार्ट कार्ड के घटक (Components of Smart Card)**

<table>
<tr><td colspan="2">Smart Card Applications</td><td colspan="2">Host Connectivity & UI</td><td>Maintenance/ Security & Diagnostics</td><td>Application</td></tr>
<tr><td colspan="3">Smart Card(ICC) Service Provider</td><td colspan="2">Smart Card Cryptographic Service Provider</td><td rowspan="3">Smart Card Middleware</td></tr>
<tr><td colspan="5">Smart Card (ICC) Resource Manager</td></tr>
<tr><td colspan="5">OS</td></tr>
<tr><td colspan="5">Other Devices & Processor Specific Package</td><td rowspan="3">Hardware Abstraction Layer, Low Level Driver</td></tr>
<tr><td>SCR Driver</td><td>LCD Driver</td><td>Serial Port Driver</td><td colspan="2">USB port driver</td></tr>
<tr><td colspan="5">Hardware</td></tr>
</table>

चित्र. 2. स्मार्ट कार्ड के घटक (Components of Smart Card)

III. **विनिर्देश (Specifications):**

**सार्वजनिक वितरण प्रणाली (Public Distribution Systems)**

सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पी.डी.एस.) अवैध जमाखोरी, अयोग्य पक्षों को सामग्री की अनधिकृत बिक्री और गरीबों को वंचित करने, पुराने और सड़े हुए सामानों की बिक्री और हर अन्य कल्पनीय त्रुटियों से त्रस्त है। स्मार्ट कार्ड का उपयोग इस उपयोग के मामले को सही करता है।

स्मार्ट कार्ड में प्रामाणिक और सत्यापित उपयोगकर्ता डेटा मौजूद होता है, जो उपयोगकर्ता को विशिष्ट रूप से पहचानने में सहायता करता है। यह स्मार्ट कार्ड सरकार द्वारा प्रदान किए गए विभिन्न राशन स्कीम का लाभ उठाने में सक्षम बनाता है और मध्य स्तर पर किसी भी कुप्रबंधन को समाप्त करता है।

**स्मार्ट कार्ड संबंधी भविष्य के रुझान (Smart Card Future Trends)**

**वृहत क्षमता (Larger capacities)** : स्मार्ट कार्ड को एप्लिकेशन के अनुसार अधिक विवरण संग्रहित करने के लिए वृहत मेमोरी की आवश्यकता होगी, दूरसंचार जगत में भी डिवाइस, सामग्री और सेवाओं का एक अभिसरण है जिसके लिए स्मार्ट कार्ड (एक बड़ी क्षमता के लिए सिम) की आवश्यकता होती है।

**ऑटोमेशन और रोबोटिक्स में बढ़ा हुआ अनुप्रयोग (Increased application in automation and robotics) :** मशीन-मशीन (M2M) संचार स्मार्ट कार्डों की मांग में वृद्धि को बढ़ावा देने वाले प्रमुख एप्लीकेशनों में से एक है। M2M संचार बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के कई मशीनों या मशीनों और सर्वर के बीच संचार को संदर्भित करता है। यह सेंसर का एक नेटवर्क हो सकता है, जो तापमान और आर्द्रता जैसे विभिन्न मापदंडों को मापता है और उन्हें एक सर्वर को संप्रेषित करता है।

**एनएफसी (NFC)**: - यह एक छोटी रेंज, उच्च आवृत्ति संचार तकनीक है, जो आपके मोबाइल फोन को एक स्मार्ट कार्ड रीडर और राइटर के रूप में कार्य करने में सक्षम बनाती है और इसे एक बहुत शक्तिशाली डिवाइस में परिवर्तित करती है। यह स्मार्ट कार्ड के लिए एक पूरक तकनीक के रूप में भी उभर रहा है। यह एक दूसरे से 10 सेमी दूरी के भीतर उपकरणों के बीच डेटा के आदान-प्रदान को सक्षम बनाता है। NFC ISO/IEC 14443 प्रॉक्सिमिटी कार्ड मानक का एक विस्तार है, जो एक स्मार्ट कार्ड और एक रीडर के इंटरफेस को एक डिवाइस में जोड़ता है।

**रिमोट बैंकिंग के लिए प्रमाणीकरण (Authentication for remote banking):** SMS+NFC अगली पीढ़ी की बैंकिंग के लिए एक घातक संयोजन हो सकता है। स्मार्ट कार्ड इस क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, क्योंकि इनमें फुलप्रूफ प्रमाणीकरण की आवश्यकता बहुत मजबूत (Strong) है।

## IV. सारांश (Summary)

जबकि बाजार, सरकार द्वारा संचालित परियोजनाओं, जिनमें मोडल ट्रांसपोर्ट से लेकर ई-पेमेंट्स शामिल है, चिप सप्लायर और कार्ड मैन्युफैक्चरर्स टेक्नोलॉजी ड्राइवर हैं। देश भर में स्मार्ट कार्ड का सफल कार्यान्वयन ई-गवर्नेंस परियोजनाओं को देश भर में न केवल सफल बनाता है, बल्कि इसका सफल कार्यान्वयन, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि को बदलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके प्रमुख सकारात्मक आर्थिक और सामाजिक निहितार्थ होंगे, जिसमें प्रौद्योगिकी का अधिक महत्वाकांक्षी और गहन रूप से लाभ उठाने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होंगे।

## संदर्भ (Reference)

[1] www.gminsights.com
[2] विकिपीडिया

♦♦♦

### जरा सोचिए

हिन्दी हमारी राजभाषा है
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है
हिन्दी हमारी राज्यभाषा है

फिर हिन्दी के कार्य में संकोच क्यों?

हिन्दी में कार्य करें, राष्ट्र का निर्माण करें।

# स्मार्ट फ़ोन सुरक्षा क्या है और अपने स्मार्ट फ़ोन को कैसे सुरक्षित रखें

- काजल कश्यप, परियोजना अभियंता
- बलराम रक्सवाल, परियोजना अभियंता

स्मार्टफोन आई.टी. और संचार परिदृश्य को काफी हद तक बदल रहे हैं। एक स्मार्टफोन लगभग हर वह काम कर सकता है जो एक कंप्यूटर कर सकता है। यह कहना सही होगा कि हमारे मोबाइल उपकरणों ने हमारे जीवन पर पूरी तरह से नियंत्रण कर लिया है. लोग अपने मोबाइल डिवाइस पर दिन में कम से कम 4-5 घंटे बिता रहे हैं। आज अधिकांश कॉर्पोरेट कर्मचारी अपने स्मार्टफ़ोन पर स्थापित ई-मेल क्लाइंट के माध्यम से अपने आधिकारिक ई-मेल का उपयोग करते हैं। मूवी टिकट बुक करने से लेकर फंड ट्रांसफर करने तक, सभी ई-कॉमर्स और ऑनलाइन बैंकिंग लेनदेन के लिए स्मार्टफोन का उपयोग कर रहे हैं।

4G की उच्च गति के साथ, स्मार्टफोन विशेष रूप से कामकाजी पेशेवरों और छात्रों के बीच अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं। इसके अलावा, मोबाइल डिवाइस अब दुनिया भर में वेबसाइट ट्रैफ़िक के बहुमत 55% के लिए जिम्मेदार हैं, जो यह साबित करते हैं कि वे हमारे जीवन में कितने महत्वपूर्ण हैं।

**स्मार्ट फोन को सुरक्षित करने की आवश्यकता क्यों है?**

जिस मोबाइल पर आप इतना भरोसा कर रहे हैं उस मोबाइल डिवाइस के अंदर छिपे सुरक्षा खतरों के बारे में जानकार आप आश्चर्यचकित हो जायेंगे।

**1. गोपनीय जानकारी का चोरी हो जाना (डाटा लीकेज)**

मोबाइल ऐप्स अक्सर अनजाने में डेटा लीक होने का कारण बनते हैं। ऐसे ऐप मोबाइल उपयोगकर्ताओं के लिए एक वास्तविक समस्या है जो उन्हें व्यापक अनुमति देते हैं, लेकिन हमेशा सुरक्षा जांच नहीं करते हैं। ये आम तौर पर अधिकारिक ऐप स्टोर में पाए जाने वाले मुफ्त ऐप होते हैं, जो विज्ञापन के रूप में प्रदर्शित करते हैं, लेकिन व्यक्तिगत और संभावित कॉर्पोरेट डेटा भी एक रिमोट सर्वर पर भेजते हैं, जहां इसे विज्ञापनदाताओं द्वारा और कभी-कभी साइबर अपराधियों द्वारा चलाया जाता है।

**2. असुरक्षित वाई-फाई**

अगर आप कही भी किसी भी वाई-फाई से अपने मोबाइल को कनेक्ट कर लेते हैं तो साइबर अपराधी आपकी ऑनलाइन गतिविधियों को आसानी से देख सकते हैं। एक साइबर अपराधी एक नकली वाईफाई हॉटस्पॉट बना सकता है ताकि उपयोगकर्ताओं इससे कनेक्ट करें और उनका डेटा साइबर अपराधी चुरा सकें।

**3. फ़िशिंग हमला (फ़िशिंग अटैक)**

साइबर क्रिमिनल अक्सर ई-मेल, टेक्स्ट मैसेज और यहां तक कि वॉयस कॉल का इस्तेमाल करके आपको मूर्ख बनाने के लिए करते हैं। जैसे कि पासवर्ड देने, मैलवेयर डाउनलोड करने के लिए लिंक पर क्लिक करने या लेनदेन की पुष्टि करने के लिए करते हैं- यह एक ऐसी प्रथा है जिसे फ़िशिंग कहा जाता है। "फ़िशिंग सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली और सफल तरकीबों में से एक है जिसका उपयोग साइबर अपराधी लोगों को मूर्ख बनाने के लिए करते हैं।

**4. स्पाइवेयर (Spyware)**

ऐसे ऐप्स से सावधान रहें जो आपके प्रियजनों और बच्चों की गतिविधि की निगरानी करने का वादा करते हैं-वास्तव में, वे स्पाइवेयर हैं जो "स्मार्टफोन के माध्यम से बेहद आक्रामक डिजिटल निगरानी की अनुमति देने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, साइबर अपराधी (क्रिमिनल्स) इन ऐप्स का उपयोग टेक्स्ट और ई-मेल पढ़ने, फोन के स्थान को ट्रैक करने, गुप्त रूप से आस-पास की बातचीत सुनने और अन्य गतिविधियों के बीच फोटो लेने के लिए कर सकते हैं

**5. कमजोर सुरक्षा वाले ऐप्स**

मजबूत सुरक्षा मानकों के बिना कई स्मार्टफोन ऐप आपकी जानकारी लीक कर सकते हैं। यदि ऐप डेवलपर कमजोर एन्क्रिप्शन एल्गोरिदम का उपयोग करते हैं, तो उन्हें हैक करना आसान होता है।

**6. कमज़ोर पासवर्ड**

अगर आप कमज़ोर पासवर्ड का उपयोग कर रहे हैं, जैसे की ancd@12345 या पासवर्ड के तौर पर अपना नाम या मोबाइल नंबर तो आपका पासवर्ड आसानी से हैक हो सकता है। साइबर अपराधी ऐसे पासवर्ड आसानी से अनुमान लगा सकते हैं।

**7. पुराने उपकरण (Out of Date Devices)**

आखिरी बार आपने अपना फ़ोन कब अपडेट किया था? यह आपके डिवाइस को मैलवेयर और अन्य साइबर हमलों से बचाने के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है। जो फ़ोन सुरक्षा अद्यतन प्राप्त करने के लिए बहुत पुराने हैं, उन्हें बदला जाना चाहिए।

**8. पहचान की चोरी (आइडेंटिटी थेफ़्ट)**

साइबर अपराधी चोरी की गई पहचान का उपयोग नए मोबाइल फोन खाते खोलने, या मौजूदा खाते को हाईजैक करने और फोन अपग्रेड करने के लिए कर सकते हैं। पीड़ितों को अपने वाहक से बड़े बिल प्राप्त हो सकते हैं या अन्य वाहकों के खातों से शुल्क प्राप्त हो सकते हैं, जिन्हें पहचान चोरों ने पीड़ितों की जानकारी के बिना खोला था।

**स्मार्ट फ़ोन को सुरक्षित कैसे रखें :**

- अपने स्मार्ट फ़ोन में हमेशा लॉक लगा कर रखें।
- मजबूत (स्ट्रांग) पासवर्ड का उपयोग करे पासवर्ड के रुप में अपना नाम, जन्म तिथि या फिर मोबाइल नंबर बिलकुल ना डालें। पासवर्ड में विभिन्न प्रकार के लेटर, स्टाइल, नंबर और सिंबल का इस्तेमाल करें।
- एक ही पासवर्ड को दो से ज़्यादा बार कहीं पर भी इस्तेमाल न करें। कोई भी ऐसा पासवर्ड न डालें जो आसानी से याद किया जा सके। अपने पासवर्ड को 6 महीने के अंतराल पर बदलते रहें।
- अगर आप एंड्राइड यूजर है तो ऐप्स हमेशा गूगल प्ले स्टोर और आई.ओ.एस. यूजर है तो ऐप्स स्टोर से ही डाउनलोड करें। अगर कोई ऐप्स गूगल प्ले स्टोर या ऐप्स स्टोर पर नहीं मिल रही है तो कंपनी की ऑफिशियल वेबसाइट से डाउनलोड करें। थर्ड पार्टी वेबसाइट्स से कभी भी ऐप्स डाउनलोड न करें। क्योंकि यहाँ आपको वायरस इन्फेक्टेड और मालिसियस ऐप्स मिलती हैं।
- किसी भी अप्प को डाउनलोड करते समय उसकी ऐप परमिशन जरूर पढ़ें।
- स्मार्ट फोन व ऐप को लगातार अपडेट करते रहें।
- किसी भी लिंक पर बिना सोचे समझे क्लिक ना करें, इस से मैलवेयर और वायरस आपके स्मार्टफोन में डाउनलोड हो सकता है।
- अपने स्मार्टफोन में एंटीवायरस डाउनलोड अवश्य करें।

- हैकर्स आपके स्मार्टफोन में कई तरह से प्रवेश कर सकते हैं। ब्लूटूथ, लोकेशन सर्विस, वाई-फाई और सेलुलर डेटा भी हैकर्स के लिए एक आमंत्रण हो सकते हैं। इसलिए अकारण ब्लूटूथ या अन्य सेटिंग्स को खुला ना छोड़ें।

♦♦♦

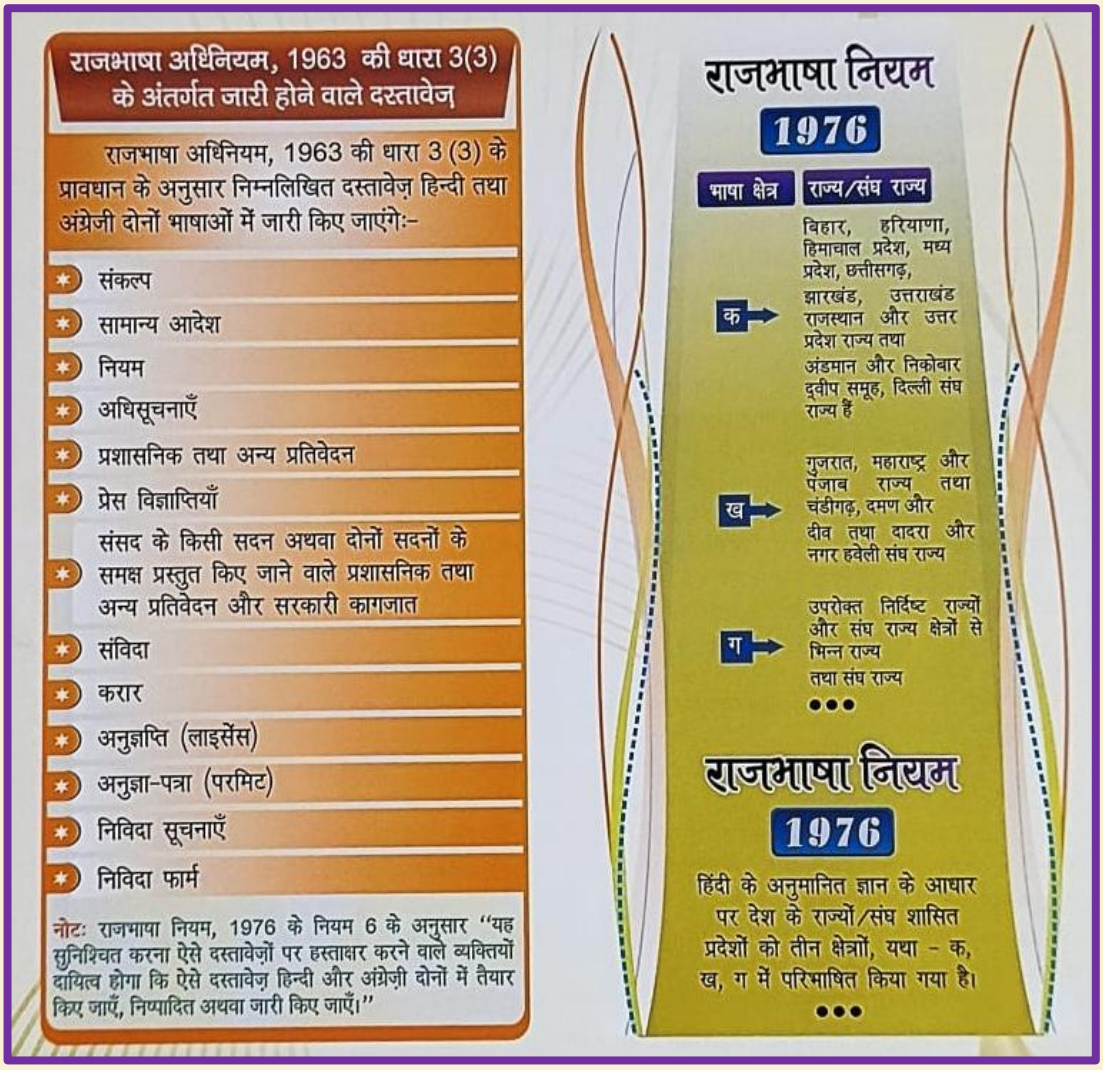

# प्रकाशमय ट्रेनिंग

## (PRAKASHMAY Training)

## (पैनडेमिक रीलेटिड अवेयरनेस एण्ड एक्सन स्पोर्टेड हेल्थ मैनेजमेंट अमॉगष्ट यूथ)

- वी. के. शर्मा, वरिष्ठ निदेशक
- डॉ. लक्ष्मी कल्याणी, संयुक्त निदेशक

कोविड-19 महामारी का प्रकोप दुनिया भर के लगभग हर क्षेत्र में देखा जा चुका है और भारत भी इससे वंचित नहीं रह पाया। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस महामारी से शिक्षा व स्वास्थ्य क्षेत्र अत्यधिक प्रभावित हुए हैं।

जहां तक शिक्षा क्षेत्र की बात हैं, कोविड-19 महामारी के दौरान, सामाजिक दूरी के मानदंडों और इस वायरस के फैलने के डर के कारण, देश में सभी शिक्षा संस्थानों के साथ-साथ मेडिकल कॉलेज भी कुछ समय के लिए बंद कर दिए गए थे। फिर सभी शिक्षा संस्थान धीरे-धीरे ऑनलाइन शिक्षा की तरफ परिवर्तित हुए और बहुत कुशलतापूर्वक शिक्षा फिर से सुचारात्मक रूप से शुरू हो गई। वर्तमान में भी अब ऑनलाइन मीडियम ऑफलाइन क्लासेस के साथ-साथ प्रयोग किया जा रहा हैं, ताकि भविष्य में जब कभी भी ऐसे हालात उत्पन्न हों तो चिकित्सा शिक्षा की निरंतरता को सुचारू रूप से बनाए रखा जा सके। यह स्थिति मेडिकल संस्थानों में भी उत्पन्न हुई और चूंकि मेडिकल शिक्षा प्रेक्टिकल-शिक्षा होती हैं, ऑनलाइन मेडिकल शिक्षा की अपनी अलग ही चुनौतियां थी। परन्तु शिक्षा को निरंतर बनाए रखने के लिए ऑनलाइन अथवा ई-लर्निंग माध्यम को अपनाना आवश्यक हो गया था।

दूसरी ओर, बहुत सारे अस्पतालों में इस महामारी से निपटने के लिए अनुभवी व कुशल डॉक्टरों अथवा हैल्थ केयर वर्कस की कमी हो गई थी। भविष्य में अगर कभी ऐसी स्थिति सामने आए तो उसके प्रबंधन में कोई लापरवाही या कमी न हो, इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) द्वारा प्रायोजित परियोजना के तहत "फैस्लेटिंग आई.टी. इनबिल्ड ट्रेनिंग फॉर जेनरेटिंग स्किल हैल्थ केयर वर्कर इन जनरल पेनडेमिक मैनेजमेंट और कोविड-19 मैनेजमेंट" नामक प्रोजेक्ट "सेंटर फॉर डेवेलपमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग" द्वारा संचालित किया गया।

इस कोर्स का उद्देश्य कोविड-19 महामारी के प्रमुख मुद्दों से संबंधित पर्याप्त उचित ज्ञान व कौशल प्रदान करना है ताकि नवोदित डॉक्टरों व अन्य स्नातक छात्रों व हेल्थ केयर वर्करों को

भविष्य में कोविड-19 रोगी प्रबंधन या अन्य किसी वैश्विक महामारी में परेशानी का सामना न करना पड़े।

इसके लिए आवेदन करने हेतु, हेल्थ केयर वर्कस, एम.बी.बी.एस., अंतिम वर्ष व नर्सिंग स्टाफ, पोर्टल की वेबसाइट (Meet-vt.in) पर पंजीकरण करते हैं। कोर्स में पंजीकृत छात्रों को एम्स, दिल्ली व अन्य प्रतिष्ठित मेडिकल संस्थानों से चयनित सब्जेक्ट मैटर एक्सपर्ट द्वारा ऑनलाइन ट्रेनिंग MEet पोर्टल (meet-vit.in) के माध्यम से दी जाती है।

यह ऑनलाइन ट्रेनिंग ब्लेन्डेड मोड में करायी जा रही है, जहां 6 दिनों तक प्रत्येक दिन 2 घंटे की लाइव क्लास होती हैं और साथ ही साथ छात्र 15 दिनों तक सेल्फ पेस्ड मोड में पोर्टल से ई-कोर्सेस व सेल्फ असेसमेंट व क्वीज एक्सेस कर सकते हैं। प्रशिक्षण के उपरांत ऑनलाइन परीक्षा में सफल हुए छात्रों को ई-सर्टिफिकेट प्रदान किये जाते हैं।

इस परियोजना के अंतर्गत प्रथम प्रशिक्षण के शुभारंभ के अवसर पर डॉ. रणदीप गुलेरिया, निदेशक, एम्स, नई दिल्ली, श्री विवेक खनेजा, कार्यकारी निदेशक, सी-डैक, नोएडा, श्री वी. के. शर्मा, वरिष्ठ निदेशक, सी-डैक, नोएडा और एम्स, दिल्ली एवं प्रकाशमय टीम के एक्सपर्ट उपस्थित रहे। इस स्वर्णिम अवसर पर डॉ. रणदीप गुलेरिया ने बताया कि ई-लर्निंग प्लेटफार्म पर पूर्णतः संचालित यह कोर्स मेडिकल क्षेत्र के छात्रों व हैल्थ केयर वर्करों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा तथा यह कोर्स छात्रों को व्यापक जानकारी व उपयुक्त कौशल प्रदान करेगा।

अब तक ऐसे कुल सात प्रशिक्षण सफलतापूर्वक संपन्न कराय जा चुके हैं, जिसमें देश भर में स्थित लगभग 189 मेडिकल कॉलेजों से 2530 हेल्थ केयर वर्कर इस कोर्स का लाभ ले चुके हैं। निश्चय ही यह कोर्स मेडिकल छात्रों व अन्य हैल्थ केयर वर्कस के लिए कोविड-19 जैसी महामारी व भविष्य में अन्य विपदाओं के दौरान रोगी प्रबंधन में अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा।

♦♦♦

राष्ट्रीय व्यवहार के लिए हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गाँधी

# मेटावर्स (Metaverse) से वर्चुअल दुनिया में एंट्री

- अमिय मोहंती,
परियोजना अभियंता

Metaverse के द्वारा आप घर बैठे एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करते हैं जहां आपको भौतिक रूप से मौजूद रहने की जरूरत नहीं है, बल्कि आप आभासी रूप से (वर्चुअली) किसी खास इवेंट या प्रोग्राम का हिस्सा बन सकते हैं।

**मेटावर्स का अर्थ क्या है?**

Metaverse, दो शब्दों से मिलकर बना है, Meta और Verse. जहाँ, Meta शब्द का अर्थ है, जिसकी कोई सीमा न हो यानि असीमित (limitless) वहीं, verse शब्द का अर्थ है, ब्रह्माण्ड यानी universe यानी, Metaverse शब्द का अर्थ है, एक ऐसी दुनिया जिसकी कोई सीमा न हो।

पिछले वर्ष सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म **Face book** ने अपन नाम बदलकर Meta कर लिया था। जिसके बाद यह कहा गया था कि कंपनी अब अपना फोकस **Metaverse** टेक्नोलॉजी पर केन्द्रित करेगी। इसके पश्चात ही Metaverse नाम चर्चा में आया और अब धीरे-धीरे लोगों के बीच इसका उपयोग भी किया जा रहा है। Metaverse में एक साथ कई तकनीकों का उपयोग किया जाता है, इसमें संवर्धित वास्तविकता, आभासी वास्तविकता, मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी और कृत्रिम बुद्धिमता जैसी तकनीक शामिल हैं।

मेटावर्स का अनुभव आप वर्चुअल रियलिटी हेडसेट और हाई-स्पीड इंटरनेट के बिना नहीं कर सकते। इसमें आग्मेंट रियलिटी चश्में, स्मार्टफोन और मोबाइल एप की जरूरत होती है। मेटावर्स में किसी का अवतार बनाने के लिए उसकी 360 डिग्री स्कैनिंग होती है। मेटावर्स में खरीद-बिक्री के लिए क्रिप्टोकरेंसी का इस्तेमाल होता है। मेटावर्स पूरी तरह से हाई-स्पीड इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमता, संवर्धित वास्तविकता, आभासी वास्तविकता, मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी पर आधारित है। मेटावर्स भले ही एक आभासी दुनिया है लेकिन इसमें हार्डवेयर का प्रयोग व्यापक स्तर पर होता है। मेटावर्स इंटरनेट का भविष्य है।

Metaverse जिसमे अलग अलग टेक्नोलॉजी जैसे की वर्चुअल रियालिटी, संवर्धित वास्तविकता और वीडियो जैसे तकनीक का उपयोग करके उन्हें संघटित करके उपयोगकर्ता डिजिटल ब्रह्मांड में live रहेंगे। मेटावर्स की मदद से यूजर अपने दूसरे यूजर के साथ काम कर सकेगे, खेल सकेंगे

और अपने दोस्तो के साथ कनेक्ट हो सकेंगे। इसके अलावा एक यूजर किसी दूसरे यूजर के साथ भी अलग अलग कॉन्सर्ट में शामिल हो सकेंगे और वर्चुअल पूरी दुनिया की सैर कर सकेंगे।

जिस प्रकार आज इंटरनेट पर हम सोशल मीडिया की सहायता से अपने दूसरे दोस्तों के साथ कनेक्ट होते है, वैसे ही मेटावर्स की मदद से हम एक दूसरे के साथ लाइव डिजिटल आभासी दुनिया (वर्चुअल वर्ल्ड) में कनेक्ट हो पाएंगे।

**कौन कौन सी कंपनी Metaverse पर काम कर रही है?**

Metaverse पर आज की दुनिया में बहुत सारी कंपनियां काम कर रही है। Metaverse पर कई बड़ी-बड़ी कंपनियां जैसे कि फेसबुक, गूगल, स्नैपचैट और एपिक गेम जैसे बड़ी-बड़ी दिग्गज कंपनियां काम कर रही हैं। नीचे मेटावर्स के उदारहरण दिए हैं, कुछ बड़ी कम्पनी के प्रोजेक्ट के नाम दिए हैं, जो आज मेटावर्स पर काम कर रहे हैं।

**मेटा (META)**

हाल ही में फेसबुक में अपना नाम को रिब्रांड किया है। जो अब मेटावेर्स से “Meta” शब्द को लेकर अपना रिब्रांड किया है। tech giant कम्पनी फेसबुक ने पहले से ही virtual reality में बहुत इन्वेस्ट किया है, जिसमें 2014 में Oculus का अधिग्रहण भी शामिल है।

Meta एक आभासी दुनिया (वर्चुअल वर्ल्ड) की कल्पना करता है, जहां डिजिटल अवतार VR headsets का उपयोग करके यूजर काम, यात्रा या मनोरंजन के लिए जुड़ते हैं। इसके आलावा

मेटा के सीईओ मार्क जुकरबर्ग ने भी मेटावर्स को लेकर काफी सारे बयान दिए हैं और इसको लेकर काफी उत्सुक भी है।

**माइक्रोसॉफ्ट (Microsoft)**

सॉफ्टवेयर की दिग्गज कंपनी माइक्रोसॉफ्ट पहले से ही होलोग्राम का उपयोग करती है और अपने माइक्रोसॉफ्ट मेश प्लेटफॉर्म के साथ कंबाइन और विस्तारित वास्तविकता (XR) applications को विकसित कर रही है, जो आभासी दुनिया (वर्चुअल वर्ल्ड) को संवर्धित वास्तविकता और आभासी वास्तविकता के साथ जोड़ती है।

अमेरिकी सेना भी हाल में माइक्रोसॉफ्ट के साथ एक augmented reality Hololens 2 हेडसेट पर काम कर रही है ताकि सैनिकों को train, rehearse और fight के लिए प्रशिक्षित किया जा सके। इसके अलावा, Xbox Live पहले से ही दुनिया भर में लाखों वीडियो गेम खिलाड़ियों को भी जोड़ता है।

**मेटावर्स से क्या लाभ हैं?**

जैसे-जैसे टेक्नोलॉजी का विकास हुआ, वैसे-वैसे लोग डिजिटल मोड जैसे वीडियो और वेब कॉन्फरेन्सिंग का प्रयोग आपस में मिलने और बातचीत करने के लिए करने लगे हैं। बस, मेटावर्स इसी डिजिटल अनुभव को बढ़ाकर एक अगले स्तर पर लेकर जाता है। मेटावर्स, न केवल इंटरनेट की दुनिया को बदलने में सक्षम है। बल्कि, इसका प्रभाव मेडिकल फील्ड पर भी पड़ रहा है। यह डॉक्टरों और नर्सों आदि के लिए एक वरदान है। जहाँ, कई बार भौगोलिक सीमाओं के कारण, रोगी या डॉक्टर्स, एक दूसरे से नहीं मिल सकते हैं, मेटावर्स की सहायता से अब यह समस्या भी हल हो गयी है।

♦♦♦

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"

- देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

# डीप लर्निंग क्या है?

- बबीता
प्रधान तकनीकी अधिकारी

डीप लर्निंग को मशीन लर्निंग का एक उपवर्ग (subset) माना जा सकता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो कंप्यूटर एल्गोरिदम का परीक्षण करके अपने आप सीखने और सुधार करने की अवधारणा पर आधारित है। डीप लर्निंग एक प्रकार की मशीन लर्निंग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (artificial intelligence) है, जो मनुष्य के सोचने, सीखने और समझने के तरीके से प्रेरित है। डीप लर्निंग डाटा विज्ञान का एक महत्वपूर्ण तत्व है, जिसमें सांख्यिकी और फ्यूचर प्रिडिक्शन मॉडलिंग शामिल है। यह डेटा उन वैज्ञानिकों के लिए अत्यंत उपयोगी होता है, जिन्हें बड़ी मात्रा में डाटा को संग्रहित करने, विश्लेषण और विवेचन करने का कार्य सौंपा गया है। डीप लर्निंग इस प्रक्रिया को त्वरित एवं सुगम बनाता है।

डीप लर्निंग के प्रकार निम्नलिखित हैं-:

- ऑटोएन्कोडर्स (Autoencoders)
- दृढ़ तंत्रिका नेटवर्क (Convolutional Neural Networks)
- बहुपरत परसेप्ट्रोन (Multilayer Perceptron)
- आवर्त्तक तंत्रिका नेटवर्क (Recurrent neural network)
- डीप बिलीफ नेटवर्क (Deep belief network)

**डीप लर्निंग क्यों महत्वपूर्ण है?**

असंरचित डाटा (unstructured data) के साथ कार्य (deal) करते समय बड़ी संख्या में विशेषताओं (features) को संसाधित करने की क्षमता डीप लर्निंग को बहुत उपयोगी (powerful) बनाती है। हालांकि, कम मात्रा में डाटा की समस्याओं का समाधान करने हेतु डीप लर्निंग एल्गोरिदम अक्षम हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें प्रभावी होने के लिए बड़ी मात्रा में डाटा की आवश्यकता होती है। यदि डाटा बहुत कम या अधूरा है, तो डीप लर्निंग मॉडल गलत आउटपुट देता है।

**डीप लर्निंग के क्या लाभ हैं ?**

आप सोच रहें होंगे क्यों बड़ी संख्या में प्रौद्योगिकी दिग्गज लगातार डीप लर्निंग को अपना रहे हैं। इसके कारण को समझने के लिए, हमें उन परिणामों को देखना होगा जो डीप लर्निंग दृष्टिकोण का उपयोग करके प्राप्त किए जा सकते हैं। इसकी तकनीक का उपयोग करने के कुछ प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं :-

- डीप लर्निंग एल्गोरिदम अतिरिक्त मानवीय हस्तक्षेप के बिना प्रशिक्षण डेटासेट में मौजूद सीमित संख्या में से नए features तैयार कर सकता है।
- इसमे उच्च गुणवत्ता वाले परिणाम देने की क्षमता होती है।
- यह अनावश्यक लागतों में कमी करेगा।
- यह असंरचित डाटा (unstructured data) के साथ अच्छी तरह से कार्य करता है।
- डीप लर्निंग एल्गोरिदम अपनी त्रुटियों से सीखने की क्षमता रखता है।
- यह समानांतर और वितरित एल्गोरिदम को सपोर्ट करता है।

**डीप लर्निंग कैसे कार्य करता है?**

अधिकांश डीप लर्निंग विधियों में न्यूरल नेटवर्क आर्किटेक्चर का उपयोग किया जाता है. यही कारण है कि डीप लर्निंग मॉडल को अक्सर डीप न्यूरल नेटवर्क कहा जाता है। डीप शब्द आमतौर पर तंत्रिका नेटवर्क में हिडन लेयर्स (छिपी परतों) की संख्या को संदर्भित करता है। पारंपरिक तंत्रिका नेटवर्क में केवल 2-3 छिपी हुई परतें होती हैं, जबकि डीप नेटवर्क में इनकी संखया 150 तक हो सकती हैं। डीप लर्निंग मॉडल्स बड़ी मात्रा में लेबल किए गए डाटा से ट्रेन (train) हो जाते हैं। इनको मैन्युअल फीचर एक्सट्रैक्शन की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ये अपने आप डाटा से फीचर्स सीखते हैं। इसमें हर हिडन लेयर एक छोटे प्रॉब्लम का समाधान (solve) करती है और अंत में हर लेयर के सोलूशन्स को मिला कर एक कम्पलीट सलूशन बनता है

डीप लर्निंग मॉडल कई एल्गोरिदम का उपयोग करते हैं। जबकि किसी एक नेटवर्क को पूर्ण नहीं माना जा सकता है, कुछ एल्गोरिदम विशिष्ट कार्यों को करने के लिए बेहतर उपयोगी होते हैं। सही एल्गोरिदम चुनने के लिए, सभी एल्गोरिदम की को समझना आवश्यक है।

**डीप लर्निंग के अनुप्रयोग (applications)**

वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रों में डीप लर्निंग निम्नलिखित एप्लीकेशनस प्रयोग किया जाता है-:

- चित्र/छवि की पहचान करने के लिए (Image Recognition)
- दृश्य कला संसाधन Visual Art Processing)
- प्रकृत भाषा संसाधन (Natural Language Processing)
- ग्राहक संबंध प्रबंधन (Customer Relationship Management)
- वितीय धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए (Financial Fraud Detection)
- स्वचालित वाक् पहचान करने के लिए (Automatic Speech Recognition)

♦♦♦

# 5G नेटवर्क

- अमिय मोहंती
परियोजना अभियंता

5जी नेटवर्क अब जल्द ही भारत में कदम रखने वाला है। दूरसंचार विभाग (DOT) ने खुलासा किया है वर्ष 2022 के अंत तक भारत के कुल 13 शहरों में 5जी टेलीकॉम सेवा मिलनी शुरु की जाएंगी। जिसमें शामिल है दिल्ली, गुरुग्राम, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद, अहमदाबाद, लखनऊ, बैंगलोर, चंडीगढ़, जामनगर, पुणे और गांधीनगर।

**5G तकनीक**

जैसा कि नाम से ही पता चलता है, 5G पांचवीं पीढ़ी की सेलुलर नेटवर्क तकनीक है। यह नेटवर्क कनेक्शन को बेहतर बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह तकनीक NSA 5G स्पेक्ट्रम के साथ ही संभव है, क्योंकि इसमें एक साथ दो रेडियो फ्रिक्वेंसी का इस्तेमाल किया जा सकता है। जिसकी मदद से डाटा की स्पीड बढ़ जाएगी और 4G नेटवर्क की तुलना में 100 गुना तेज गति से नेटवर्क को एक्सेस कर सकेंगे।

हालांकि विश्व स्तर पर, 5G नेटवर्क परिनियोजन तेजी से परीक्षण से प्रारंभिक व्यवसायीकरण की ओर बढ़ रहा है। जबकि भारत में, एयरटेल, वोडाफोन आइडिया, रिलायंस, जियो, आदि जैसे नेटवर्क ऑपरेटरों ने 2020 में सेवा के पूर्वानुमान वाणिज्यिक रोलआउट से पहले, इस साल के अंत तक नियोजित परीक्षणों के लिए एरिक्सन, हुआवेई और सैमसंग जैसे विक्रेताओं के साथ भागीदारी की है।

5G तकनीक से भारत के प्रौद्योगिकी क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत होने की आशा है। जहाँ तक प्रौद्योगिकी के राष्ट्रव्यापी परिनियोजन का संबंध है, भारत को अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है।

जिसमें की स्पेक्ट्रम की कीमतों को कम करना और ग्रामीण-शहरी इलाके में तकनीक के अंतर को कम करना, नेटवर्क की पहुँच को देश के हर घर तक बढ़ाना, कुछ ऐसे लक्ष्य हैं जिन पर सरकार का ध्यान केंद्रित है।

सरकार का अंतिम लक्ष्य तकनीक में ऐसा बदलाव करना है जो ग्रामीण और शहरी दोनों प्रकार के उपयोगकर्ताओं के साथ ही दूरसंचार क्षेत्र की आवश्यकताओं को भी पूरा करता हो।

## 5G नेटवर्क आर्किटेक्चर

5G कोर नेटवर्क आर्किटेक्चर में अपेक्षाकृत जबरदस्त बदलाव । LTE का मुख्य नेटवर्क मूल रूप से एक कठोर नेटवर्क है। यह कहा जा सकता है कि बेस स्टेशन से सेवारत प्रवेश द्वार, एमएमई और पीडीएन गेटवे ऐसे सभी निश्चित कनेक्शन हैं, और उनके कार्य भी फिक्स्ड कार्यात्मक मॉड्यूल, फिक्स्ड सिग्नल इंटरैक्शन हैं।

जब हम प्रोटोकॉल के विनिर्देश को पढ़ते हैं, तो हम यह जान सकते हैं कि प्रोटोकॉल विभिन्न नोड्स के बीच इंटरफेस में एक विशिष्ट संदेश के प्रसारण को परिभाषित करता है, और उस संदेश के प्रारूप को परिभाषित करता है।

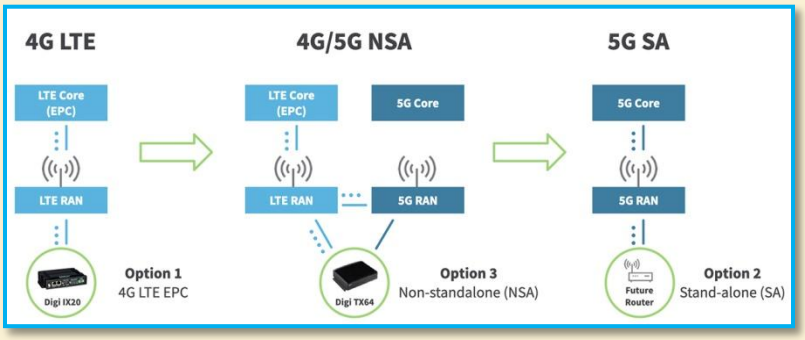


हालांकि, जब 5G को अपनाया जाता है, तो कोर नेटवर्क वास्तुकला में एक असाधारण बदलाव होगा। यह भी कहा जा सकता है कि सीटी से आईटी एकीकरण में बदलाव यह है कि एक संदेश बस प्रकार की वास्तुकला होगी। पिछले सभी फ़ंक्शंस प्रत्येक डिवाइस पर तय किए गए हैं, लेकिन अब अलग-अलग फ़ंक्शन मॉड्यूल हो सकते हैं, और प्रत्येक फ़ंक्शन को इस तथाकथित सॉफ्ट नेटवर्क में लागू किया गया है, जिस पर हम कस्टम-परिभाषित नेटवर्क फ़ंक्शंस और नेटवर्क कनेक्शन तैनात कर सकते हैं।

प्रत्येक फ़ंक्शन को एक बस के माध्यम से जोड़ा जा सकता है, और जब इस फ़ंक्शन की आवश्यकता होती है, तो इस बस के इंटरफ़ेस को बुलाया जाएगा। संपूर्ण नेटवर्क का डिवाइस नाम भी अपडेट किया गया है क्योंकि इसके फ़ंक्शन अपडेट किए गए हैं। कोर नेटवर्क के उपकरणों के तीन मुख्य भाग संक्षेप में पेश किए गए हैं: एएमएफ (एक्सेस एंड मोबिलिटी मैनेजमेंट फंक्शन), एसएमएफ (सेशन मैनेजमेंट फंक्शन), और यूपीएफ (यूजर प्लेन फंक्शन)।

## 5G डिवाइसेस

**5G डिवाइसेस** में बहुत बड़े-बड़े बदलाव हुए हैं। पहले अलग-अलग रूप कारक दिखाई देते हैं। विभिन्न उपयोग परिदृश्यों के उद्भव के कारण, टर्मिनल का रूप भी बहुत बदल गया है। यह न केवल एक स्मार्टफोन है, बल्कि भविष्य में वीआर / एआर ग्लास, और कार के उपकरण, घर पर टेलीविज़न सेट और रेफ्रिजरेटर, ड्रोन सहित उपयोग में हैं।

## 5G के लाभ

मोबाइल टावर दूर होने के बावजूद भी 5G नेटवर्क होने से इंटरनेट चलाने में कोई परेशानी नहीं होगी। मोबाइल की बैटरी भी कम खपत होगी। इसके अलावा इस नेटवर्क से आप कई डिवाइस को एक साथ भी जोड़ पाने में सक्षम हो पाएंगे।

5G में नई पीढ़ी के मोबाइल नेटवर्क को भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए व्यापक लाभ प्रदान करने की परिवर्तनकारी क्षमता है, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ संयुक्त होने पर एक कनेक्टेड और स्वायत्त प्रणाली को एक नया चेहरा प्रदान करती है।

यह नेटवर्क मोबाइल बैंकिंग और स्वास्थ्य जैसी सेवाओं की पहुंच में सुधार कर सकता है, और बेरोजगार या अल्प-रोजगार वाले लोगों के लिए पूर्ण और उत्पादक कार्यों में संलग्न होने के अवसरों में तेजी से वृद्धि को सक्षम कर सकता है।

5G भारतीय नीति निर्माता नागरिकों और व्यवसायों को शिक्षित और सशक्त बना सकता है, और मौजूदा शहरों को स्मार्ट शहरों में बदल सकता है।

♦♦♦

# साइबर अपराध : कोविड-19 के बाद घर से काम करने के जोखिम

- शिवम मिश्रा
परियोजना अभियंता

कोविड-19 से आपराधिक गतिविधियों में बदलाव आया है। जबकि महामारी ने शारीरिक अपराध के खतरे को कम किया है। उदाहरण होम ब्रेक-इन (Home Break-in) और पिक-पॉकेटिंग (Pick-pocketing), लक्षित साइबर अपराध बढ़ रहा है क्योंकि अपराधी कोविड-19 के बारे में व्यापक चिंता का फायदा उठा रहे हैं। साइबर अपराधी अपनी रणनीति अपना रहे हैं और अब लोगों को उनके घरों में निशाना बना रहे हैं, जो कई मामलों में अब उनका कार्यालय भी है। जैसे-जैसे घर से काम करना डेटा चोरी के नए रूपों का प्रवेश द्वार बन रहा है, कंपनियों को साइबर जोखिम का सामना करना पड़ता है। हालांकि, कॉर्पोरेट डेटा (Corporate Data), ग्राहक जानकारी और बौद्धिक संपदा तक पहुंचने का प्रयास करने वाले साइबर अपराधी व्यवसायों के लिए एकमात्र खतरा नहीं हैं - कर्मचारी भी कॉर्पोरेट आईटी सुरक्षा प्रणालियों में एक कमजोर कड़ी हो सकते हैं।

जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था तेजी से डिजिटल (Digital) होती जा रही है, बढ़ता साइबर खतरा अधिकांश कंपनियों की इसे प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की क्षमता को पछाड़ रहा है। सभी प्रकार का डेटा - कर्मचारियों की व्यक्तिगत जानकारी, कॉर्पोरेट डेटा (Corporate Data), ग्राहक जानकारी, बौद्धिक संपदा और प्रमुख बुनियादी ढांचा - जोखिम में है। वर्तमान में, कोविड-19 संकट के दीर्घकालिक प्रभाव का आकलन करना अभी भी मुश्किल है, लेकिन इसने निश्चित रूप से कॉर्पोरेट वातावरण में डिजिटलीकरण को एक महत्वपूर्ण बढ़ावा दिया है। हालांकि, साथ ही, साइबर खतरा तेज हो रहा है, और यह तथ्य कि बड़ी संख्या में कर्मचारी अब घर से काम कर रहे हैं, नए जोखिम प्रस्तुत करता है।

यदि कर्मचारियों को घर से उसी गति से और कार्यालय में समान दक्षता के साथ काम करने में सक्षम होना है, तो अधिकांश को नवीनतम तकनीक की आवश्यकता होगी। इसमें हाई-स्पेक हार्डवेयर (High Specs Hardware) (लैपटॉप, स्मार्टफोन और प्रिंटर), अप टू डेट सॉफ्टवेयर (Up to date software) (वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग टूल (Video-conferencing tool) और डेटा मैनेजमेंट सिस्टम (Data Management System), और एक विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्शन (फास्ट ब्रॉडबैंड (Fast Broadband) और वीपीएन (VPN) के माध्यम से कॉर्पोरेट नेटवर्क (Corporate Network) तक सुरक्षित पहुंचना शामिल हैं।

चूंकि साइबर और डेटा सुरक्षा समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, भले ही कर्मचारी घर से काम कर रहे हों या कार्यालय में, नियोक्ता अब साइबर और डेटा सुरक्षा उपायों की एक पूरी श्रृंखला लगा रहे हैं। इससे यह सवाल उठता है कि कर्मचारी इन उपायों को कैसे समझते हैं।

उनके नियोक्ता के उपायों से उनकी आईटी सुरक्षा (IT Security) में किस हद तक सुधार हो रहा है, इसका सटीक आकलन करना मुश्किल है। फिर भी, यह आश्चर्यजनक है कि सर्वेक्षण के 14% उत्तरदाता घर से काम करते समय साइबर और डेटा सुरक्षा के बारे में चिंतित हैं। इसके अलावा, 25% ने कोविड-19 संकट की शुरुआत के बाद से धोखाधड़ी वाले ईमेल (Email), फ़िशिंग (Phishing) प्रयासों और उनके कॉर्पोरेट ई-मेल पर स्पैम (Spam) में वृद्धि की रिपोर्ट की, इस मुद्दे के साथ मीडिया कवरेज भी आकर्षित हुआ। यह स्पष्ट नहीं है कि कितने साइबर हमले कर्मचारियों द्वारा पहचाने नहीं गए हैं, लेकिन एक सफल हमले से अप्रत्याशित नुकसान हो सकता है।

सर्वेक्षण के निष्कर्ष व्यवसायों के वास्तविक सबूतों की पुष्टि करते हैं कि इस महामारी ने साइबर अपराधियों से रणनीति में बदलाव की शुरुआत की है, जिन्होंने कर्मचारियों को उनके नए कार्यस्थल - उनके घर में पीछा किया है। तेजी से, साइबर अपराधी दूरस्थ आई.टी. सुरक्षा व्यवस्था में कमजोरियों का फायदा उठाने का प्रयास कर रहे हैं। कंपनियों को तत्काल घरेलू कर्मचारियों के लिए आई.टी. सुरक्षा उपायों को अनुकूलित करने और उन्हें भौतिक कार्यालय पर लागू उपायों के साथ संरेखित करने की आवश्यकता है।

बाहरी दुश्मन - साइबर अपराधी - केवल उन खतरों में से एक है जिनके बारे में सुरक्षा के प्रति जागरूक कंपनियों को चिंतित होना चाहिए। कंपनियों को अपने स्वयं के आंतरिक कर्मचारियों से भी खतरों का सामना करना पड़ता है।

लॉकडाउन की अवधि और इसके आर्थिक प्रभाव का मतलब है कि कई कर्मचारी अपनी नौकरी की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। वास्तव में, सर्वेक्षण के 26% उत्तरदाताओं ने एहतियात के तौर पर महत्वपूर्ण कंपनी डेटा की प्रतियां बनाने के लिए लुभाने की रिपोर्ट की। सबसे खराब स्थिति के खिलाफ आंतरिक कंपनी डेटा को संग्रहीत करना बहुत स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि कंपनियों के लिए कॉर्पोरेट डेटा, बौद्धिक संपदा के नुकसान को रोकने के लिए और अधिक व्यापक रूप से, कॉर्पोरेट धोखाधड़ी के जोखिम से निपटने के लिए कार्य करना कितना महत्वपूर्ण है।
अपने आप को कैसे सुरक्षित करें?

- कर्मचारियों को इन मुद्दों से अवगत कराएं, उन्हें संवेदनशील डेटा के प्रबंधन में प्रशिक्षित करें और उन्हें कंपनी की आचार संहिता नियमावली और संबंधित नियमों का स्मरण कराएं। घर से काम करने से नए साइबर जोखिम पैदा होते हैं और कर्मचारियों को उनकी जिम्मेदारियों में पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है।
- नियमित रूप से जांच करें कि तैनात किए गए नए और सामरिक आईटी समाधानों (क्लाउड-आधारित समाधानों सहित) की सुरक्षा के लिए किए गए सुरक्षा उपाय प्रभावी हैं। संकट की शुरुआत में भारी समय के दबाव में कई समाधान तैयार किए गए थे और आई.टी. कर्मचारियों को अब सुरक्षा नियंत्रणों की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।
- संवेदनशील डेटा के प्रबंधन में उपयोगकर्ताओं द्वारा की गई गलतियों को सक्रिय रूप से पहचानने और उन्हें ठीक करने के लिए कंपनियों को सक्षम करने हेतु उपकरणों और उपयोगकर्ताओं दोनों की सुरक्षा निगरानी बढ़ाएं।
- व्यापक रैंसमवेयर (Ransomware) हमले जैसे विनाशकारी साइबर हमलों से प्रभावी ढंग से उबरने की क्षमता का आकलन करें। इसमें इस तरह के आयोजन के बाद जितनी जल्दी हो सके पूरे आईटी (IT) बुनियादी ढांचे को वापस लाने और चलाने की क्षमता शामिल है।
- अपने सबसे महत्वपूर्ण सेवा प्रदाताओं (service providers), आपूर्तिकर्ताओं (suppliers) और बिक्री भागीदारों (sales partners) की सुरक्षा प्रभावशीलता की पुष्टि करें। आपूर्ति श्रृंखला में कमजोरियां प्रमुख साइबर और डेटा उल्लंघनों का कारण बन सकती हैं।

♦♦♦

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।

- आचार्य विनोबा भावे

# सर्वर क्या है ?

- राहुल जीनवाल
पी.एस.एस.

सर्वर क्या है? इस इंटरनेट की दुनिया में अक्सर यह सवाल लोगों के मन में होता है। अगर आप कंप्यूटर और टेक्नोलॉजी क्षेत्र से जुड़े हुए हों या इस क्षेत्र में काम करते हों तो आपको सर्वर के बारे में पूरी जानकारी होना बहुत आवश्यक है।

आपने बहुत बार लोगों से सर्वर के बारे में कई सारे नए-नए शब्द सुने होंगे जैसे–सर्वर, वेब सर्वर, प्रॉक्सी सर्वर, सर्वर डाउन, डेटा सर्वर, क्लाइंट सर्वर इत्यादि। अगर आप भी सर्वर के बारे में ऐसे ही सवालों के जवाब ढूंढ रहे हैं तो आप बिलकुल सही जगह पर हैं, इस आर्टिकल में हम जानेंगे सर्वर क्या होता है और सर्वर से जुडी सभी छोटीमोटी सभी जानकारियां-। सर्वर एक तकनीकी शब्द लगता है और कई लोगों को यह सुनने में ही बहुत टेक्निकल और कठिन लगता है लेकिन सर्वर को समझना बहुत आसान और मजेदार है।

कंप्यूटर की दुनिया में सर्वर एक कंप्यूटर हार्डवेयर या सॉफ्टवेयर है जो अन्य उपकरणों और प्रोग्राम्स को डाटा प्रदान करने का काम करता है। आसान भाषा में सर्वर एक ऐसा डिवाइस होता है जिसमे डाटा स्टोर होता है और उस डाटा को यूजर इंटरनेट, डाटा केबल्स, राऊटर जैसी नेटवर्क डिवाइस की मदत से एक्सेस कर सकते हैं। सर्वर का अगर हम हिंदी अर्थ देखे तो इसका मतलब होता है – परोसने वाला सर्वर आमतौर पर उपयोगकर्ताओं को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार डाटा परोसने का काम करता है, यूजर ने रिक्वेस्ट किए हुए डाटा को यूजर तक पहुचाना यह सर्वर का मुख्य कार्य होता है। सर्वर्स डाटा प्रोवाइड करने के साथ ही और भी फंक्शनैलिटीज यूजर को प्रदान कर सकता है जैसे एक साथ कई उपयोगकर्ताओं को डाटा शेयर करना, यूजर के लिए कोई काम करना आदि।

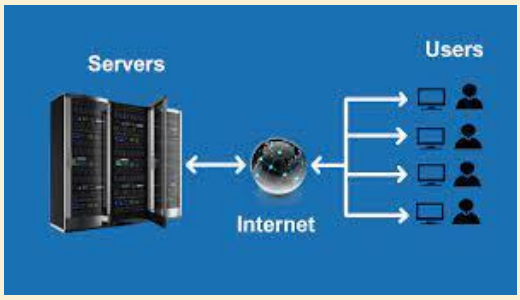


एक सर्वर विभिन्न उपयोगकर्ताओं को एक साथ डाटा शेयर कर सकता है और एक यूजर एक साथ विभिन्न सर्वर्स को इस्तेमाल कर सकता है और उनसे डाटा एक्सेस कर सकता है!

♦♦♦

# राष्ट्रीय डिजिटल विश्वविद्यालय - एक अनोखी पहल

- गौरव कश्यप, इन्फर्मेटिक्स असिस्टेंट
- अनुभव जैन, इन्फर्मेटिक्स असिस्टेंट

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 22 फरवरी, 2022 को की गई घोषणा स्वागत योग्य है जिसमें उन्होंने राष्ट्रीय डिजिटल विश्वविद्यालय की स्थापना से देश को अवगत कराया था। केन्द्रीय बजट 2022-23 में डिजिटल विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव किया गया।

राष्ट्रीय डिजिटल विश्वविद्यालय भारत की शिक्षा व्यवस्था में अनोखा अभूतपूर्व कदम है । हमारे देश में पहली डिजिटल यूनिवर्सिटी की शुरूआत केरल में हो चुकी है। वर्तमान में यहां पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम से लेकर अलग-अलग तरह के कई कोर्सेस संचालित किए जा रहे हैं।

डिजिटल विश्वविद्यालय एक ऐसा विश्वविद्यालय होगा जो छात्रों को कई तरह के कोर्स और डिग्रियों की शिक्षा पूरी तरह ऑनलाइन उपलब्ध कराएगा। यह डिजिटल यूनिवर्सिटी हमारे देश के कॉलेज में जो सीटों की समस्या हैं, उसे खत्म कर सकती है। हर विषय में असीमित सीटें होंगी, निःसंदेह इससे शिक्षा जगत में क्रांतिकारी बदलाव आएगा।

डिजिटल यूनिवर्सिटी लर्निंग और री-लर्निंग की वर्तमान और भविष्य की जरूरतों के लिए युवाओं को तैयार करेगी। जैसा कि सर्वविदित हैं की कोविड महामारी के दौरान डिजिटल या वर्चुअल शिक्षा दुनिया भर में सीखने-सिखाने के सबसे शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभर रही है। निश्चित तौर पर इससे ई-लर्निंग में मदद मिलेगी। डिजिटल विश्वविद्यालय की स्थापना के पश्चात छात्र घर बैठे ही ऑनलाइन पढाई कर पाएंगे क्योंकि इसका उद्देश्य सतत आधार पर ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करना है।

डिजीटल विश्वविद्यालय का स्वरूप और कार्य प्रणाली लगभग ऑनलाइन Edtech प्लेटफार्म - बायजूज, अनकेडीमी टॉपर सिम्पली लर्न जैसा होगा। आने वाले समय में ई-विद्या, एक कक्षा - एक चैनल, डिजिटल लैब और डिजिटल विश्वविद्यालय से छात्रों को काफी मदद मिलेगी। सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि गुणवत्ता युक्त शिक्षा को कहीं भी और कभी भी पहुंचाया जा सकेगा। इससे रोजगार के मौके भी बढेंगे। डिजिटल विश्वविद्यालय से छात्र तमाम जानकारी व ज्ञान को

घर बैठे हासिल कर सकेंगे, इसमें फिजिकल क्लासेज की जगह वर्चुअल या ऑनलाइन क्लासेज होंगी।

इसके अलावा डिजिटल विश्वविद्यालय शिक्षा और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए लाभप्रद साबित होगा। इससे देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय और कॉलेज को ऑनलाइन पढ़ाई करवाने की अनुमति से उन छात्रों को अध्ययन का मौका मिलेगा, जिन्हें कॉलेजों की उच्च कट-ऑफ के कारण एडमिशन नहीं मिल पाता है। स्मरणीय है कि दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों में नामांकन पैमाना 99 प्रतिशत से भी ऊपर चला जाता है। देश के अन्य प्रतिष्ठित महाविद्यालयों की भी लगभग यही स्थिति है, ऐसे में आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े समाज के बच्चों के लिए 90 प्रतिशत का स्तर पाना ही मुश्किल होता है।

इस विश्वविद्यालय की सबसे बड़ी महत्वपूर्ण उपलब्धि इस रूप में होगी कि भविष्य में कोरोना जैसी महामारी या किसी भी संकट के चलते पढ़ाई को जारी रखा जा सकेगा और पढ़ाई में व्यवधान नहीं आएगा। हम आशा करते हैं भारत सरकार की यह पहल शिक्षा जगत में बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

♦♦♦

इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।"

- राहुल सांकृत्यायन

जापानियों ने जिस ढंग से विदेशी भाषाएँ सीखकर अपनी मातृभाषा को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है उसी प्रकार हमें भी मातृभाषा का भक्त होना चाहिए।"

- श्यामसुंदर दास

# राष्ट्रीय अनुवाद मिशन (एन.टी.एम.) एवं इसके उद्देश्य

- ओम प्रकाश शर्मा
हिंदी परामर्शकार

राष्ट्रीय अनुवाद मिशन मुख्य रूप से अनुवाद को एक उद्योग के रूप में स्थापित करने और विशेष रूप से भारतीय भाषाओं में छात्रों और शिक्षाविदों के लिए ज्ञान ग्रंथों को सुलभ बनाकर उच्च शिक्षा को बदावा देने के लिए भारत सरकार की एक महत्वकांक्षी योजना है। इसका विज़न भाषा की बाधाओं से निजात पाकर एक ज्ञान शिक्षित/समाज का निर्माण करना है। राष्ट्रीय अनुवाद मिशन का उद्देश्य अनुवाद के माध्यम से संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध सभी भारतीय भाषाओं में ज्ञान का प्रसार करना है।

इस मिशन के अंतर्गत अनुवादकों को उन्मुख करने, प्रकाशकों को अनुवाद प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित करने, भारतीय भाषाओं में और उनके बीच प्रकाशित अनुवादों के डेटाबेस को बनाए रखने और अनुवाद पर जानकारी का समाशोधन गृह बनने के लिए प्रयासों का एक संयोजन किया जाता है। इन प्रयासों के माध्यम से, राष्ट्रीय अनुवाद मिशन भारत में अनुवाद को उद्योग एक के रूप में स्थापित करना चाहता है। अनुवाद के माध्यम से नई शब्दावली और प्रवचन शैलियों को विकसित करके भाषाओं का आधुनिकीकरण किया जाने की संभावना है। ऐसी आशा है कि अनुवादक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में, विशेष रूप से भारतीय भाषाओं में अकादमिक डिस्कोर्स में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेंगे।

नॉलेज टेक्स्ट का ट्रांसलेशन, अनुवाद को एक उद्योग के रूप में स्थापित करने के लक्ष्य की दिशा में पहला कदम है। ज्ञान के प्रसार के लिए अभिप्रेत सभी पाठ्य सामग्री राष्ट्रीय अनुवाद मिशन के लिए ज्ञान ग्रंथों का संग्रह है। वर्तमान में, राष्ट्रीय अनुवाद मिशन 22 भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा से संबंधित सभी शैक्षणिक सामग्री के अनुवाद कार्य में कार्यरत है। एनटीएम का उद्देश्य भारतीय भाषाओं में अधिकतर अंग्रेजी में उपलब्ध उच्च शिक्षा ग्रंथों का अनुवाद करके ज्ञान के विशाल भंडार को खोलना है। यह आशा की जाती है कि यह प्रक्रिया अंततः एक समावेशी ज्ञान समाज के गठन का मार्ग प्रशस्त करेगी।

**राष्ट्रीय अनुवाद मिशन के लक्ष्य और उद्देश्य निम्नलिखित हैं**-:

- कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले सभी प्रमुख विषयों में नॉलेज टेक्स्ट ट्रांसलेशन का प्रचार और प्रकाशन करना।
- विभिन्न क्षेत्रों में अनुवादकों का प्रमाणन करना और प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध कराना।
- छह डेटाबेस का निर्माण और रखरखाव करना जिनमें भारतीय विश्वविद्यालय डेटाबेस, अनुवादकों का राष्ट्रीय रजिस्टर (NRT), प्रकाशक डेटाबेस, अनुवाद की ग्रंथ सूची, संकाय डेटाबेस/विशेषज्ञ रिपोजिटरी, शब्दकोश और शब्दावली डेटाबेस शामिल हैं।
- अनुवादक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत अल्पकालीन अभिविन्यास पाठ्यक्रम संचालित करना।
- अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं के बीच मशीनी सहायता प्राप्त अनुवाद को बढ़ावा देना।
- शब्दकोश और थिसॉरी जैसे अनुवाद उपकरणों (टूल्स) का विकास करना।
- भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों को तैयार करने के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग (सी.एस.टी.टी.) के साथ समन्वय करना।
- अनुवाद मेमोरी, वर्ड-फाइंडर, वर्ड नेट आदि के लिए सॉफ्टवेयर पर अनुसंधान और विकास के लिए सहायता प्रदान करना।
- प्रकृत भाषा संसाधन और अनुवाद संबंधी अनुसंधान परियोजनाओं के लिए फेलोशिप और अनुदान प्रदान करना।
- भाषाओं के जोड़े (पेयर्स) के बीच अनुवाद नियमावली तैयार करने जैसी विशिष्ट परियोजनाओं के लिए अनुवाद पर डिग्री/डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करने वाले विश्वविद्यालयों/विभागों को अनुदान प्रदान करना।
- अनुवाद संबंधी पत्रिकाओं को वितीय सहायता प्रदान करना और भारतीय भाषाओं में अनुवाद से संबंधित ग्रंथों और विश्लेषण आदि का प्रकाशन करना।
- अनुवादकों के लिए पुस्तकों का विमोचन, क्षेत्रीय अनुवाद उत्सव, चर्चाएं, पुस्तक प्रदर्शनियों आदि का आयोजन करके अनुवादकों और अनुवाद गतिविधियों का प्रचार-प्रसार करना।
- अनुवाद अध्ययन पर गंभीर शैक्षणिक कार्यों का एक भंडार बनाना और इस प्रकार उस पर प्रवचनों (डिस्कोर्स) की सुविधा प्रदान करना।

**निष्कर्ष** :

राष्ट्रीय अनुवाद मिशन का उद्देश्य एक समावेशी ज्ञान समाज का निर्माण करना है। मिशन एक भाषा से दूसरी भाषा में मौलिक ग्रंथों के अनुवाद की सुविधा प्रदान करके ज्ञान के समान वितरण को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत है। यह उन छात्रों को सक्षम करने में सहायता करेगा जिन्हें भाषा की बाधा के कारण ज्ञान तक पहुंचना मुश्किल लगता है। राष्ट्रीय अनुवाद मिशन का उद्देश्य जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी संख्या में लोगों को लाभान्वित करना भी है, जिनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं:-

- विभिन्न स्तरों पर विभिन्न विषयों के शिक्षक।
- लेखक/अनुवादक/प्रकाशक।
- विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों के अनुवाद अध्ययन, भाषाविज्ञान एवं शोधकर्ता विभाग।
- भारतीय भाषाओं में प्रकाशक जो नए और दिलचस्प उपक्रमों की स्थापना करना चाहते हैं।
- अनुवाद सॉफ्टवेयर का विकास करने में कार्यरत डेवलपर्स।
- पाठक जो अपनी भाषा में साहित्यिक और ज्ञानवर्धक ग्रंथों की तलाश कर रहे हैं।
- सरकारी और निजी एजेंसियां और व्यक्ति, जिन्हें दुभाषिए की सेवाओं की आवश्यकता है।
- एफएम और अन्य रेडियो हाउस जो विभिन्न भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित करने में कार्यरत हैं।

♦♦♦

अगर देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो, मेरा यह मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य यह कार्य कर सकते हैं- पिता, माता और गुरु।

- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

# निकली हिन्दी सैर पर...

- श्वेता नारंग
अनुवादक

21वीं सदी का तीसरा दशक अपने शुरुआती वर्षों में "कोरोना" नामक महामारी का इतिहास रच रहा था। हर कोई परेशान था। इस दौरान अगर कोई एक ऐसी थी जो इन परेशानी के दिनों में नाना प्रकार के ताने सुनने और एक बड़ी आबादी द्वारा बहिष्कृत होने के बाद भी अपनी गरिमा को बरकरार रखने की कोशिश में लगी हुई थी। यह और कोई नही अपितु हमारी राजभाषा "हिन्दी" थी।

अन्य भाषाओं, विशेषकर "अंग्रेजी" द्वारा उपहास उडाए जाने पर कुछ क्षणों के लिए हिन्दी ने बदला लेने की सोची, किन्तु यह असंभव था, क्योंकि यह भारतीय संस्कारों के विरुद्ध था। गुस्सा शांत होते ही उसने सोचा कि "क्यों न स्वयं पहले इस बात की जांच की जाए कि क्या वास्तव में मेरा अस्तित्व खतरे में है"?

बात अब इज्जत पर आन पड़ी थी, इसलिए बिना समय गवाएं हिन्दी ने अपने **'नए शब्दों की खूबसूरत साड़ी'** निकाली, साथ ही साड़ी से मिलती-जुलती **'वर्णों की दुशाला'** और **'मात्राओं का एक अनन्य हार'** निकाला; बस कुछ ही क्षणों में तैयार होकार निकल पड़ी हिन्दी सैर पर ....

काफी समय से पाठ्य-पुस्तकों, नेताओं के भाषणों और कुछ सरकारी दफ्तरों मे कैद हिन्दी, आज आखिरकार खुली हवा में साँस ले रही थी। अपने ब्यौरे की शुरुआत करने के लिए उसने सर्वप्रथम एक निजी विद्यालय को चुना। वहाँ पहुँचते ही उसने पाया कि वहाँ हिन्दी बोलने पर प्रतिदिन पूरे पाँच रुपये का जुर्माना था। चार साल का एक छोटा सा छात्र अपने शिक्षक को 'नमस्कार' की जगह 'Good Morning' कह रहा था। हिन्दी बोलना केवल आधे घण्टे के लिए मान्य था, वह भी केवल हिन्दी की कक्षा में। यह सब देख कर हिन्दी परेशान हो उठी, वह हार मानने ही वाली थी कि तभी आधी-छुट्टी हो गई। फिर उसने पाया कि जिस प्रधानाचार्य जनाब ने जुर्माने का नियम निकाला था, वह स्वयं इस आधी-छुट्टी के दौरान उप-प्रधानाचार्य जी के साथ हिन्दी में हँसी-मजाक कर अपने भोजन का लुफ्त उठा रहे थे; छात्र-छात्राएं और अध्यापक-गण भी मानो नियम

भूल चुके थे। राहत की साँस लेकर हिन्दी वहाँ से निकल कर एक बहुमंजिली इमारत में पहुँची, जहाँ बहुत से सरकारी दफ्तर थे। एक दफ्तर में उसने एक व्यक्ति का साक्षात्कार होते देखा। वहाँ उसने पाया कि अंग्रेजी में कुछ वाक्य बडबडाने के बाद सभी हिन्दी में प्रश्न- उत्तर करने लगे। हाँलाकि हिन्दी ने यह जान लिया था कि अंग्रेजी अपना दबदबा बनाने के लिए पूरा ज़ोर लगा रही है, किन्तु फिर भी उसे इस बात का सुकून था कि उसने अपना अस्तित्व नहीं खोया है।

दिन ढल चुका था, थकी-हारी हिंदी को अब **'वाक्यों की भूख'** लग आई थी। उसने देखा कि कुछ दूरी पर एक समारोह चल रहा था। उसने सोचा यहाँ भूख मिटाने के लिए काफी वाक्य मिलेंगे, वह भी मिर्च-मसाला लगा कर। बिना देर किए वह एक समारोह में जा पहुँची। वह किसी के विवाह का संगीत समारोह था। प्रवेश द्वार पर लोगों को अंग्रेजी में किट-पिट करते देख हिन्दी ने सोचा कि आज भूखे ही रहना पड़ेगा। फिर भी, मन की तसल्ली के लिए वह अन्दर आ ही गई। जैसा कि उसने पहले सोचा था, उस समारोह में अनेक प्रकार के वाक्य, मुहावरें, लोकोक्तियाँ, कहावते थी (वह भी खूब मिर्ची-मसाला लगा कर); पदों और पदबंध का तो भंडार -सा था। उसने भर पेट खाना खाया। अचानक ही किसी अधेड़ उमर के व्यक्ति की आवाज आई-'हाय राम!', अब हुआ यूँ था कि जनाब गिर गए थे। ऐसी स्थिति में हिन्दी को कायदे से गंभीर मुखाकृति देनी थी परन्तु वह तो खिलखिला के हँस पड़ी। उसे इस बात की प्रसन्नता हुई कि संगीत समारोह में जस्टिन और ड्रेंक के गाने नहीं बल्कि हिन्दी गाने गाए-बजाए जा रहे थे। दूसरी ओर, गिरने पर चोट लगाने के कारण उस व्यक्ति के मुँह से 'O My God!' की बजाय 'हाय राम' ही निकला।

अब हिन्दी को समझ आ चुका था कि मेरे और आप जैसे भारतीय ही हैं जिन्होंने फिर एक बार अंग्रेजों को अपना दबदबा बनाने का मौका दिया है। फिर भी उसे हम हिन्दुस्तानियों पर भरोसा था कि हम कितना ही पश्चिमीकरण या अन्य भाषाओं से प्रभावित क्यों न हो जाएं, भूख लगने पर "Mom! Give me some bread & veggies" की जगह "माँ! रोटी सब्जी दे दो" ही बोलेंगे। उसे इस बात पर भी पूर्ण विश्वास था कि हम हिन्दी-भाषी होने पर अपमानित नही बल्कि गर्व महसूस करेंगे। इसी उम्मीद के साथ हिन्दी को अब अपने अस्तित्व को खोने का डर नही रहा और वह हँसी-खुशी लोगों की जुबान में घुल गई।

**आशा करते हैं कि हम हिन्दी की इस आशा को निराशा में नहीं बदेलेंगे।**

♦♦♦

# इंडिया@75 : हमने क्या खोया और क्या पाया

- रवि कुमार सिंह
पी.एस.एस.

देश आजादी की 75वीं वर्षगांठ मना रहा है। अपनी आजादी की 75वीं वर्षगांठ का जश्न भारत पूरे जोर शोर से मना रहा है। यह अवसर सभी देशवासियों के लिए विशेष है। 15 अगस्त 1947 को सैकड़ों वर्षों की गुलामी से आजाद हुआ। तब से लेकर आज तक सभी क्षेत्रों में चाहे वो सामाजिक हो, राजनीतिक हो, आर्थिक हो, सांस्कृतिक हो या खेल एवं तकनीकी हो, सभी क्षेत्रों की विकास यात्रा में भारत ने अपनी एक पहचान बनाई है। आज भारत की पहचान एक सशक्त राष्ट्र के रूप में है। 75 वर्षों की इस विकास यात्रा में नए कीर्तिमान बने हैं।

बीते 75 वर्षों में भारत ने अपनी अंदरूनी चुनौतियों और समस्याओं के बीच ऐसा बहुत कुछ हासिल किया है जिसकी तरफ पूरी दुनिया आकर्षित हो रही हैं। पर अगर देश के पास गर्व करने के लिए उपलब्धियां है तो अफसोस जताने की वजह भी है। हमें आजादी तो मिल गई है पर क्या यह वही आजादी है जिसका सपना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों, हमारे पूर्वजों, राजनेताओं ने देखा था। एक अच्छा नागरिक ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण करता है। और एक जागृत समाज ही देश को उन्नति के रास्ते पर ले जाने का मार्ग दिखाता है। सवाल है क्या संविधान में एक आदर्श देश की जो परिकल्पना की गई है उसे हम कितना साकार कर पाए हैं। एक देश और एक इंसान के रूप में हम कहां खड़े हैं। आजादी के इन सालों में हमने क्या खोया और क्या पाया है, इसका एक सिंहावलोकन करना जरूरी है। 15 अगस्त 1947 को हम आजाद तो हो गए पर हमें यह आजादी विभाजन के साथ मिली।

हमारे देश भारत की जमीन से ही एक नए देश पाकिस्तान का जन्म हुआ। इस नए देश की वजह से हमारे देश को अपना एक बड़ा भूभाग और बहुत से लोगों को खोना पड़ा। और इसके बाद कश्मीर और अक्साई चीन में भी हमें अपनी जमीन गवानी पड़ी। हालांकि सिक्किम को अपने साथ जोड़ने में हमारी सरकार कामयाब हो गई। तब से लेकर अब तक भारत अपनी सीमा की हिफाजत अच्छे से करते आया है।

भारत जीवंत लोकतंत्र का एक जीता जागता उदाहरण है। यहां कि लोकतांत्रिक संस्थाओं में लोगों की बहुत आस्था है। भारत ने एक परिपक्व देश के रूप में अपनी पहचान बनाई है। हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री से लेकर अब तक सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच मुद्दों पर गंभीर मतभेद रहे, लेकिन इन मदभेदों ने लोकतंत्र को कमजोर नहीं पड़ने दिया बल्कि उसे मजबूती दी है। भारत के लोग अपनी सरकार खुद चुनते हैं। भारत के लोकतंत्र में लोग ही अहम है। यह भारत की बहुत बड़ी जीत है।

आम आदमी को सशक्त बनाने के लिए सरकार ने बहुत सी जन कल्याणकारी नीतियां और योजनाएं बनाई। ग्राम सड़क योजना, सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, मनरेगा जैसे कार्यक्रम एवं योजनाएं अहम है। इन महत्वाकांक्षी योजनाओं से विकास की गति तेज तो हुई पर यह भी सच है कि सरकार ने इन योजनाओं को पूरी तरह से लागू नहीं किया। विकास से जुड़ी समस्याएं अभी भी मौजूद हैं।

उदारीकरण के दौर के बाद भारत बहुत तेजी से विकास के रास्ते पर आगे बढ़ा है। आर्थिक, सैन्य एवं अंतरिक्ष क्षेत्र में इसने सफलता की बड़ी छलांग लगाई है। बहुत सी चुनौतियों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ी है। आज भारत दुनिया का सबसे बड़ा बाजार बना हुआ है। परमाणु हथियारों से संपन्न भारत के पास दुनिया की चौथी सबसे शक्तिशाली सेना है। मिसाइल तकनीकी में दुनिया भारत का लोहा मान रही है। मंगल मिशन की सफलता एवं रॉकेट प्रक्षेपण की अपनी क्षमता के बदौलत भारत ने अंतरिक्ष क्षेत्र में महारथ हासिल करने वाले चुनिंदा देशों में अपने आप को शामिल किया है। आई.टी. सेक्टर में भी हमारा देश अग्रणी बना हुआ है। इन उपलब्धियों ने भारत को सुपरपावर बनने के दरवाजे पर लाकर खड़ा कर दिया है।

जाहिर है कि आज भारत के पास दुनिया को देने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन इन सफलताओं एवं उपलब्धियों के वाबजूद सामिजक एवं नौतिक मूल्यों में बहुत कमी आई है। सत्ता, पावर, पैसा की चाह ने लोगों को भ्रष्ट एवं नौतिक रूप से कमजोर बनाया है। एक दौर वो भी था जब रेल हादसे की जिम्मेदारी लेते हुए केन्द्रीय मंत्री इस्तीफा दे दिया करते थे। एक वोट से सरकार गिर जाया करती थी। पर आज अपनी सत्ता बचाने के लिए नेता सभी तरह के समझौते करने को तैयार रहते हैं। नए- नए हथकंडे अपनाते हैं।

बेहतर समाज एवं राष्ट्र बनाने की जिम्मेदारी सिर्फ नेताओं की ही नहीं है,बल्कि हम सभी की है। इसके लिए हम सभी को आगे आना होगा। तभी जाकर एक अच्छा और बेहतर भारत और न्यू इंडिया के सपने को साकार किया जा सकेगा।

♦♦♦

# सूर्य नमस्कार - योगासनों में सर्वश्रेष्ठ

- नीता राणपरा

एस.एन.एल.पी.

हमारे जीवन का आधार सूर्य देव  है क्योंकि उनके कारण ही हमारी पृथ्वी है और उस पर जीवन है। सूर्य के बिना जीवन की परिकल्पना नही की जा सकती। उसी सूर्य का सबसे बेहतर उपयोग सूर्य नमस्कार के द्वारा किया जाता हैं। सूर्य नमस्कार अपने आप में संपूर्ण व्यायाम है जिससे ना केवल शारीरिक अपितु मानसिक व आध्यात्मिक विकास भी होता हैं। 'सूर्य नमस्कार' का शाब्दिक अर्थ सूर्य को अर्पण या नमस्कार करना है। जो लोग सूर्य नमस्कार को केवल एक शारीरिक व्यायाम समझते हैं तो हम उन्हें बता दें कि यह केवल एक शारीरिक क्रिया नही है। यदि किसी मनुष्य का शरीर स्वस्थ है लेकिन  मानसिक रूप से वह बीमार है तो यह सबसे बड़ा विकार होता है। इसलिए शरीर के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य का बेहतर होना अति-आवश्यक है जिसे हम सूर्य नमस्कार के माध्यम से कर सकते हैं। आध्यात्मिक विकास को मानसिक विकास से भी महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि मानसिक विकास इसी पर निर्भर करता है। इसलिए आज हम आपके साथ  सूर्य नमस्कार के फायदे  और इसे करने की विधि विस्तारपूर्वक साँझा करेंगे।  'सूर्य नमस्कार' स्त्री, पुरुष, बाल, युवा तथा वृद्धों के लिए भी उपयोगी बताया गया है।

सूर्य नमस्कार 12 चरणों के तहत किया जाता है। इन चरणों के अलग अलग नाम होते हैं और इनको अलग अलग तरह से किया जाता है। यह योग आसन शरीर को सही आकार देने और मन को शांत व स्वस्थ रखने का उत्तम तरीका है। सूर्य नमस्कार एक उत्तम कार्डियो-वॅस्क्युलर व्यायाम भी है और स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। सूर्य नमस्कार में केवल 12 चरणों की प्रक्रिया ही नही हैं अपितु इसे करने के लिए नियम भी बना रखे हैं। सूर्य नमस्कार को करने का सबसे ज्यादा लाभ तब मिलता हैं जब हम इसे सूर्योदय के समय पूर्व दिशा में सूर्य देव की ओर मुख करके करें। साथ ही इसे खुली जगह पर करने को कहा गया है जहाँ तक सूर्य की किरणें सीधे पहुँच सकें। सूर्योदय के समय सूर्य से आने वाली किरणों में हानिकारक किरणों का प्रभाव बहुत कम या नामात्र होता हैं जिससे हम उसका सर्वाधिक उपयोग करते हैं। इससे हम अपनी आत्मा से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं। सूर्य नमस्कार प्रातःकाल खाली पेट करना उचित होता है। हर एक आसन के मंत्र भी हैं और ये आसन हमारे शरीर के किस चक्र पर कार्य करता है वो भी बताया गया है, जो नीचे दिए गए चित्रों से स्पस्ट हो जायेगा।

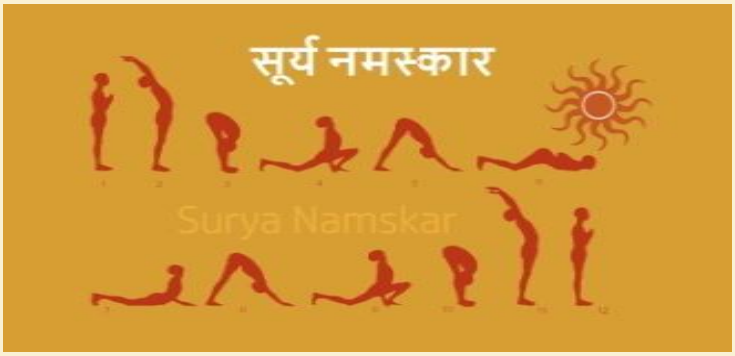


1. प्रणामासन- उच्छवास, ॐ मित्राय नमः। अनाहत चक्र
2. हस्त उत्तानासन- श्वास , ॐ रवये नमः। विशुद्धि चक्र
3. उत्तानासन- उच्छवास, ॐ सूर्याय नमः। मुलाधार चक्र
4. अश्व संचालनासन- श्वास, ॐ भानवे नमः। आज्ञा चक्र
5. पर्वतासन - उच्छवास, ॐ खगाय नमः। विशुद्धि चक्र
6. अष्टांग नमस्कार- रोखा, ॐ पूष्णे नमः। मणिपुर चक्र
7. भुजंगासन- श्वास, ॐ हिरण्यगर्भाय नमः। मुलाधार चक्र
8. पर्वतासन- उच्छवास, ॐ मरीचये नमः। विशुद्धि चक्र
9. अश्व संचालनासन- श्वास, ॐ आदित्याय नमः। आज्ञा चक्र
10. उत्तानासन- उच्छवास, ॐ सवित्रे नमः। मुलाधार चक्र
11. हस्त उत्तानासन- श्वास, ॐ अर्काय नमः। विशुद्धि चक्र
12. प्रणामासन- उच्छवास, ॐ भास्कराय नमः। अनाहत चक्र

आप कुछ महीनों तक लगातार सूर्य नमस्कार का अभ्यास करके देखिये, आपको अपने अंतःमन में अपने आप एक सकारात्मक बदलाव महसूस होगा। यदि आपके पास समय की कमी है, और आप चुस्त दुरुस्त रहने का कोई नुस्खा ढूँढ रहे हैं, तो सूर्य नमस्कार उसका सबसे अच्छा विकल्प है।

♦♦♦

# शास्त्रों में भोजन के नियम

- नीरू शर्मा
प्रशासनिक अधिकारी

बल, आयु, रूप और गुण प्रदान करने वाला भोजन महज स्वाद के लिए खाई जाने वाली चीज नहीं है। इसलिए प्राचीन ग्रंथों में भोजन के कुछ नियम बताए गए हैं-

1. भोजन हमेशा एकांत में ही करना चाहिए। (स्कंदपुराण)

2. दोनों हाथ, दोनों पैर और मुख इन पांच अंगों को धोकर ही भोजन करना चाहिए। ऐसा करने वाला शतायु होता है।

3. भोजन करते समय मौन रहना चाहिए। (स्कंदपुराण)

4. परोसे हुए भोजन की निंदा नहीं करनी चाहिए, वह स्वाद में जैसा भी हो, उसे प्रेम से ग्रहण करना चाहिए। (महाभारत)
5. रात में भर पेट भोजन नहीं करना चाहिए। (स्कंदपुराण)

6. सोने की जगह पर बैठकर न खाएं, हाथ में लेकर कुछ भी न खाए। पात्र या बर्तन में लेकर ही खाए। (मनुस्मृति)

7. जूठा किसी को न दें और स्वयं भी न खाएं, चाहे वह आपका छोड़ा हुआ अन्न ही क्यों न हो। भोजन के बाद जूठे मुंह कहीं न जाएं। (मनुस्मृति)

8. जो सेवक स्वयं भूख से पीड़ित हो और उसे आपके लिए भोजन लाना पड़े तो ऐसे भोजन ग्रहण न करें। जो आपके प्रति प्रेम - स्नेह नहीं रखता, उसका अन्न भी नहीं खाना चाहिए। (चरक संहिता)

♦♦♦

# योग का महत्व

-नीता राणपरा
एस.एन.एल.पी.

योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। योग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है, योग का अर्थ है जुड़ाव! जो हमारे शरीर, मन और आत्मा को एक साथ जोड़ता है और हमें मजबूत और शांति पूर्ण बनाता है। योग के ऊपर काफी पुस्तकें भी लिखी गई हैं। योग का वर्णन उपनिषदों में भी मिलता है, हिन्दू धर्म की प्रमुख पुस्तक श्रीमद भगवद गीता में योग शब्द का विभिन्न तरीकों से उपयोग किया गया है, इसमें योग के तीन प्रकार का परिचय है, प्रथम है कर्मयोग, कार्रवाई का योग, इसमें व्यक्ति अपनी स्थिति के उचित और कर्तव्यों के अनुसार कर्मो का श्रद्धा पूर्वक निर्वाह करता है। द्वितीय है, भक्ति योग, भक्ति का योग, इसे भावनात्मक आचरण वाले लोगों के लिए सुझाया जाता है। तृतीय है, ज्ञानयोग, ज्ञान का योग, ज्ञान प्राप्त करना।

योग के प्रथम गुरु भगवान शिव को माना गया है। योग के द्वारा शारीरिक ही नहीं बल्कि उत्तम मानसिक स्वास्थ्य को भी प्राप्त करने में पूरी-पूरी सहायता मिलती है। मानसिक शक्तियों के पोषण और विकास के लिए उपर्युक्त चेतना और शक्ति भी प्राप्त होती है। वर्तमान जीवन शैली के कारण संतोष पाने के लिए लोग योग करते हैं। योग तनाव को कम करने में मदद करता है और समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखता है, और एक स्वस्थ मन ही अच्छी तरह से ध्यान केंद्रित करने में सहायता कर सकता है। योग के माध्यम से शरीर, मन और मस्तिष्क को पूर्ण रूप से स्वस्थ किया जा सकता है। तीनों के स्वस्थ रहने से आप स्वयं को स्वस्थ महसूस करते हैं। योग के जरिए न सिर्फ बीमारियों का निदान किया जाता है, बल्कि इसे अपनाकर कई शारीरिक और मानसिक तकलीफों को भी दूर किया जा सकता है। योग प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाकर जीवन में नव-ऊर्जा का संचार करता है।

योग को अंग्रेजी भाषा में योगा कहते हैं। योग और योगासन अलग-अलग हैं। योगासन योग का एक हिस्सा है, जो शारीरिक और मानसिक दृस्टि से काफी महत्वपूर्ण है और आपको कई स्वाथ्यवर्धक फायदे भी पहुँचता है। इस प्राचीन प्रथा के बारे में विश्वभर में जाग्रतता फैलाने के उद्देश्य से अंतरराष्ट्रीय योग दिन मनाया जाता है। 11 दिसंबर 2014

को संयुक्त राष्ट्र के 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को "अंतरराष्ट्रीय योग दिवस" मनाने की प्रस्तावना को मंजूरी मिली। प्रधानमंत्री मोदीजी के इस प्रस्ताव को 90 दिन के भीतर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया। पहला अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2015 को दुनिया भर में मनाया गया।

योग का उद्देश्य व्यक्ति के जीवन में स्वास्थ्य लाभ देना, मानसिक शांति प्रदान करना, सद्गुणों का विकास करना और मनुष्य को सही रूप में एक आरोग्यप्रद, शान्तिप्रद और संतोषकारक जीवन प्रदान करना है। आज के आधुनिक समय में अपने आपको हर तरह से स्वस्थ रखने के लिए योग बहुत ही जरुरी है। हम काफी चीजों में अपना समय दे रहे हैं जोकि जरुरी भी नहीं होती। जब योग के इतने सारे फायदे हैं तो हमें अपनी दिनचर्या में इसे शामिल करना चाहिए जो की बेहद जरूरी भी है।

♦♦♦

हिन्दी को अपनाने का फैसला केवल हिन्दी वालों ने ही नहीं किया। हिन्दी की आवाज पहले अहिन्दी प्रान्तों से उठी। स्वामी दयानंद, महात्मा गाँधी या बंगाल के नेता हिन्दी भाषी नहीं थे। हिन्दी हमारी आजादी के आंदोलन का एक कार्यक्रम बनी।

- अटल बिहारी वाजपेयी

# पर्यावरण संरक्षण बनाम शहरी विकास

- गजेन्द्र सिंह
पी.एस.एस.

अगर आज के वक्त में हम बात करें तो न ही तो हम पर्यावरण संरक्षण कर पा रहे हैं और न ही शहरी विकास। जहाँ तक मुझे शहरी विकास की परिभाषा समझ में आती है तो वह यह है कि दुनियाँ में उपलब्ध तकनीकों का इस्तेमाल करके सुख सुविधाओं और सुरक्षा की चीजों को बढ़ाना। लेकिन क्या आप जानते हैं कि यूरोप व अमेरिका ने जो नई-नई तकनीकी दी हैं उनसे पर्यावरण का नुकसान ही हुआ है। अगर ऐसा नहीं होता तो क्या आज दुनियाँ को ओजोन परत का खतरा होता? यूरोप के महान दार्शनिक प्लेटो का कथन है कि -"इस दुनियाँ में और प्रकृति में जो कुछ भी है वो इंसान के भोगने के लिए ही है। इसे जितना चाहो भोगो।" तो वहाँ पर विकसित होने वाली तकनीकि भी इन्सान की सुख सुविधा के लिए ही है। उसे पर्यावरण की सुरक्षा से कोई मतलब नहीं। वे लोग पूर्व जन्म और पुनर्जन्म में भी विश्वास नहीं करते। इसलिए उन्होंने जो कुछ तकनीके दी वह प्रकृति के विनाश के लिए ही है। उन्हें सिर्फ अपने सुख से मतलब है प्रकृति से नहीं।

आप किस देश में पर्यावरण संरक्षण की बात कर रहे हैं। हम उस देश में रहते हैं जहाँ पर्यावरण के लिए ईशावास उपनिषद मे भी लिखा गया है। ईशावास उपनिषद का प्रथम श्लोक ही पर्यावरण सुरक्षा के बारे में कहता हैः

ईशा वास्यम् इदं सर्वम्, यतकिंच जगत्याम् जगत्येन्।
त्यक्तेन भुंजिथा मा, ग्रिद्ह कस्य सिद्धनम्।।

इसका अर्थ यह है कि "इस संसार में जो कुछ भी चर या अचर है वह सब भगवान का है। हम उसमें से अपने मतलब की सभी वस्तुओं का त्याग पूर्वक भोग कर सकते हैं।" केवल भोग ही भोग सम्भव नहीं है।

तो हमारे देश में तो प्रकृति को सुरक्षित रखने के लिए उपनिषदों में भी लिखा गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारी संस्कृति में पूर्व जन्म और पुनर्जन्म में विश्वास किया जाता है। अगर हम लोग बिना त्याग के प्रकृति की वस्तुओं का भोग करेंगे तो हमारे बाद आने वाले लोग उन

वस्तुओं को जान भी नहीं पायेंगे। और अगर यही सिलसिला चलता रहेगा तो प्रकृति एक दिन नष्ट हो जायेगी। यही कारण है कि आज तक भारत ने ऐसी कोई तकनीकें नहीं दी जो प्रकृति के लिए हानिकारक हों।

हमारे देश में दो जातियां निवास करती है- शिक्षित वर्ग और अशिक्षित वर्ग। ये जो शिक्षित वर्ग के लोग हैं ये आज भी मानसिक रूप से अंग्रेजों अर्थात यूरोप और अमेरिका वालों के गुलाम हैं। ये लोग अंग्रेजों को अपना आदर्श मानते हैं और अपने आप को उनके सामने बहुत छोटा। इस शिक्षित वर्ग की मानसिक गुलामी की वजह से भारत में जो विदेशी तकनीकी आयी है अगर आप उस पैमाने के आधार पर मानते हैं कि शहरों का विकास हुआ है तो मैं भी कहता हूँ कि शहरों का विकास हुआ है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि दुनियाँ के सारे देश भारत को एक डम्पिंग देश के रूप में इस्तेमाल करते हैं। मतलब यह कि जो तकनीके अब दुनियाँ वाले इस्तेमाल नहीं करते वो भारत को दे दी जाती हैं। और यूरोप व अमेरिका जैसे देश पर्यावरण के लिए हानिकारक उस पुरानी तकनीकों से बनी वस्तुओं को भारत में बेचकर तरक्की करते हैं। अगर आप मानते हैं कि हमारे शहरों के लोग आज ताजा फल, सब्जियों, चावल और रोटी की जगह मैकडोनाल्ड पर मिलने वाला सड़े हुए मैदे का पीज्जा, बर्गर खाते हैं या फिर बोतलों में बन्द पेप्सी कोला और कोका कोला का काला पानी पीते हैं तो हाँ शहरों का विकास हुआ है। अगर आप उपजाऊ जमीन पर गोल्फ कोर्स या मॉल बनवा देते हैं तो क्या इससे ही शहरों का विकास नजर आता है। आज शहरों में दो चार मॉल्स, फ्लाई ओवर बनवा देने से ही शहरों का विकास नहीं हो जाता है। आज शहरों में विकास के नाम पर हमारी संस्कृति का भी पतन हो रहा है। हम शहरों में डिस्कोथेक देखते हैं। क्या अंग्रेजी सभ्यता के इस नंगे नाच को देखकर हम मान लें कि शहरों का विकास हुआ है। शहरों में होने वाले फैशन शो आज दिन प्रति दिन हमें हमारी संस्कृति से दूर कर रहे हैं। इन सभी चीजों से मानसिक गुलामी वाले शिक्षित लोग समझते हैं कि हमारे शहर का विकास हो रहा है।

हमारे देश का अशिक्षित वर्ग समाज और देश के प्रति बहुत देशभक्ति रखता है। वह ऐसा कोई काम नहीं करता जिससे पर्यावरण या उसके शहर और देश को नुकसान पहुँचे। वो कभी चाय, कॉफी, पीज्जा, बर्गर, या काला पानी नहीं पीता। वह हमेशा दूध, छाछ, जूस, ताजा फल, सब्जी और

रोटी खाता है जो उसके अपने देश में ही उपलब्ध हैं। वो हमेशा देशभक्ति निभाता है और ये शिक्षित लोग जो मानसिक रूप से गुलाम हैं, हमेशा देश द्रोह करते हैं।

किसी भी शहर में आज पीने को शुद्ध पानी तक नहीं हैं, हाँ वो काला पानी (पेप्सी, कोक) जरूर आपको बन्द बोतलों में मिल जायेगा और हमारी सरकारें शहरी विकास का दावा करती हैं। हमारी सरकारें तो चाहती भी यही हैं कि हम मानसिक गुलाम बने रहें और कभी किसी बात का विरोध न करें जिससे इन सरकारों के पेट आसानी से भरते रहें और हमें मूर्ख बनाकर हमारे खून पसीने की कमाई का 400 लाख करोड़ स्विस बैंकों में जमा करा दें। अगर आप इसे शहरों का विकास मानते हैं, तो विकास हुआ है। आज सरकारें कहती है कि शहरों में 33.3 रू प्रतिदिन कमाने वाला गरीब नहीं हैं। अगर वाकई ऐसा है तो शहरों का विकास हुआ है। एक तरफ सरकार कहती है कि भारत में मात्र अब लगभग 21 करोड़ लोग ही गरीब हैं और दूसरी तरफ भारत की आबादी के 67 को खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत लाना चाहती है। जब देश में गरीब ही नहीं तो इसकी क्या जरूरत है।

शहरों में विकास के नाम पर आज बड़े-बड़े कारखाने खुल रहे हैं। उन कराखानों में कुछ केमिकल के भी है। क्या आप जानते हैं उनसे निकलने वाले जहरीले केमिकल्स किस प्रकार हमारे पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं। 1983 का भोपाल गैस काण्ड इसका एक उदाहरण है। आज अगर शहरों में सड़कें और फ्लाई ओवर बने हैं तो आपको मालूम है उन पर दौड़ने वाली कारों, बसों ने हमारे पर्यावरण को किस हद तक दूषित कर दिया है। सड़कों में भी जो मुख्य सड़कें हैं वही ठीक हैं। अगर आप उनसे थोड़ा नीचे उतरते हैं तो सड़कों का हाल पता लगेगा। अगर आप ऊँची-ऊँची इमारतों के बन जाने से शहरों का विकास समझते हैं तो मैं आपको बता दूँ उनमें लगे हुए इलैक्ट्रानिक उपकरण जैसे टी.वी., रेफ्रिजरेटर, ए.सी. पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं।

अन्त में मैं यही कहूँगा कि विकास उस तकनीकों से होना चाहिए जो हमारे पर्यावरण के लिए हानिकारक न हो। हम उन वस्तुओं का इस्तेमाल करें जो पर्यावरण को किसी भी तरीके से प्रभावित न करें।

♦♦♦

# अनमोल उपहार

-भुबन दास,
पी.एस.एस.

उपहार एक ऐसा शब्द है जिससे सभी भली भांति परिचित हैं, उपहार देना और लेना सबको अच्छा लगता है, अलग-अलग मौके पर विभिन्न प्रकार के उपहारों का आदान-प्रदान जरुर होता है। शादी के बाद मेरी धर्मपत्नी कहती है आप तो मुझे कोई उपहार ही नहीं दिया, यह बात सुनके में भी सोचने लगा आखिर कौन सी उपहार दिया जाये? जो कि काम का हो, हम लोग उपहार जरुर देते हैं वह वहुत कीमती भी होता है, और ऐसा भी होता है कुछ उपहार घर में पड़े रहते हैं, किसी काम में नहीं आते हैं। घर में शो-पीस बन के रह जाते हैं, मै सोचने लगा आखिर क्या उपहार दिया जाए जो कि घर में सबको काम आए और धर्मपत्नी को भी अच्छा लगे, मैंने सोचा क्यों ना सिलाई मशीन ही दिया जाए, पर उसे सिलाई ही नहीं आती थी। तो मैने कहा कोई बात नहीं मशीन आया तो सिलाई भी आ ही जायेगी, उसको सिलाई सेन्टर में प्रशिक्षण के लिए दाखिला करा दिया और वह धीरे धीरे सिलाई सीख ली और मैं उसका हौसला बढ़ाने के लिए कपड़ा खरीद देता था कि मेरे लिए कपड़े सिलाई कर देगी। खराब भी होगा तो भी मैं पहनूंगा कोई डर भी नहीं रहेगा, सिलाई खराब होने का। धीरे धीरे घर का छोटे मोटे काम और बच्चों के कपड़े सिलते सिलते आज वह हर तरह की कपड़े सिलने लगी है और तो और खुद में आत्मविश्वास का एहसास भी अनुभव करती है और आत्मनिर्भर भी हो गयी है। अब वह कहती है मेरा जीबन का सबसे अनमोल उपहार यह सिलाई मशीन ही है। मेरे कहने का मतलब है कि किसी को उपहार देने से पहले एक बार जरुर सोचना चाहिए जो उपहार उसको दिया जा रहा है और वह उसके किस तरह उपयोग में आ सकता है, उपहार देना है तो कुछ भी दे दो और अपना काम खत्म करो, ऐसा नहीं सोचना चाहिए। जो भी दिया जाये उसका सदुपयोग हो जिसको दिया जाये उसके काम आ सके तभी उपहार देना सार्थक होगा।

♦♦♦

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020

- ओम प्रकाश शर्मा
परामर्शकार (हिन्दी)

भारत सरकार द्वारा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष डॉक्टर के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में नई शिक्षा नीति का मसौदा तैयार करने के लिए एक समिति का गठन किया गया था। मई, 2019 में कस्तूरीरंगन समिति ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति का नया रूप सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया। जिसे सरकार द्वारा मंजूरी दे दी गई है। वर्ष 1986 के बाद भारत में यह तीसरी शिक्षा नीति है जो भारत में लागू होने जा रही है। जिसके अंतर्गत शिक्षा नीति में बहुत से परिवर्तन किए जा रहे हैं।

**नई शिक्षा नीति क्या है?**

नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत वर्ष 2030 तक शैक्षिक प्रणाली को सुव्यवस्थित किया गया है और वर्तमान में चल रहे 10+2 प्रणाली के स्थान पर पाठ्यक्रम में 5+3+3+4 की शैक्षिक प्रणाली के आधार पर पाठ्यक्रम को विभाजित किया जाएगा। नई शिक्षा नीति 2020 के लिए केंद्र तथा राज्य सरकारें शिक्षा क्षेत्र सहयोग के लिए देश की 6% जी.डी.पी. के बराबर शिक्षा क्षेत्र में निवेश करेगी।

**नई शिक्षा नीति के उद्देश्य:**

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति  का उद्देश्य शैक्षिक क्षेत्र में भारत को वैश्विक महाशक्ति बनाना है और भारत के लिए नई शैक्षिक नीतियों के माध्यम से संपूर्ण भारत में शिक्षा को उचित स्तर प्रदान करना है, जिससे शैक्षिक क्षेत्र की गुणवत्ता उच्च हो सके। भारत में बच्चों को तकनीकी तथा रचनात्मकता के साथ-साथ शिक्षा की गुणवत्ता के महत्व से अवगत कराना नई शिक्षा नीति का उद्देश्य है जिससे शिक्षा के गुणवत्ता में सुधार हो सके।

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 5+3+3+4 ढांचे की विशेषताएं

- नई शिक्षा नीति के तहत शैक्षिक क्षेत्र को प्रौद्योगकी से भी जोड़ा जाएगा जिसमें सभी स्कूलों में ज्यादा से ज्यादा डिजिटल उपकरण दिए जाएंगे।
- नई शिक्षा नीति में सभी प्रकार की शैक्षिक विषय वस्तु को प्रमुखता प्रदान की जाएगी। इसका क्षेत्रीय भाषा में भी अनुवाद किया जाएगा ताकि शैक्षिक क्षेत्र में क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा मिल सके।
- नई शिक्षा नीति के भीतर अब पढ़ाई में कई प्रकार के अन्य विकल्प बच्चों को दिए जाएंगे। अब दसवीं कक्षा में अन्य विकल्पों को भी रखा जाएगा जिसमें छात्र कोई स्ट्रीम ना चुनकर अपनी इच्छा अनुसार विषयों को चुन सकेगा।
- नई शिक्षा नीति के अंतर्गत छात्रों को छठी कक्षा से ही कोडिंग सिखाई जाएगी।
- शैक्षिक क्षेत्र में वर्चुअल लैब्स को भी बनाए जाएंगे जिससे शैक्षिक क्षेत्रों की गुणवत्ता को उच्च किया जा सके।
- नई शिक्षा नीति के तहत वर्षों से चली आ रही 10 + 2 के शैक्षिक प्रणाली को बदलकर 5+3+3+4 के नए शैक्षिक पैटर्न को चुना गया है।
- नई शिक्षा नीति के तहत शिक्षा का सार्वभौमीकरण किया जाएगा. इसमें कुछ शैक्षिक क्षेत्रों को शामिल नहीं किया गया है, जैसे चिकित्सा एवं कानूनी शिक्षा (मेडिकल तथा लॉ एजुकेशन)।

## नई शिक्षा नीति के लाभ

- नई शिक्षा नीति के माध्यम से शैक्षिक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- नई शिक्षा नीति के माध्यम से शैक्षिक पाठ्यक्रम में भाषाओं को लेकर कई विकल्प रखे गए हैं। यदि शैक्षिक पाठ्यक्रम में कोई छात्र अपनी क्षेत्रीय भाषा अथवा मातृभाषा को पढ़ना चाहता है तो वह आसानी से उन्हें पढ़ सकता है।
- नई शिक्षा नीति में 2025 तक प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा तीन तक के सभी छात्रों के लिए संख्यात्मक ज्ञान तथा साक्षरता को प्राप्त करने के लिए एक राष्ट्रीय मिशन की योजना तैयार की जाएगी।
- स्वास्थ्य नीति के तहत छात्रों के स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया जाएगा जिसके साथ छात्रों के लिए स्वास्थ्य कार्ड भी बनाये जाएंगे।

- नई शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षकों को समय-समय पर उनके कार्य प्रदर्शन के आधार पर पदोन्नति का प्रावधान भी रखा गया है।
- नई शिक्षा नीति में 2030 तक अध्यापन के लिए शिक्षा स्नातक (बी.एड.) की डिग्री को 4 वर्ष की न्यूनतम डिग्री योग्यता में सम्मिलित कर दिया गया है।
- राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद वर्ष 2022 तक शिक्षकों के लिए व्यवसायिक मानक को विकसित करेगी तथा एन.सी.ई.आर.टी. के परामर्श पर अध्यापकों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिक पाठ्यक्रम की चर्चा की विषय वस्तु को भी तैयार किया जाएगा।
- नई शिक्षा नीति में शैक्षिक पाठ्यक्रम के साथ-साथ छात्रों के कौशल विकास पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
- नई शिक्षा नीति में छात्रों पर पढ़ाई का बोझ कम करने के लिए हर संभव प्रयास किए गए हैं। जिसमें पढ़ाई को आसान बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) सॉफ्टवेयर का प्रयोग शैक्षिक पाठ्यक्रम में किया जाएगा।
- छात्रों पर बोर्ड परीक्षाओं का बोझ कम करने के लिए बोर्ड परीक्षाओं की रूपरेखा को भी बदला जाएगा जिसमें एक वर्ष में दो बार छात्रों की परीक्षाएं की जाएंगी।
- छात्रों को ऑफलाइन कक्षाओं के साथ ऑनलाइन माध्यम से भी पाठ्यक्रम/ कोर्स उपलब्ध करवाए जाएंगे।
- देश के बड़े संस्थान जैसे आई.आई.टी. और आई.आई.एम. के लिए वैश्विक स्तर पर मानकों हेतु बहु विषयक शिक्षा एवं अनुसंधान विश्वविद्यालय की स्थापना भी नई शिक्षा नीति के अंतर्गत की जाएगी।
- कानूनी तथा चिकित्सा क्षेत्र को छोड़कर उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिए एकल निकाय के रूप में भारतीय उच्च शिक्षा आयोग का गठन किया जाएगा।
- शैक्षिक पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करने तथा उसे तकनीकी माध्यम से जोड़ने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच की एक स्वायत्त निकाय के रूप में स्थापना की जाएगी, जिससे शिक्षा तथा प्रशासनिक क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से विचारों का आदान प्रदान संभव हो सके।

**नई शिक्षा नीति को निम्नलिखित चार स्टेज में विभाजित किया गया है:**

**फाउंडेशन स्टेज-** नई शिक्षा नीति के फाउंडेशन स्टेज में 3 से 8 साल तक के बच्चों को सम्मिलित किया गया है। जिसमें 3 साल की प्री स्कूली शिक्षा को सम्मिलित किया गया है जिसके अंतर्गत छात्रों का भाषा कौशल तथा शैक्षिक स्तर का मूल्यांकन किया जाएगा और उसके विकास में ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

प्रीपेटरी स्टेज- इस स्टेज में 8 से 11 साल के बच्चों को सम्मिलित किया गया है जिसमें 3 से कक्षा 5 तक के बच्चे होंगे। नई शिक्षा नीति के इस स्टेज में छात्रों के संख्यात्मक कौशल को मजबूत करने पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाएगा वहीं सभी बच्चों को क्षेत्रीय भाषा का भी ज्ञान दिया जाएगा।

**मिडिल स्टेज-** इस स्टेज के भीतर छठी से आठवीं कक्षा तक के बच्चों को सम्मिलित किया गया है, जिसमें छठी कक्षा के बच्चों से से ही कोडिंग सिखाना शुरू किया जाएगा। वहीँ सभी बच्चों को व्यवसायिक परीक्षण के साथ-साथ व्यवसाय इंटर्नशिप के अवसर भी प्रदान किए जाएंगे।

**सेकेंडरी स्टेज-** इस स्टेज में आठवीं कक्षा से 12वीं कक्षा तक के छात्रों को सम्मिलित किया गया है। इस स्टेज के भीतर आठवीं से 12वीं कक्षा के शैक्षिक पाठ्यक्रम को भी खत्म करके बहु-वैकल्पिक शैक्षिक पाठ्यक्रम को शुरू किया गया है। छात्र किसी निर्धारित स्ट्रीम के भीतर नहीं बल्कि अपनी मनपसंद के अनुसार अपने विषयों को चुन सकते हैं। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत छात्रों को विषयों को चुनने को लेकर स्वतंत्रता दी गई है। छात्र साइंस के विषयों के साथ-साथ आर्ट्स या कॉमर्स के विषय भी एक साथ पढ़ सकते हैं।

**नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत उठाए जाने वाले महत्वपूर्ण कदम**

**1. शिक्षकों की भर्तियों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा**

नई शिक्षा नीति को सुचारू रूप से चलाने के लिए शिक्षकों की भर्तियों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत क्षेत्र तथा मातृ भाषाओं की पढ़ाई को भी सम्मिलित किया गया है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत क्षेत्रीय भाषा बोलने वाले शिक्षकों को भर्ती किया जाएगा।

**2. माध्यमिक स्तर से ही बच्चों के पास विदेशी भाषा के कई विकल्प उपलब्ध होंगे**

नई शिक्षा नीति के भीतर माध्यमिक स्तर से ही बच्चों के पास विदेशी भाषा के कई विकल्पों को रखा जाएगा। जिसमें बच्चे माध्यमिक स्तर से ही फ्रेंच, चाइनीस, जापानी, स्पेनिश और जर्मन आदि विदेशी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

**3. शैक्षिक पाठ्यक्रम में मातृभाषा तथा क्षेत्रीय भाषा को सम्मिलित किया जाएगा**

नई शिक्षा नीति के भीतर मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा को भी सम्मिलित किया जाएगा। 2020 की नई शिक्षा नीति के अंतर्गत पांचवी कक्षा तक बच्चों को उनकी मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा पढ़ाने का प्रावधान भी रखा गया है। जिसमें पाठ्य पुस्तकों से लेकर बोलचाल तक क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मिलित किया जाएगा।

**4. व्यावसायिक (वोकेशनल शिक्षा) पर विशेष बल**

हमारे देश में वोकेशनल पढ़ाई करने वाले छात्रों का प्रतिशत 5 प्रतिशत से भी कम है। नई शिक्षा नीति के भीतर 2025 के अंत तक इस प्रतिशत को 50% तक पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है जिसमें सभी छात्रों को वोकेशनल शिक्षा दी जाएगी। वोकेशनल शिक्षा के अंतर्गत बागवानी, मिट्टी के बर्तनों को बनाना, बिजली का काम और लकड़ी का काम सिखाना आदि कार्य सम्मिलित किए गए हैं। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत छठी कक्षा से आठवीं कक्षा तक छात्रों को वोकेशनल पढ़ाई कराई जाएगी।

**5. शैक्षिक पाठ्यक्रम में नए कौशलों (स्किल) को सम्मिलित किया जाएगा**

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत छात्रों का पढ़ाई के साथ साथ कौशलों का विकास भी किया जाएगा। जिसमें न्यूनतम कक्षा से ही बच्चों को योग, संगीत, नृत्य, खेल और मूर्तिकला आदि विषयों में प्रशिक्षण दिया जाएगा। ताकि छात्र पढ़ाई के साथ साथ अन्य प्रकार के कौशलों में भी निपुण हो सकें।

♦♦♦

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिन्दी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।"

- नरेन्द्र मोदी

# राष्ट्रमंडल खेल -2022

- नितेश कुमार
कार्यालय सहायक

ब्रिटिश साम्राज्य (यूनाइटेड किंगडम) के अधीन देशों को एक साथ लाने वाली एक खेल प्रतियोगिता पहली बार 1891 में जॉन एस्टली कूपर द्वारा प्रस्तावित की गई थी, उन्होंने इसके लिए कई पत्रिकाओं के लिए पत्र और लेख लिखे थे, जिसमें इन खेलों को "हर चार साल में पैन ब्रिटैनिक, पैन एंग्लिकन प्रतियोगिता को सद्भावना और आम भाईचारे को बढ़ावा देने के साधन के रूप में" बताया गया था। ब्रिटिश साम्राज्य के इस विचार को बढ़ावा देने के लिए ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका में जॉन एस्टली कूपर समितियों का गठन किया गया और पियरे डी कुबर्टिन को अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक खेल आंदोलन शुरू करने के लिए प्रेरित किया।

1911 में, जॉर्ज पंचम के राज्याभिषेक का जश्न मनाने के लिए लंदन में “द क्रिस्टल पैलेस” में एम्पायर फेस्टिवल के साथ एक इंटर-एम्पायर चैंपियनशिप आयोजित की गई थी, जिसमें ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड), कनाडा, दक्षिण अफ्रीका और यूनाइटेड किंगडम की टीमों ने एथलेटिक्स, मुक्केबाजी, तैराकी और कुश्ती के आयोजनों में भाग लिया। मेलविल मार्क्स रॉबिन्सन, जो कनाडा की ट्रैक और फील्ड टीम के प्रबंधक के रूप में काम करने के लिए एम्स्टर्डम में 1928 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में गए थे, ने 1930 में हैमिल्टन में पहले ब्रिटिश साम्राज्य खेलों के आयोजन के प्रस्ताव की जोरदार पैरवी की।

कॉमनवेल्थ गेम्स, को अक्सर फ्रेंडली गेम्स के रूप में जाना जाता है। कॉमनवेल्थ ऑफ नेशंस के एथलीटों के बीच एक चतुष्कोणीय अंतरराष्ट्रीय बहु-खेल आयोजन है। यह आयोजन पहली बार 1930 में आयोजित किया गया था, और 1942 और 1946 को (छोड़कर (द्वितीय विश्व युद्ध के कारण रद्द) हर चार साल बाद लगातार आयोजन किया जाता रहा है। खेलों को 1930 से 1950 तक ब्रिटिश एम्पायर गेम्स, 1954 से 1966 तक ब्रिटिश एम्पायर और कॉमनवेल्थ गेम्स और 1970 से 1974 तक ब्रिटिश कॉमनवेल्थ गेम्स कहा जाता था। विकलांग एथलीटों को 2002 से उनकी राष्ट्रीय टीमों के पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल किया गया है, जिससे राष्ट्रमंडल खेल पहला पूर्ण समावेशी अंतर्राष्ट्रीय बहु-खेल आयोजन बन गया है। 2018 में, खेल पहला वैश्विक बहु-खेल आयोजन बन गया जिसमें पुरुषों और महिलाओं के पदक की समान संख्या शामिल थी और चार साल बाद वे पुरुषों की तुलना में महिलाओं के लिए अधिक आयोजन करने वाला वैश्विक बहु-खेल आयोजन है।

1911 के एम्पायर फेस्टिवल के हिस्से, इंटर-एम्पायर चैंपियनशिप से प्रेरित होकर, मेलविल मार्क्स रॉबिन्सन ने ब्रिटिश एम्पायर गेम्स की स्थापना की, जो पहली बार 1930 में हैमिल्टन, कनाडा में आयोजित किए गए थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया इन खेलों का विकास हुआ, विकलांग एथलीटों के लिए राष्ट्रमंडल पैराप्लेजिक खेलों को जोड़ा गया। 14 से 18 वर्ष की आयु के एथलीटों के लिए राष्ट्रमंडल युवा खेल को शामिल किया गया।

इन खेलों की देखरेख कॉमनवेल्थ गेम्स फेडरेशन (CGF) द्वारा की जाती है, जो खेल कार्यक्रम को नियंत्रित करता है और मेजबानी करने वाले शहरों का चयन करता है। खेल आयोजन में अंतर्राष्ट्रीय खेल संघ (IFs), राष्ट्रमंडल खेल संघ (CGA) और प्रत्येक विशिष्ट राष्ट्रमंडल खेलों के लिए आयोजन समितियाँ शामिल हैं। कुछ परंपराएं, जैसे राष्ट्रमंडल खेलों का झंडा फहराना और क्वीन्स बैटन रिले, साथ ही उद्घाटन और समापन समारोह, खेलों के लिए अद्वितीय हैं। 4,500 से अधिक एथलीटों ने 25 खेलों हाल ही में संपन्न राष्ट्रमंडल खेलों में भाग लिया और 250 से अधिक पदक स्पर्धाओं में भाग लिया, जिसमें ओलंपिक और पैरालंपिक खेल और राष्ट्रमंडल देशों में लोकप्रिय खेल शामिल हैं। यह आशा की जाती है कि गैबॉन और टोगो 2026 राष्ट्रमंडल खेलों में पहली बार एक टीम भेजेंगे, क्योंकि दोनों देशों को जून, 2022 में राष्ट्रमंडल में शामिल किया गया था और उनके पास 2022 खेलों के लिए अपने संघों को व्यवस्थित करने के लिए समय नहीं था जो जुलाई 2022 के अंत तक आयोजित किए जाने थे।

अभी तक प्रत्येक राष्ट्रमंडल खेलों में केवल छह देशों ने भाग लिया है: ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स। इन छह में से ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, कनाडा और न्यूजीलैंड ने प्रत्येक खेलों में कम से कम एक स्वर्ण पदक जीता है। ऑस्ट्रेलिया इन खेलों के तेरह आयोजन के लिए सर्वोच्च उपलब्धि हासिल करने वाली टीम रही है, सात के लिए इंग्लैंड और एक के लिए कनाडा। ये तीनों टीमें उस क्रम में सर्वकालिक राष्ट्रमंडल खेलों की पदक तालिका में भी शीर्ष पर हैं।

हाल ही में 22वें राष्ट्रमंडल खेल, 28 जुलाई से 8 अगस्त 2022 तक यूनाइटेड किंगडम (इंग्लैंड) के बर्मिंघम शहर में आयोजित किए गए थे। 22 वें राष्ट्रमंडल खेलों में भारत ने कुल 61 पदक जीते हैं। इनमें 22 स्वर्ण, 16 रजत और 23 कांस्य पदक शामिल हैं। हॉकी में रजत पदक के साथ भारत का सफर समाप्त हुआ है। इस बार वेटलिफ्टिंग में संकेत सरगर ने पहला पदक दिलाया है। अगले राष्ट्रमंडल खेल 17 से 29 मार्च 2026 तक ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया राज्य में आयोजित किए जाएंगे। यह इतिहास में पहला ऐसा खेल होगा, जो विकेन्द्रीकृत तरीके से आयोजित किया जाएगा, क्योंकि उन्हें ऑस्ट्रेलिया के चार शहरों में आयोजित किया जाना है।

♦♦♦

# भारत के शिल्प - आत्मा और आयाम

- वैष्णवी कमल प्रसाद
इंटर्न

मनुष्य अपने भावनात्मक उद्‌गारों की अभिव्यक्ति कई प्रकार से करता आया है। जब हृदय प्रफुल्लित हुआ, तब उसके पैर थिरक उठे अथवा कंठ से रागिनियां फूट पड़ीं, कभी उसने हाथों में कूची उठाकर पटल पर रंग बिखेर दिए तो कभी गीली मिट्‌टी को किसी आकार में ढाल दिया। इसी प्रकार उसने कभी किसी शिला-खंड को छेनी-हथौड़े से तराशकर कोई प्रतिमा बना दिया। नृत्य तथा गायन हृदय के उद्‌गारों की अभिव्यक्ति हैं, परन्तु वे अमूर्त हैं। शिला-खंडों पर उकेरे गए चित्र अथवा उनसे तराशे गए शिल्प मनोभावों की अभिव्यक्ति के मूर्त आयाम हैं। इसके साथ ही उनका पुरातात्विक महत्व भी है। प्रागैतिहासिक काल के कुछ अति प्राचीन चित्र भोपाल और होशंगाबाद के मार्ग में भीम बेटका के जंगल में देखे जा सकते हैं। आदि मानव ने वहां के प्राकृतिक शिला-खंडों के बीच अपना आवास बनाया। उन्होंने लाल, सफ़ेद और पीले रंगों से अपनी दिनचर्या के कुछ विशेष क्षणों को चित्र के रूप में अंकित किया। भीम बेटका के शिला-खंडों पर उनके हृदय के उद्‌गारों की अभिव्यक्ति के रूप में कितने ही शैल-चित्र आज भी विद्‌यमान हैं। ये चित्र अपरिष्कृत अवश्य हैं, परन्तु आदि-मानव की कलात्मक अभिव्यक्ति हैं। शैल-चित्रों में अपने कलात्मक उद्‌गारों को प्रकट करते हुए मनुष्य जब प्रागैतिहासिक काल से निकलकर सभ्यता की ओर अग्रसर हुआ, तब उसने अभिव्यक्ति के लिए त्रि-आयामी माध्यम तलाशना आरंभ किया।

त्रि-आयामी कला के आरंभिक प्रमाण मिट्‌टी के शिल्प हैं, जिन्हें मृण-मूर्तियां अथवा 'टेराकोटा' कहा जाता है। जैसे-जैसे कलात्मक अभिव्यक्ति परिष्कृत होती गयी, नए-नए माध्यमों में दक्षता बढ़ती गयी। भारत के शिल्पियों ने अपने दक्ष हाथों से मिट्‌टी, पत्थर और धातु जैसे निर्जीव माध्यमों को मनुष्य, पशु-पक्षी और पेड़-पौधों के रूप में सजीव तो कर ही दिया, शिला-खंडों को भी तराशकर देवी-देवता बना दिया। निर्जीव माध्यमों में सजीव का प्रस्तुतिकरण भारत के शिल्प की आत्मा है। सजीव को शिल्प में ढालने के लिए प्रयोग में लाए गए मिट्‌टी, पत्थर और धातु इत्यादि विविध माध्यम शिल्प के आयाम हैं। इस प्रकार शिल्प के माध्यम से की गयी मनोभावों की अभिव्यक्ति कला के परिष्कृत रूप में सामने आयी।

भारत के शिल्पियों की विशेषता रही कि उन्होंने अपनी कला के लिए चाहे किसी भी माध्यम का प्रयोग किया हो, प्रत्येक माध्यम में जन-जीवन के साथ धार्मिक मान्यताओं को भी मूर्त किया है।

## मृण-मूर्तियां

कला के रूप में मनोभावों की त्रि-आयामी अभिव्यक्ति के लिए सबसे पहले मिट्टी का प्रयोग किया गया। भारत में प्राप्त आरंभिक मृण-मूर्तियों का निर्माण-काल लगभग 2500-2000 ईसा पूर्व है। उन मूर्तियों की अपरिष्कृत गढ़न से यह स्पष्ट है कि गीली मिट्टी को हाथों से आकार दिया गया है। मिट्टी से निर्मित टेढ़ी-मेढ़ी उन प्राचीन मूर्तियों का महत्व यह है कि वे जन-साधारण की कला हैं। सदियां बीत गयीं, लोग कुल्ली और झोब के कबीलाई जीवन को त्यागकर नगरों में रहने लगे। परन्तु मृण-मूर्तियों का प्रचलन कम नहीं हुआ। मौर्य, शुंग और गुप्त शासकों के काल में निर्मित मूर्तियों को देखकर कहा जा सकता है कि उन्हें बनाने के लिए सांचों का प्रयोग किया गया होगा। संभवतः मूर्तियों की बढ़ती मांग की आपूर्ति के लिए शिल्पियों को सांचों के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। मौर्य, शुंग तथा गुप्त शासकों के काल में जब आर्थिक समृद्धि के प्रभाव में शिल्प बनाने के लिए पत्थर और धातु का प्रयोग किया जा रहा था, तब भी साधारण प्रजा ने अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए मिट्टी को ही माध्यम बनाया। मृण-मूर्तियों की विविधता ऐसी है कि मात्र सजीव ही नहीं, अपितु निर्जीव को भी इस माध्यम में ढाला गया। मनुष्य, पशु, पक्षी, बैलगाड़ी इत्यादि के रूप में बनी मृण-मूर्तियां देश के विभिन्न संग्रहालयों में देखी जा सकती हैं। इन मूर्तियों में जन-जीवन की विविधतापूर्ण झलक मिलती है। मिट्टी से बड़े आकार की मूर्तियां अथवा आकृतियों की श्रृंखलाएं नहीं बनायी जा सकती हैं। अतः आकृतियों को श्रृंखला के रूप में प्रस्तुत करने के लिए उन्हें पट्टिकाओं पर उकेरा गया। उन्हें सतह पर उभरी हुई आकृतियों का रूप दिया गया। मिट्टी की बड़ी-बड़ी पट्टिकाओं पर आकृतियों की श्रृंखला तथा विविध प्रकार के दृश्य अंकित करने के बाद कुछ नए प्रयोग किए गए। पश्चिम बंगाल के विष्णुपुर गांव में मृण-पट्टिकाओं से निर्मित कई भव्य मंदिर और मस्जिद देखे जा

सकते हैं। ऐसे अभिनव प्रयोगों से मृण-मूर्तियों में विविधता तो आयी, साथ ही उनकी उपयोगिता भी प्रमाणित हुई। मृण-मूर्तियों का आंकलन उनकी विविधता के आधार पर किया जाए तो उन्हें किसी दूसरे माध्यम से कम नहीं आंका जा सकता है।

मृण-मूर्तियां जन-साधारण की स्वछंद कला के रूप में विकसित हुई। अतः उनके लिए विशेष नियमों के निर्धारण नहीं किया जा सकता था। उन मूर्तियों की विशेषता यह है कि उनमें प्रकृति के अलग-अलग स्वरूपों और सामाजिक जीवन के विविध विषयों को साकार किया गया है। उनमें सजीव और निर्जीव के वास्तविक और स्वाभाविक अंकन को देखकर यही कहा जा सकता है कि समय के साथ वह कला स्वतः ही परिपक्व और परिष्कृत होती गयी। भारत की शिल्प-संपदा में मृण-मूर्तियों का विशेष स्थान है। उनमें इतिहास और ऐतिहासिक तथ्यों की झलक है। उन मूर्तियों में समाज और इतिहास के जो अंकन मिलते हैं, उनमें कहीं-कहीं इतिहासकार भी चूक गए हैं। तत्कालीन वेष-भूषा, केश-विन्यास, आभूषण इत्यादि की जितनी विस्तृत जानकारी मृण-मूर्तियों से मिलती है, वह इतिहास की गाथाओं में नहीं है। प्रागैतिहासिक काल के धर्म के विषय में कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। इन परिस्थितियों में उस काल की धार्मिक मान्यताओं के अध्ययन के लिए मृण-मूर्तियों का विशेष महत्व है। उस काल में निर्मित मूर्तियों में अधिकांशतः स्त्री आकृतियां हैं। उन मूर्तियों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उनमें सामान्य स्त्रियों के अंकन नहीं है। पुरातत्वविदों ने भी यह विचार प्रकट किया है कि उन मूर्तियों में मातृ-देवी का अंकन किए गए हैं। यह मानने का आधार यह है कि उस काल में मातृ-देवी की आराधना का प्रचलन रहा। मृण-मूर्तियों में मातृ-देवी का अंकन आगे आने वाली सभ्यताओं में भी प्रचलित रहा।

**प्रस्तर-शिल्प**

प्रस्तर-शिल्प के आरंभिक प्रमाण सिंधु घाटी से प्राप्त हुए हैं। सिंधु घाटी से गिनी-चुनी प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं, परन्तु वे उन्नत प्रस्तर-शिल्प के उदाहरण हैं। हड़प्पा से प्राप्त पुरूष की एक खंडित नग्न प्रतिमा के धड़ के निचले भाग का उभार देखकर प्रतीत होता कि मानों योगासन के क्रम में सांस लेते हुए पेट को ढीला छोड़ दिया गया हो। उसके सिर, हाथ और पैर टूटे हुए हैं, जिससे उसका संपूर्ण

आकलन नहीं किया जा सकता है। परन्तु मात्र पेट के उभार एक जीवित शरीर की मांसलता का स्वाभाविक अंकन है। सिंधु घाटी के अन्य प्रस्तर-शिल्प में मोहनजोदाड़ो के उत्खनन में प्राप्त सेलखड़ी (एक प्रकार का पत्थर) से निर्मित दाढ़ी वाले एक पुरुष का आवक्ष शिल्प महत्वपूर्ण है। उसकी आंखें अधखुली हैं। उसकी वेष-भूषा के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि वह किसी पुरोहित की प्रतिमा है। मनुष्य की शारीरिक गढ़न हो अथवा उनके वस्त्रों पर अंकित फूल-पत्तियां, सिंधु घाटी से प्राप्त शिल्प उन्हें बनाने वाले शिल्पियों की दक्षता का प्रमाण स्वयं दे देते हैं। सिंधु घाटी के बाद एक लंबे अंतराल तक प्रस्तर-शिल्प का निर्माण नहीं हुआ। अब तक वैदिक काल में निर्मित प्रस्तर-शिल्प प्राप्त नहीं हुए हैं। संभवतः उस काल में शिल्प के निर्माण के लिए लकड़ी जैसी सामग्रियों का प्रयोग किया गया होगा। अस्थायी माध्यम होने के कारण उनके साक्ष्य अब उपलब्ध नहीं हैं। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के पूर्वाद्ध तक शिल्प-कला का समुचित विकास नहीं हो सका। इसके कई कारणों में से एक कारण यह हो सकता है कि वह राजनैतिक उथल-पुथल का काल रहा। उन परिस्थितियों में जब लोग अपने प्राण बचाने तथा आजीविका ढूंढने के लिए भागते फिर रहे हों, कला की साधना का कोई प्रश्न ही नहीं था। सिकन्दर के आक्रमण के बाद मौर्य काल में सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियां अनुकूल होने लगीं। आर्थिक समृद्धि के दौर में शिल्प-कला का एक नया युग सम्राट अशोक के प्रश्रय में आरंभ हुआ। प्रस्तर-शिल्प के निर्माण के लिए सम्राट अशोक का योगदान मात्र मौर्य वंश के इतिहास में ही नहीं, अपितु भारत के समस्त शिल्प के इतिहास में विशेष स्थान रखता है।

सम्राट अशोक ने शिल्पियों को राजसी संरक्षण देकर बड़ी संख्या में प्रस्तर-शिल्प का निर्माण करवाया। उसके काल में भगवान बुद्ध के धम्म के उपदेश और अपनी आज्ञाओं को जन-साधारण तक पहुंचाने के लिए पत्थर के स्तंभों पर राजसी अभिलेख अंकित करवाए गए। उन स्तंभों के अलंकरण के लिए शीर्ष पर पशुओं की आकृतियों वाले शिल्प लगाए गए हैं। मौर्य काल में जहां एक ओर पहली बार स्त्री-पुरुषों की त्रि-आयामी मानवाकार प्रतिमाओं का निर्माण हुआ, वहीं दूसरी ओर राजसी अभिलेख के साथ पशुओं के शिल्प का संयोजन करना एक अनूठा प्रयोग रहा। कोणार्क में रथ-रूपी सूर्य मंदिर को खींचते हुए विशालकाय घोड़ों के शिल्प हों, एलोरा के कैलाश मंदिर का भार अपनी पीठ पर वहन करने के लिए पंक्तिबद्ध खड़े गजराज हों अथवा कर्नाटक के हलेबिड़ु में होयसालेश्वर मंदिर को सहारा देते हुए दो हज़ार से अधिक हाथियों की श्रंखला, कई मंदिरों में पशुओं के शिल्प प्रमुखता से बनवाए गए। इस प्रकार मौर्यों के बाद शिल्प-निर्माण की परंपरा अबाध रूप से कई सदियों तक चलती रही।

कुषाण काल में भगवान बुद्ध की प्रस्तर-प्रतिमाओं के निर्माण से धार्मिक प्रस्तर-शिल्प के माध्यम से एक नया चरण आरंभ हुआ। पहले भगवान बुद्ध कें विविध प्रकार के संकेतों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता रहा। कुषाण काल में निर्मित भगवान बुद्ध की प्रतिमाओं से प्रेरणा लेकर गुप्त शासकों के काल में शिल्प तराशने की कई स्थानीय शैलियां अस्तित्व में आयीं। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से लेकर दसवीं शताब्दी ईस्वी तक प्रस्तर-शिल्प का विकास मुख्यतः राजसी प्रश्रय में हुआ। यद्यपि मंदिरों और स्तूपों पर अंकित अभिलेखों से यह जानकारी मिलती है कि जन-साधारण और धनी श्रद्धालु मंदिरों तथा अन्य धार्मिक स्थानों पर शिल्प बनवाने के लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार दान किया करते थे। परन्तु श्रद्धालुओं से प्राप्त धन-राशि से इतने भव्य और विशाल मंदिरों का निर्माण संभव नही है। प्रस्तर-शिल्प का निर्माण लंबी चलने वाली प्रक्रिया है। उसके लिए धन-राशि की आपूर्ति राजकोष से ही संभव है। अतः निश्चित रूप से मंदिरों, स्तूपों और गुफाओं के निर्माण के लिए शासकों की भागीदारी महत्वपूर्ण रही।

गैर-धार्मिक शिल्प में स्त्री-पुरूष, पशु, पक्षियों, वृक्षों, लताओं तथा प्रकृति के विविध स्वरूपों के अंकन देखे जा सकते हैं। समस्त गैर-धार्मिक शिल्प में सबसे अधिक स्त्रियों के अंकन है। मंदिरों की दीवारों पर अलग-अलग भाव-भंगिमाओं में स्त्रियों की प्रतिमाएं बनायी गयी हैं। पुरूषों के शिल्प में वस्त्रों और केश-विन्यास की विविधताएं देखी जा सकती हैं। स्वतंत्र रूप से निर्मित शिल्प हों अथवा मंदिरों की दीवारों और स्तूपों की सतह पर उकेरी गयी आकृतियां - गैर-धार्मिक शिल्प के विविध आयाम उन्हें गढ़ने वाले शिल्पियों की गाथा स्वयं सुना रहे हैं। मंदिरों की दीवारों के अलंकरण के लिए हज़ारों हाथों ने एक साथ छेनी और हथौड़े उठाए होंगे। इतना ही नहीं, एक से अधिक पीढ़ियों ने इस भगीरथ कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित किया होगा। परन्तु उन प्रतिमाओं में इतनी एकरूपता है कि हज़ारों हाथों और कई पीढ़ियों के अंतर गौण हो गए हैं। उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे उन्हें एक ही सांचे में एक के बाद एक ढाला गया है। हज़ारों शिल्पियों के द्वारा विविध भाव-भंगिमाओं में तराशी गयी असंख्य प्रतिमाओं के गढ़न में इतनी एकरूपता होना आश्चर्यजनक है।

## धातु-शिल्प

भारत में धातु से निर्मित त्रि-आयामी शिल्प के आरंभिक उदाहरण सिंधु घाटी से प्राप्त हुए हैं। धातु से शिल्प बनाने की प्रक्रिया मिट्टी और पत्थर को अपेक्षित आकार में ढालने की अपेक्षा एक जटिल प्रक्रिया है। अलग-अलग धातुओं के गुण भी अलग होते हैं, अतः उन्हें पिघलाने और उन्हें वांछित आकार में ढालने के लिए उनके विशेष गुणों की जानकारी होना अनिवार्य है। इस विषय पर अब तक शोध चल रहे हैं कि उन्होंने इतनी उन्नत कला किस प्रकार सीखा। यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सिंधु वासियों ने शिल्प ढालने की कला का विशेष प्रशिक्षण लिया होगा। मनुष्य आकृति हो अथवा पशुओं का अंकन, सिंधु वासियों के द्वारा निर्मित त्रि-आयामी धातु-शिल्प उत्कृष्ट कला के प्रमाण हैं। धातु शिल्प को ढालने की कला के दूसरे चरण का आरंभ ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में शुंग-कुषाण काल में हुआ। दूसरे चरण के आरंभिक काल में निर्मित प्रतिमाओं की गढ़न अपरिष्कृत है। चौथी-पांचवीं शताब्दियों में गुप्त शासकों के प्रश्रय में नए माध्यम से शिल्प गढ़ने के लिए प्रयोगों और परिमार्जन का सिलसिला चलता रहा। आठवीं-नवीं शताब्दी तक शिल्पियों को अलग-अलग धातुओं के गुणों की पर्याप्त जानकारी हो गयी और उन्होंने उन्हें विशेष आकारों में ढालने की प्रवीणता भी प्राप्त कर लिया। दसवीं शताब्दी में पाल शासकों के प्रश्रय में शिल्पियों ने धातु से विविध मनोहारी भंगिमाओं में देवी-देवताओं के शिल्प बनाए। धातु से शिल्प का निर्माण करना मिट्टी अथवा पत्थर से शिल्प तराशने से अपेक्षाकृत कठिन कार्य है। ऐसे शिल्प बनाने के लिए मात्र शिल्प-शास्त्र का ज्ञान पर्याप्त नहीं है, अपितु अलग-अलग धातुओं के गुणों का ज्ञान और उन्हें किसी विशेष आकार में ढालने की निपुणता अनिवार्य है। शिल्पियों ने तांबे, कांस्य, पंच धातु और अष्ट-धातु के शिल्प बनाकर यह प्रमाणित कर दिया कि उन्होंने अलग-अलग धातुओं के गुणों को मात्र परखा ही नहीं, अपितु अलग-अलग धातुओं के सम्मिश्रण से एक भिन्न धातु बनाने की विद्या में भी पारंगत थे। सबसे बड़ी बात यह है कि इतनी जटिल प्रक्रियाओं के क्रम में उन्होंने प्रतिमाओं में शरीर के विभिन्न अंगों के अनुपात, मुद्रा और भावों को इच्छित आकार में ढाला। स्त्री-पुरुषो के मनोभाव हों अथवा पशुओं के आक्रामक तेवर प्रत्येक अभिव्यक्ति स्वाभाविक रूप से अंकित की गयी है। शिल्पियों को धातु-कर्म की

बारीकियां सीखने में समय अवश्य लगा, परन्तु उस कला में पारंगत होने पर उन्होंने जो निर्माण किए, वे निस्संदेह उत्कृष्ट हैं।

**उपसंहार**

भारत के शिल्प की आत्मा विविध प्रकार की प्रतिमाओं में विद्यमान है और उसके आयाम मिट्टी, पत्थर और धातु जैसे माध्यमों में ढलते गए हैं। शिल्पियों ने जब शिला-खंडों को देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के रूप में तराशा तो उनमें ईश्वरीय आभा झलकने लगी। जब पत्थरों में मानव आकृतियों को ढाला, तो उन्हें कई मनोहारी भंगिमाओं में प्रस्तुत किया। शिल्पियों के हाथों के स्पर्श से मानों पत्थर भी सजीव हो उठे और देवी-देवता से लेकर मनुष्य, पशु-पक्षी, पेड़-पौधों इत्यादि आकारों में ढलते चले गए। कला के ऐसे उत्कृष्ट प्रतिमान मंदिरों, स्तूपों और गुफाओं की दीवारों की सतह पर उभरे हुए शिल्प के रूप में तथा स्वतंत्र रूप से निर्मित त्रि-आयामी प्रतिमाओं के रूप में उत्तर से लेकर दक्षिण तक कोने-कोने में व्याप्त हैं। उनके आयाम का विस्तार मृण-मूर्तियों, प्रस्तर-प्रतिमाओं और धातु शिल्प के रूप में देखा जा सकता है।

भारतीय शिल्प की यदि मात्र एक पंक्ति में व्याख्या करनी हो तो यह कहा जा सकता है कि वह राजसी प्रश्रय में पलने वाली दरबारी कला नहीं, बल्कि जन-मानस की अभिव्यक्ति से उपजी हुई कला है। उस कला में एक ओर यथार्थ और व्यवहारिकता है, तो वहीं दूसरी ओर कपोल-कल्पना का ताना-बाना भी है। उस कला में मिट्टी, पत्थर और धातु जैसे अलग-अलग माध्यमों में देवी-देवताओं से लेकर जन-जीवन तथा चराचर जगत के छोटे-बड़े प्राणियों के अंकन किए गए हैं। शिल्प में की गयी अभिव्यक्ति इतनी सशक्त रही कि शासक वर्ग भी उससे अछूता नहीं रह सका। कई शासकों ने अपना संदेश जन-जन तक पहुंचाने के लिए शिल्प का सहारा लिया। शिल्पियों ने शासकों के आदेश पर शिल्प का निर्माण अवश्य किया, परन्तु उनमें की गयी अभिव्यक्ति उनकी अपनी ही रही। शिल्प-निर्माण के लिए नियमों का निर्धारण उन्होंने स्वयं किया। यही भारत के शिल्प की जीवंतता का मूल है।

♦♦♦

संसार की कोई लिपि यदि सर्वाधिक पूर्ण है तो एकमात्र देवनागरी ही है।

- राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन

# भारत में लोकतंत्र

- संजय कुमार
पी.एस.एस.

"लोकतंत्र" शब्द सरकार की शासन प्रणाली के स्वरूप को संदर्भित करता है, जहां नागरिक अपने मताधिकार का प्रयोग करके सरकार के निर्वाचन की प्रक्रिया में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के अनुसार "लोकतंत्र" जनता की, जनता द्वारा और जनता के लिए सरकार है। "भारत की जनता के लिए लोकतंत्र शासन पद्धति का विशेष महत्व है, जो सैकड़ों वर्षों की गुलामी की जंजीरों से मुक्त होने के लिए लंबे समय तक अनवरत संघर्ष करने के बाद हासिल हुई है। यही नहीं भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, इसके नागरिकों को समान रूप से अपने मताधिकार का इस्तेमाल करने की आजादी है। भारत के लोकतंत्र के चार स्तंभ है. कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका और स्वतंत्र प्रेस या मीडिया। भारत के संविधान में देश के लिए लोकतंत्र शासन प्रणाली की व्यवस्था की गई है। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की सैकड़ों वर्ष की दासता के बाद भारत अंततः 1947 में एक लोकतांत्रिक राष्ट्र बना है। यह उल्लेखनीय है कि स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय लोकतंत्र न्याय, स्वतंत्रता और समानता की भावना से ओतप्रोत है।

**भारतीय लोकतंत्र की विशेषताएं**

संप्रभुता भारतीय लोकतंत्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। संप्रभुता बाहरी हस्तक्षेप के बिना एक शासी निकाय की पूर्ण शक्ति को संदर्भित करती है। इसके अलावा, लोग भारतीय लोकतंत्र में अपने अधिकारों का प्रयोग कर सकते हैं। सबसे उल्लेखनीय, भारत के लोग प्रत्यक्ष रूप से अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं। ये प्रतिनिधि आम लोगों के लिए उतरदायी होते हैं।

भारत में लोकतंत्र राजनीतिक समानता के सिद्धांत पर कार्य करता है। इसके अलावा, इसका अर्थ यह है कि सभी नागरिक कानून के समक्ष समान हैं। यह उल्लेखनीय है कि धर्म, जाति, लिंग, पंथ, नस्ल, संप्रदाय आदि के आधार पर उनसे कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। प्रत्येक भारतीय नागरिक को समान राजनीतिक अधिकार प्राप्त हैं।

बहुमत का शासन भारतीय लोकतंत्र की एक अन्य अनिवार्य विशेषता है। इसके अलावा, जो पार्टी चुनाव में सबसे अधिक सीटें जीतती है वह सरकार बनाती है और शासन व्यवस्था चलाती है। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि बहुमत के समर्थन पर कोई आपत्ति नहीं कर सकता है।

भारतीय लोकतंत्र की एक अन्य विशेषता संघीय शासन व्यवस्था है। संविधान के अनुसार, भारत राज्यों का एक संघ है। संविधान में संध सरकार और राज्य सरकारों के कार्यक्षेत्र का स्पष्ट तौर पर विभाजन किया गया है। भारत के राज्य कुछ हद तक स्वायत्त हैं, राज्यों को कुछ मामलों में स्वतंत्रता प्राप्त है।

सामूहिक उत्तरदायित्व भारतीय लोकतंत्र की एक अन्य उल्लेखनीय विशेषता है। भारत में मंत्रिपरिषद सामूहिक रूप से अपने संबंधित विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है। इसलिए, कोई भी मंत्री अकेले उनकी सरकार के किसी भी कार्य के लिए जिम्मेदार नहीं होता है।

भारतीय लोकतंत्र आम राय के गठन के सिद्धांत पर कार्य करता है। इसके अलावा, सरकार और उसके संस्थानों को जन आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए कार्य करना चाहिए। सरकार को विभिन्न मामलों पर जनमत तैयार करना चाहिए। इसके अलावा, भारत का विधानमंडल जनता की राय व्यक्त करने और उनकी समस्याओं को उठाने के लिए एक उपयुक्त मंच प्रदान करता है।

भारत में लोकतंत्र को कैसे मजबूत किया जा सकता है:

सबसे पहले लोगों को मीडिया को निष्पक्षता से अपना कार्य करना चाहिए. जनता को भी मीडिया पर आखें मूंद कर विश्वास नहीं करना चाहिए। कई बार मीडिया द्वारा रिपोर्ट की गई खबरें वास्तविकता के प्रतिकूल और अतिरंजित और भ्रमिंत करने वाली होती हैं। यह भी संभव है कि कुछ मीडिया हाउस विज्ञापन हासिल करने के लिए किसी विशेष राजनीतिक दल की सरकार का प्रचार का प्रचार का माध्यम बन जातें हैं। इसलिए, मीडिया समाचारों पर विश्वास करते समय लोगों को सावधान और सतर्क रहना चाहिए।

भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करने का एक और महत्वपूर्ण तरीका चुनाव में उपभोक्ता मानसिकता को खारिज करना है। कई भारतीय राष्ट्रीय चुनावों को उपभोक्ताओं द्वारा उत्पाद

खरीदने की तरह देखते हैं। सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि चुनावों में अलगाववादियों के बजाय भारतीयों को प्रतिभागियों की तरह भाग लेना चाहिए।

भारत के लोगों को अपनी आवाज उठानी चाहिए। इसके अलावा, लोगों को अपने चुने हुए प्रतिनिधि के साथ निरंतर संवाद बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए, केवल चुनावों के दौरान ही नहीं। इसलिए, नागरिकों को अपने निर्वाचित अधिकारी के साथ संवाद करने के लिए लिखना, कॉल करना, ई-मेल करना या सामुदायिक मंचों में भाग लेना चाहिए। यह निश्चित रूप से भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करेगा।

भारत में लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए मतदाताओं द्वारा भारी संख्या में मतदान करना वास्तव में एक कारगर तरीका है। लोगों को झिझक को त्याग करके मतदान में भागीदारी करके अपने दायित्व का निर्वहन करना चाहिए। भारी संख्या में मतदान भारतीय राजनीति में आम लोगों की पर्याप्त भागीदारी को भी दर्शाता है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि भारत में लोकतंत्र बहुत महत्वपूर्ण है और अनेकों बलिदानों के फलस्वरूप प्राप्त आजादी को अक्षुण बनाए रखने के लिए आवश्यक भी है। यही नहीं, यह भारत के नागरिकों के लिए देशभक्त स्वतंत्रता सैनानियों और तत्कालीन राष्ट्रीय नेताओं की ओर से एक उपहार है। हमारे देश के नागरिकों को लोकतंत्र के महान मूल्यों को समझना चाहिए और इनकों अक्षुण बनाए करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। अत: यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि भारत का लोकतंत्र निश्चित रूप से दुनिया में अद्वितीय होने के साथ-साथ विश्व के अन्य देशों के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है।

♦♦♦

# आजादी का अमृत महोत्सव

-नवीन चन्द्र,
पी.एस.एस.

किसी देश का भविष्य तभी उज्ज्वल होता है जब वह अपने पिछले अनुभवों और विरासत के गौरव के साथ हर पल जुड़ा रहता है। यह सर्वविदित है कि भारत के पास एक समृद्ध ऐतिहासिक चेतना और सांस्कृतिक विरासत का एक अथाह भंडार है, जिस पर हमें गर्व होना चाहिए।

इस ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चेतना को देखने के लिए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने अहमदाबाद, गुजरात में साबरमती आश्रम से एक पदयात्रा (स्वतंत्रता मार्च) को हरी झंडी दिखाकर स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के लिए समर्पित 'आजादी के अमृत महोत्सव' कार्यक्रम का उद्घाटन किया। आज़ादी का अमृत महोत्सव 15 अगस्त 2022 से 75 सप्ताह पहले प्रारंभ हुआ और 15 अगस्त 2023 को संपन्न होगा।

आजादी के अमृत महोत्सव का अर्थ है स्वतंत्रता सेनानियों से प्रेरणा का अमृत। स्वतंत्रता का अमृत यानि नए विचारों का अमृत, नए संकल्पों का अमृत, स्वतंत्रता का अमृत है यह पर्व यानि- आत्मनिर्भरता का अमृत।

1857 का स्वतंत्रता संग्राम, महात्मा गांधी की विदेश से वापसी, देश को फिर से 'सत्याग्रह' की शक्ति का स्मरण कराते हुए, लोकमान्य तिलक का 'पूर्ण स्वराज' का आह्वान, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज का 'दिल्ली मार्च'। दिल्ली चलो का नारा भला कौन भारतीय भूल सकता है।

इतिहास के इस गौरव को संजोकर रखने के लिए हर राज्य, हर क्षेत्र इस दिशा में प्रयास कर रहा है। दांडी यात्रा स्थल के जीर्णोद्धार का काम देश ने दो साल पहले ही पूरा कर लिया है। अंडमान में जहां नेताजी सुभाष ने देश की पहली स्वतंत्र सरकार बनाकर तिरंगा फहराया था, वहीं देश ने उस भूले-बिसरे इतिहास को भी भव्य रूप प्रदान किया है।

अंडमान और निकोबार के द्वीपों का नामकरण स्वतंत्रता संग्राम के नाम किया गया है। चाहे जलियांवाला बाग में हो या पाइका आंदोलन की स्मृति में, सभी स्मारकों पर कार्य पूरा हो गया है। दशकों से भुला दिए गए बाबासाहेब से जुड़े स्थानों में देश ने पंचतीर्थ का विकास किया है।

लोकमान्य तिलक के 'पूर्ण स्वराज', 'आजाद हिंद फौज के 'दिल्ली चलो', भारत छोड़ो आंदोलन के आह्वान को भारत का कोई भी नागरिक कभी नहीं भूल सकता। हम मंगल पांडे, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, पंडित नेहरू, सरदार पटेल, डॉ. भीमराव अंबेडकर से प्रेरणा लेते हैं।

भारत को आजाद कराने के लिए देश के कोने-कोने से पुरुष, महिलाएं और युवा आगे आए थे जिन्होंने आजादी के लिए असंख्य यातनाओं को सहन किया था। स्वतंत्रता आंदोलन की इस ज्योति को पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण हर दिशा में, हर क्षेत्र में निरंतर जगाने का कार्य हमारे संत-महंतों, आचार्यों ने भी किया। भक्ति आंदोलन ने भी राष्ट्रव्यापी स्वतंत्रता आंदोलन का एक मजबूत आधार तैयार किया था।

नमक उस समय भारत की आत्मनिर्भरता का प्रतीक था, जब गांधी जी ने दांडी की यात्रा की और नमक कानून तोड़ा। भारत के मूल्यों के साथ-साथ अंग्रेजों ने भी इस आत्मनिर्भरता पर प्रहार किया था। भारत के लोगों को इंग्लैंड से आने वाले नमक पर निर्भर रहना पड़ा। गांधी जी ने देश के इस पुराने दर्द को समझा, जनता से जुड़ी उस नब्ज को पकड़ा। इस आंदोलन को हर भारतीय का आंदोलन बनते देख यह हर भारतीय का संकल्प बन गया। यहां नमक का मतलब वफादारी है। आज भी हम कहते हैं कि हमने देश का नमक खाया है। इसलिए नहीं कि नमक बहुत कीमती चीज है। ऐसा इसलिए है क्योंकि नमक हमारे लिए श्रम और समानता का प्रतीक है।

जब हम ब्रिटिश शासन के उस युग के बारे में सोचते हैं जब लाखों लोग स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे, तो यह स्वतंत्रता के 75 वर्ष के उत्सव को और भी महत्वपूर्ण बना देता है। आज़ादी का अमृत महोत्सव आज़ादी की लड़ाई के साथ-साथ आज़ाद भारत के सपनों और कर्तव्यों को देश के सामने रख कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

यह हमारा सौभाग्य है कि हम स्वतंत्र भारत के इस ऐतिहासिक काल को देख रहे हैं जिसमें भारत प्रगति की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। आज के भारत का नाम दुनिया में डंका बज रहा है। इस

पावन अवसर पर, हम बापू के चरणों में अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और देश का नेतृत्व करने वाले सभी महान व्यक्तियों के चरणों में नमन करते हैं, जिन्होंने देश के आज़ादी के संग्राम में अपना बलिदान दिया है।

यह अवसर उन लोगों का आभार व्यक्त करने का एक प्रयास है। जिसके कारण हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं। यह स्मरण रखने का अवसर है आज़ादी को हासिल करने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन अमर शहीदों को, जिन्होने मातृभूमि को विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए हंसते हंसते अपना सर्वोच्च बलिदान दे दिया। अत: हमें आजादी को हल्के में नहीं लेना चाहिए, बल्कि एक जिम्मेदार नागरिक का कर्तव्य निभाते हुए देश की प्रगति में अपना सक्रिय योगदान देना चाहिए।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त, 2022 को 76 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए देशवासियों से पांच संकल्पों पर अपनी ऊर्जा केंद्रित करने का आग्रह किया है- भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलने के लिए, बंधनों के हर निशान को दूर करने के लिए, अपनी विरासत, एकता और अखंडता पर गर्व करने और स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को साकार करने हेतु अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए। प्रधानमंत्री जी ने कहा कि 76वां स्वतंत्रता दिवस 'अमृत काल' की पहली सुबह है, जो स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ से 2047 तक इसके शताब्दी वर्ष तक का शुभ समय है। उन्होंने कहा, "स्वतंत्रता के 100वें वर्ष तक हमें अपने स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को पूरा करने के विजन के साथ काम करना होगा।" उन्होंने सचेत किया कि हमारे देश के सपने फीके पड़ जाएंगे यदि लोग आत्म-प्रशंसा करते हैं और 75 वर्षों में उपलब्धियों के लिए खुद की पीठ थपथपाते रहेंगे। उन्होंने कहा, "अगले 25 वर्षों के लिए, हमें पांच संकल्पों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है - भारत का विकास करना, अपने मन से बंधन के हर निशान को हटाना, अपनी गौरवशाली विरासत, एकता पर गर्व करना और अपने कर्तव्यों को पूरा करना"। उन्होंने देश के युवाओं से देश के विकास के लिए अगले 25 वर्ष समर्पित करने का आग्रह करते हुए कहा, "राष्ट्र को अब केवल बड़े लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए और वह बड़ा लक्ष्य विकसित भारत है इससे कुछ भी कम नहीं।"

♦♦♦

# प्रेम की शक्ति को पहचाने

- अनिल कुमार,
सचिव

सैंकड़ो फिल्मो और गीतों में इसके गुण गाए गए हैं, अनगिनत किताबों और कविताओं में इसका जिक्र हुआ है। सभी धर्मो ने इसे अपनाया हैं : पूरी दुनिया को अपनी समस्याओं के हल के लिए जिस एक चीज की जरुरत हैं, **वह है प्रेम**! फिर भी, साल के ज्यादातर दिनों में इसका सन्देश हमारे दिमाग के किसी कोने में दबा पड़ा रहता हैं। कई बार तो हम प्यार की ताकत को तब तक भूले रहते हैं, जब तक कि इसकी याद दिलाने वाला कोई दिवस नहीं आता।

आखिर हम इसे क्यों भुला बैठे हैं? जबकि हम सबने इसे महसूस किया होता हैं। दादा - दादी, नाना - नानी, माता - पिता, बच्चों, पालतू जीवों या किसी न किसी व्यक्ति विशेष से हम प्यार करते ही हैं। हम जानते हैं कि प्रेम वास्तविक चीज है, हालाँकि यह मायावी भी है, पर हम इस भावना को खो देते हैं। दरअसल, हमारा जीवन तरह तरह की आपाधापी से घिरा हुआ है और यह ऐसे - ऐसे लोगो के साथ उलझा हुआ है, जो हमारे हितों का जरा सा भी ध्यान नहीं रखते। हम इस दुनिया में बस अपना बचाव करने में लगे रहते हैं, इसलिए पलटकर हमला बोलते हैं, प्रतिस्पर्धा करने लगते हैं।

कभी कभी हम प्रतिस्पर्धा से घृणा में फिसल जाते हैं। खासकर आज कि दुनिया जिस तरह से ध्रुवीकरण की शिकार हैं, उसमें इस फिसलन कि गुंजाइश ज्यादा है। हम उन लोगो से नफरत करने लगते हैं, जो हमसे इत्तेफ़ाक़ नहीं रखते या जो हमारे राजनीतिक विचारों पर हमला करते हैं। हम उनसे इसलिए नफरत करने लगते हैं, क्योंकि हमें लगता हैं कि हमारी धारणाओं और हमारे जीवन के तरीके को खतरा है। हम सोचते हैं कि घृणा और क्रोध के सहारे हम नकारात्मकता को पीछे धकेल सकते हैं, उसकी आग बुझा सकते हैं और अपने किले में अधिक सुरक्षित महसूस कर सकते हैं। लेकिन जिस भी चीज से हम नफरत करते हैं, वह हमेशा मजबूत होती है, क्योंकि जब हम नफरत महसूस करते हैं, तब घृणा करने के प्रयास बढते जाते हैं और इस तरह नफरत दोहरी होती जाती है। इस सब में प्रेम कि ताकत भूला दी जाती हैं, यहां तक कि वे लोग भी इसे भुला बैठते हैं, जो प्रेम कि शक्ति से वाकिफ होते हैं।

याद रखें, सिर्फ प्रेम ही सच और सभ्यता की रक्षा कर सकता है। इसलिए प्रार्थना कीजिए कि प्यार को कभी भुलाया न जा सके, क्योंकि इसके बिना चारों तरफ घृणा का साम्राज्य कायम हो

जाएग। प्रेम को जाने वाले लोग इसे इतना फैलाएं कि यह मानव संघर्ष का सबसे खूबसूरत पहलू बना रह सके। हमें अन्धकार से नफरत नहीं करनी है, बल्कि उसकी जगह प्रकाश फैलाना है। हमें एक-दूसरे से सीखना है, एक-दूसरे से उम्मीद की साझेदारी करनी है।

♦♦♦

## अभिलाषा

- ख्याति बलियान
प्रोजेक्ट एसोसिएट

तितलियों से पर निकलने लगे हैं, मेरी उम्मीदों के,
देख पाता हूँ मैं अब, इस क्षितिज के पार भी।
रंगों से भरे जो यह मेरे पंख हैं,
जिंदगी के खट्टे-मीठे रंगों से हैं इनको रंगा।

पंख कितने ही हों छोटे,
इससे नहीं अब कोई वास्ता।
उड़ने का हुनर है मुझमें,
मंजिल मिलेगी, यह मुझे उम्मीद है।

उम्मीदों ने भरा है मुझमें,
कुछ कर गुजरने का हौसला।
राह कोई भी हो,
कर ही लूँगा एक दिन फतह।

तितलियों से पर निकलने लगे हैं, मेरी उम्मीदों के
देख पाता हूँ मैं अब, इस क्षितिज के पार भी।

♦♦♦

## इंसानियत

- स्व. श्री सतीश नाथ पाठक
(ससुर सुश्री रेखा सारस्तव,
संयुक्त निदेशक)

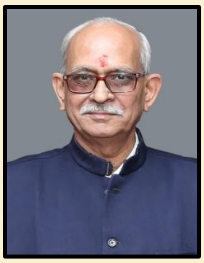

धरती को कब्रिस्तान मत बनाइये हुजूर,
इंसान को इंसानियत फैलाइए हुजूर,
धर्म को बदनाम क्यों करते हो आज तुम,
अपने घर में आग मत लगाइये हुजूर,
हो सके तो राम कृष्ण नानक का नाम लो,
ईसा मसीह को और मत लटकाइए हुजूर,
गौतम, कबीर, गांधी, मीरा का देश है,
हिंसा को और मत अब फैलाइये हुजूर,
आयत कुरान की हो या राम के भजन,
जिसको भी मन करे गुनगुनाइए हुजूर।

♦♦♦

## अनमोल वचन

- नीरू शर्मा
प्रशासनिक अधिकारी

उदार बनों पर इस्तेमाल मत होने दो,
प्यार करो पर खुद को ठेस न लगने दो,
विश्वास करो पर भोले मत बनो,
दूसरों की सुनो लेकिन अपनी आवाज मत खोने दो।।

सबसे उत्तम कार्य क्या होता है
किसी इंसान के दिल को खुश करना,
किसी भूखे को खाना देना,
जरूरतमंद की मदद करना,
किसी दुखियारें का दुख हल्का करना और
किसी घायल की सेवा करना.....

♦♦♦

# पहली घड़ी

- राजेन्द्र सिंह
परियोजना अधिकारी

पहली - पहली बार बनाने वाले को भी भय हुआ होगा,
सोचो पहली घड़ी बनाते वक़्त क्या समय हुआ होगा।

घड़ी तो हुई सर-ए-बाज़ार पर राज दफ़न हो गया,
घड़ी और बनाने वाले के बीच क्या तय हुआ होगा।

हिल जाती है धरती एक छोटा सा जोखिम उठाने में,
घड़ी बनाते वक़्त तो एक अनोखा प्रलय हुआ होगा।

डर जाते अगर दोनों तो फिर बनती ही कैसे बात,
घड़ी और बनाने वाले में एक बड़ा निर्भय हुआ होगा।

लाशें बिछ जाती हैं छोटे छोटे रिवाज बदलने में ही,
किस हालात में सोचो इतना बड़ा निर्णय हुआ होगा।

होता नहीं असर इंशान पर अदालती फरमानों का,
फैसला फिर घड़ी बनाने का कैसे अक्षय हुआ होगा।

वक़्त से पहले खिसक जाते हैं लोग युग में आज के,
पहले घड़ी के कचहरी कैसा कार्यालय हुआ होगा।

होता होगा कैसे वक़्त तय बागों में मिलने का पहले
बेशक इश्क घड़ी से पहले का रहस्यमय हुआ होगा।

♦♦♦

# नारी

- रियर एडमिरल के. एस. नूर
(पति डॉ. आरती नूर,
वरिष्ठ निदेशक)

शब्दों में नहीं परिभाषा,
नारी तुम सबकी आशा।
ममता का सम्मान हो तुम,
संस्कारों की जान हो तुम,
स्नेह, प्यार और आत्म त्याग की,
एकलौती पहचान हो तुम।
कभी सुबह की मलय बयार,
कभी शक्ति की तुम अवतार,
तुम से खुशियों का संसार,
और प्रेम अनुपम उपहार।
बीत गया वो अन्धकार अब,
तुम इतिहास से मत डरना।
सुन्दर सी इस दुनिया में बस,
सर ऊँचा करके बढ़ना।
तुम मंदिर की दुर्गा काली,
बाहर अबला मत बनना।
रीति समझ इस दुनिया की
ज़ंजीरों में मत बंधना।
साथ न दे चाहे ये दुनिया,
होने न देना शोषण।
इस युग में गर कृष्ण न आएं,
मार भगाना दुःशासन।
शब्दों में नहीं परिभाषा।
नारी तुम सबकी आशा।

♦♦♦

# मोबाइल युग और आज के युवा

- नीरू शर्मा
प्रशासनिक अधिकारी

सुबह हो गई, उठ गए लाल,
मोबाइल हाथ में, लेकर पड़ गए बेहाल,
चलों देखें अब, स्नैप चैट, व्हाट्सअप पहले,
गुड मार्निंग, स्ट्रीक से खाना खोलें,
ज्ञान जोक्स देखें, फिर फोटों, लेख भेजें,
कुछ सेव करे, कुछ फार्वड करते जाएं।

दूसरी है इंस्टाग्राम फेस बुक की बारी,
जहां दिखेगी दुनिया सारी,
किसने किसकी रीक्स है डाली,
कौन आज दुनिया में आया,
किसने किसके केक खिलाया,
ट्विटर की है, बात निराली,
चार शब्दों में गाया - गाली।

कॉपी - किताबें हो गई धूमंतर सारी,
न नहाना धोना, न ही पूजा की थाली,
सुबह हो गई, उठ गए सब,
मोबाइल हाथ में, लेकर पड़ गए बेहाल।

♦♦♦

# राजेंद्र के दोहे

- राजेन्द्र सिंह
परियोजना अधिकारी

जीवन के हर मोड़ पर, देख के मेरी हार,
अगले ही दिन आ गए, बंदे यम के चार।

एक हाथ में ढाल था, एक में थी तलवार,
जैसे हो वैसे रहो, हिलना नहीं सरकार।

थमा के मेरे हाथ में, यम का एक पैगाम,
बैठ के छाया पेड़ की, लगे खीचने जाम।

हाथ पाँव धो लीजिये, सुन लो मेरी बात,
यम का ये आदेश है, चलो हमारे सांथ।

पास में यम के हें नहीं, घोड़ा कोई कार,
दूजे वाले भैंसे में, हो कर चलो सवार।

बीबी बच्चों से अभी, कर लो पूरी बात,
मतलब का संसार है, चले ना कोई साथ।

जैसा यम ने था लिखा, वैसा दिखता हाल,
अपने पराये हो गए, जैसे पहुंचा काल।

पत्नी बोली क्या हुआ, नया नहीं पैगाम,
जो भी पैदा हो गया, मरना उसका काम।

बेटा माँ को देख के, थोड़ा हुआ उदास,
पर बीबी के वास्ते, बात नहीं थी ख़ास।

बेटी को ससुराल में, भेज दिया संदेश,
बीबी ने मुस्कान से, रखा विधवा भेष।

♦♦♦

# नए दौर का संस्कार

- अनिल कुमार
सचिव

तेरी बुराइयों को हर अखबार कहता है,
और तू मेरे गाँव को गंवार कहता है,
ऐ शहर मुझे तेरी औकात पता है,
तू चुल्लू भर पानी को भी वाटर पार्क कहता है।

थक गया हैं हर शख्स काम करते-करते,
तू इसे अमीरी का बाजार कहता है,
गाँव चलो वक़्त ही वक़्त है सबके पास,
तेरी सारी फुर्सत तेरा इतवार कहता है।

मौन होकर फोन पर रिश्ते निभाए जा रहे हैं,
तू इस मशीनी दौर को परिवार कहता है,
जिनकी सेवा में खपा देते थे जीवन सारा,
तू उन माँ बाप को अब भार कहता है।

वो मिलने आते थे तो कलेजा साथ लाते थे
तू दस्तूर निभाने को रिश्तेदार कहता है,
बड़े बड़े मसले हल करती थी पंचायते,
तू अंधी भ्रष्ट दलीलों को दरबार कहता है।

बैठ जाते थे अपने पराये सब बैलगाड़ी मे,
पूरा परिवार भी न बैठ पाए उसे तू कार कहता है,
अब बच्चे भी बड़ों का अदब भूल बैठे हैं,
तू इसे नए दौर का संस्कार कहता है।

♦♦♦

# जिंदगी का सफर

- सुदेश शर्मा
(धर्मपत्नी श्री ओम प्रकाश शर्मा,
हिन्दी परामर्शकार)

जब तक चलेंगी जिंदगी की सांसे,
कंहीं प्यार तो कहीं टकराव मिलेगा।
कहीं बनेगे संबंध अंतर्मन से तो,
कहीं आत्मीयता का अभाव मिलेगा.
कहीं मिलेगी जिंदगी में प्रंशसा तो,
कहीं नाराजगियों का बहाव मिलेगा।
कहीं मिलेगी सच्चे मन से दुआ तो,
कहीं भावनाओं में दुर्भाव मिलेगा।
कहीं बनेंगे पराये रिश्ते भी अपने तो,
कहीं अपनों से ही खिंचाव मिलेगा।
कहीं होंगी खुशामदे चेहरे पर तो,
कहीं पीठ पे बुराई का घाव मिलेगा।
तू चला चल राही अपने कर्मपथ पे,
जैसा तेरा भाव वैसा प्रभाव मिलेगा।
रख सद्भाव में शुद्धता का स्पर्श तू,
अवश्य जिंदगी का पड़ाव मिलेगा।

♦♦♦

# नारी का ममत्व (भाव रस)

-देव कुमार मिश्रा
वरिष्ठ सहायक

तपती जमीं पे एक मां खुद नग्न पांच चलती रही।
न ठंड का डर न गर्मी की बेचैनी, मौसम बदलता रहा।।
कटे हाथों से निंबू निचोड़ कर ममता उड़ेलती रही।
कुछ इस तरह परवरिश कर लहू पिलाती रही।।
पंख हुए जब, एक रोज परिंदा उड़ गया।
दौलत के आडम्बर के आगे, सब कुछ छोड़ गया।।
यमदूत के आगे विनती करती रही मां बार-बार।
मरकर भी खुली आंखों से ताकती दीवार।।
तड़पकर पिता ने अपने परिंदों को फोन लगाया।
मां की आखिरी आस है, बच्चा अभी तक नहीं आया।।
छोटा बेटा जब आया तो पिता ने पूछा एक सवाल।
तू अकेला ही यहां आया, और बड़े बेटे का है क्या हाल।।
छोटा बोला, पिताजी भाई ने कहा तू जा, अगली बार मैं आऊंगा।
मां को अग्नि तुम देना, पिता की अग्नि पर मैं जाऊंगा।।
सुनकर पिता स्तब्ध होकर घर में खूद को कैद कर लिया।
असीम दुख से लिखकर कागजात, प्राण त्याग गया।।
लिखा उसमें, दौलत गरीबों और असहाय लोगों में बांट देना।
उड़ते परिंदों का भरोसा नहीं, पंख उन्हें छांट देना।
हमारी परवरिश में भला क्या कमी रह गई।
पिता तो आज मरा, मां तो पहले ही मर गई।

♦♦♦

# मेरे सपनों का संसार

- सुदेश शर्मा
(धर्मपत्नी श्री ओम प्रकाश शर्मा,
हिन्दी परामर्शकार)

जहां हो बस केवल प्यार ही प्यार
ना हो झगड़ा, ना हो किसी पर कोई प्रहार
सुख समृद्धि हो जिसका आधार
ऐसा हो मेरे सपनों का संसार।
बड़ों का हो, जहाँ सदा सत्कार
नारी का कभी ना हो तिरस्कार
सभी जगह हो केवल सदाचार।
ऐसा हो मेरे सपनों का संसार
हर इंसान हो जहां ईमानदार
हर बच्चा हो ज्ञान–वान
केवल सत्य की राह पर ही हो व्यापार
कही ना हो कोई भ्रष्टाचार
ऐसा हो मेरे सपनों का संसार।
यदि बनाए रखनी हो देश की प्रतिष्ठा
तो संकल्प करें, रखें सच्ची निष्ठा
चारों ओर हो सफलता की आशा
कहीं ना हो असफलता की निराशा।
ऐसा हो मेरे सपनों का संसार
जहां सब हो खुश और सुखी
कोई ना हो गरीब और दुखी
सबके सपने हो साकार
ऐसा हो मेरे सपनों का संसार
जहाँ केवल हो प्यार ही प्यार।

♦♦♦

# कोविड-19

- शिवम मिश्रा
परियोजना अभियंता

WHO ने जिसको, महामारी का है नाम दिया,
कोविड-19 बनकर उसने, दुनिया को है हिला दिया।
एक व्यक्ति से दूजे में यह, फैल रहा अति तेजी से,
सर्दी, जुकाम और सांस समस्या, फैला देता रोगी में।।

सर्दी, जुकाम और निमोनिया के, लक्षण इसमें दिखते हैं,
हुआ वायरस का अटैक तो, नाक हमेशा बहता है ।
गला खरास, सांस भी अटके, आ जाता है बुखार कभी,
नाक बहे और जुकाम भी होवे, जब हो कोई असावधान तभी।।

सबसे पहले चीन देश में, फिर फैला यह इटली में,
अमरीका, इंग्लैण्ड, फ्रांस क्या, धरती के कण-कण में।
भारत रूस समेत सभी, देशों ने वैक्सीन बना लिया,
औ झटपट अपने अपने, नागरिकों को लगवा भी दिया।।

जिसने इसमें देरी की, वह आफत लेता मोल रहा,
अपने इम्यून सिस्टम को, कमजोर बनाता चला गया।
कोविशील्ड और कोवैक्सीन हैं इसके अचूक टीके,
तेल मसाले छोड़ हम सभी, ठीक हुए काढ़े पीके।।

मास्क लगाकर आए जाएँ, हाथ सदा धोते जाएँ,
सेनेटाइजर ज़ेब मे रखें, काढा नियमित अपनाएं।
स्वच्छ रहें फल साग भी खाएं, 2 मीटर की दूरी रखें,
कभी कोरोना ना आएगा, इसका पालन यदि कर लें।।

♦♦♦

**श्रद्धांजलि**

# लता मंगेशकर

- सुनीता अरोड़ा
सह निदेशक

स्वर कोकिला के नाम से विख्यात लता मंगेशकर का जन्म 28 सितंबर, 1929 को मध्य प्रदेश के इंदौर शहर में पंडित दीनानाथ मंगेशकर के मध्यवर्गीय परिवार में सबसे बड़ी बेटी के रूप में हुआ। पिता दीनानाथ मंगेशकर शास्त्रीय गायक थे। इनके परिवार से भाई हृदयनाथ मंगेशकर और बहनों उषा मंगेशकर, मीना मंगेशकर और आशा भोंसले सभी ने संगीत को ही अपनी आजीविका के लिये चुना। आप भारत की सबसे लोकप्रिय गायिका थीं, जिनका छः दशकों का कार्यकाल उपलब्धियों से भरा पड़ा है। हालाँकि लता जी ने लगभग तीस से ज्यादा भाषाओं में फ़िल्मी और गैर-फ़िल्मी गाने गाये हैं लेकिन उनकी पहचान भारतीय सिनेमा में एक पार्श्वगायिका के रूप में रही है। अपनी बहन आशा भोंसले के साथ लता जी का फ़िल्मी गायन में सबसे बड़ा योगदान रहा है।

लता की जादुई आवाज़ के भारतीय उपमहाद्वीप के साथ-साथ पूरी दुनिया में दीवाने हैं। टाईम पत्रिका ने उन्हें भारतीय संगीत की एकछत्र साम्राज्ञी स्वीकार किया है। लता जी को स्वर-साम्राज्ञी, राष्ट्र की आवाज, भारत कोकिला, स्वर कोकिला के नाम से भी जाना जाता है। उन्होने अपना पहला गाना मराठी फिल्म 'कीर्ती हसाल' (कितना हंसोगे?) सन 1942 में गाया था। लता मंगेशकर को सबसे बड़ा ब्रेक फिल्म “महल” से मिला। उनका गाया "आयेगा आने वाला" सुपर डुपर हिट था। लता मंगेशकर अब तक 20 से अधिक भाषाओं में 30000 से अधिक गाने गाए हैं। लता मंगेशकर ने 1980 के बाद से फ़िल्मों में गाना कम कर दिया और स्टेज शो पर अधिक ध्यान देने लगी। लता ही एकमात्र ऐसी जीवित व्यक्ति थीं जिनके नाम से पुरस्कार दिए जाते हैं। लता मंगेशकर ने आनंद घन बैनर तले फ़िल्मो का निर्माण करने के अलावा उनमें संगीत भी दिया है।

वे हमेशा अपने पैर से चप्पल उतार कर ही (नंगे पाँव) स्टूडियो, स्टेज आदि पर गाना रिकार्डिंग करती अथवा गाती थीं।

संगीत के क्षेत्र में अद्‌वितीय योगदान के लिए इन्हें अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है। जिनमें फिल्म फेयर पुरस्कार, पद्‌म भूषण, दादा साहब फाल्के पुरस्कार, फिल्म फेयर का लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार, स्क्रीन का लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार, राजीव गांधी पुरस्कार, एन.टी.आर. पुरस्कार, नूरजहाँ पुरस्कार, महाराष्ट्र भूषण और भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

कोविड-19 से जुड़ी जटिलताओं के कारण 6 फरवरी 2022 को मुंबई के ब्रीच कैंडी हॉस्पिटल में उन्होंने अंतिम सांस ली। वे कुछ समय से बीमार थीं। स्वर-साम्राज्ञी व भारत कोकिला को नम आंखों से हमारी भाव-भीनी श्रद्‌धांजलि!

♦♦♦

हमें तो हिन्दी भाषा को इस योग्य बना देना है कि वह साधारण से साधारण मजदूर से लेकर अत्यंत विकसित मस्तिष्क के बुद्धिजीवी के दिमाग में समान भाव से विहार सकें।

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

**श्रद्धांजली**

# शिंजो आबे

(21 सितम्बर, 1954 – 08 जुलाई, 2022)

– ओम प्रकाश शर्मा
हिन्दी परामर्शकार

शिंजो आबे एक जापानी राजनेता थे, जिन्होंने 2006 से 2007 से और फिर 2012 से 2020 तक जापान के प्रधान मंत्री और लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एल.डी.पी.) के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वह जापान के इतिहास में सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले प्रधान मंत्री थे। श्री आबे ने 2005 से 2006 तक जुनिचिरो कोइज़ुमी के तहत मुख्य कैबिनेट सचिव के रूप में भी कार्य किया और वर्ष 2012 में कुछ समय के लिए विपक्ष के नेता भी रहे।

आबे का जन्म 21 सितम्बर,1954 को टोक्यो में एक प्रमुख राजनीतिक परिवार में हुआ था और वह प्रधान मंत्री नोबुसुके किशी के पोते थे। सेइकी विश्वविद्यालय से स्नातक होने और कुछ समय तक दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के बाद, अबे 1993 के चुनाव में प्रतिनिधि सभा के लिए चुने गए। अगले वर्ष प्रधान मंत्री और एल.डी.पी. अध्यक्ष के रूप में कार्यग्रहण करने से पूर्व आबे को वर्ष 2005 में प्रधान मंत्री कोइज़ुमी द्वारा मुख्य कैबिनेट सचिव नियुक्त किया गया था। नेशनल डाइट के अनुसार, अबे युद्ध के पश्चात जापान के सबसे कम उम्र के प्रधान मंत्री और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पैदा हुए पहले प्रधानमंत्री बने। आबे ने अल्सरेटिव कोलाइटिस और उनकी पार्टी की पराजय के कारण एक साल बाद प्रधान मंत्री के पद से त्याग पत्र दे दिया। स्वस्थ होने के बाद, अबे ने 2012 में एलडीपी अध्यक्ष बनने के लिए पूर्व रक्षा मंत्री शिगेरू इशिबा को हराकर उन्होंने एक अप्रत्याशित राजनीतिक वापसी की। उन्होंने 2014 और 2017 के चुनावों में एलडीपी का नेतृत्व किया और जापान के सबसे लंबे समय तक प्रधान मंत्री चुने जाने का कीर्तिमान स्थापित किया। सन 2020 में, आबे ने अपने कोलाइटिस के रिप्लेसमेंट का हवाला देते हुए प्रधान मंत्री पद से त्याग पत्र दे दिया।

आबे को राजनीतिक टिप्पणीकारों ने एक दक्षिणपंथी जापानी राष्ट्रवादी के रूप में वर्णित किया था। वह निप्पॉन कैगी के सहयोगी रहे। उन्होंने जापानी इतिहास पर नकारात्मक विचार रखे, जिसमें द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कम्फर्ट वोमेन की भर्ती में सरकारी दबाव की भूमिका को नकारना शामिल था। यह एक ऐसी स्थिति थी जो विशेष रूप से दक्षिण कोरिया के साथ तनाव का कारण बनी। आबे को जापान की सैन्य नीतियों के संबंध में भी कट्टर माना जाता था। आबे ने जापान के प्रधान मंत्री के रूप में अपने दो शब्दों में, सामरिक जापान-भारत संबंधों को सुदृढ़ करने की मांग की। आबे ने 2007 में जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता प्रारम्भ की। जिसका उद्देश्य चीन के एक महाशक्ति के रूप में उदय का विरोध करना था। अगस्त, 2007 में भारत की तीन दिवसीय यात्रा के दौरान भारत और जापान के बीच मैत्रीपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों के लंबे इतिहास पर एक नए द्विपक्षीय एशियाई गठबंधन की स्थापना की। उन्होंने जापानी संविधान के अनुच्छेद 9 को संशोधित करके जापान सेल्फ-डिफेंस फोर्सेज (ϑΣΔΦ) में सुधार की वकालत की, जिसमें युद्ध की घोषणाओं को गैरकानूनी घोषित किया गया था। आर्थिक क्षेत्र में, आबे ने मिश्रित परिणामों के साथ "एबेनॉमिक्स" के साथ जापान की आर्थिक मंदी का मुकाबला करने का प्रयास किया। आबे को ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप के लिए व्यापक और प्रगतिशील समझौते के साथ ट्रांस-पैसिफिक पार्टनरशिप को बहाल करने का भी श्रेय दिया गया।

आबे की व्यावहारिक भारत की विदेश नीति, एशिया में महत्वपूर्ण भागीदार बनने के समय जापान के पुनरुत्थान वाले आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना रही है। भारत, सबसे सुदूर-पूर्वी और आसियान देशों के विपरीत, जापान के साथ गंभीर सैन्य विवाद का इतिहास नहीं है।

8 जुलाई 2022 को, जापान मैरीटाइम सेल्फ-डिफेंस फोर्स के एक पूर्व सदस्य ने ऊपरी सदन चुनाव से दो दिन पहले नारा (Nara) नामक स्थान पर एक चुनाव अभियान में भाषण देते हुए आबे की गोली मारकर हत्या कर दी। जापानी राजनीति में ध्रुवीकरण करने वाले व्यक्ति के समर्थक उन्हें एक देशभक्त के रूप में याद करते हैं।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के साथ खास मैत्री एवं तालमेल रखने वाले शिंजो आबे ने भारत-जापान संबंधों को मजबूती प्रदान करने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भारत के इस सच्चे मित्र एवं हितैषी को अश्रुपूर्ण आँखों से हमारी भाववीनी श्रद्धांजलि !!

♦♦♦

# सी-डैक, नोएडा में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन: रिपोर्ट- 2021

- नवीन चन्द्र,
पी.एस.एस.

प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक), भारत सरकार के इलेक्टॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत एक वैज्ञानिक संस्था है। सी-डैक आज देश में सूचना, संचार प्रौद्योगिकियों एवं इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रमुख अनुसंधान एवं विकास संगठन के रूप में उभरा है, जो वैश्विक विकास के संदर्भ में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकीय क्षमताओं को सशक्त बनाने पर कार्य कर रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर नए कीर्तिमान स्थापित करने के साथ-साथ सी-डैक, नोएडा संघ सरकार की राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित आदेशों का निष्ठापूर्वक अनुपालन सुनिश्चित किया गया है। कर्मचारियों को हिन्दी में कार्यालयीन कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु समय-समय पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन करने के अलावा संगत सहायक सामग्री उपलब्ध कराई गई है। इसके अलावा इस केन्द्र में हिन्दी में मूल रूप से टिप्पण एवं आलेखन संबंधी प्रोत्साहन योजना भी वर्ष 2009 से लागू की गई है।

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति का जायजा लेने के लिए 17 दिसम्बर, 2021 को इस केन्द्र का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान प्रस्तुत अभिलेखों का अवलोकन करने के पश्चात माननीय समिति ने राजभाषा कार्यान्वयन के लिए किए गए प्रयासों की सराहना की और भविष्य में भी इसी लग्न के साथ कार्य करते रहने का आह्वान किया।

हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर कार्यकारी निदेशक महोदय द्वारा इस केन्द्र की गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 13वें अंक का विमोचन किया गया। इस पत्रिका का डिजिटल संस्करण सी-डैक की वेबसाइट www.cdac.in पर भी अपलोड किया गया है। कोरोना महामारी से बचाव संबंधी सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए 14-28 सितम्बर, 2021 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस आयोजन के अंतर्गत विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का ऑनलाइन मोड में सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। जिनमें 43 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की। इन प्रतियोगिताओं के विजेता/पुरस्कृत प्रतिभागियों का विवरण नीचे दर्शाया गया है।

इसके अलावा सी-डैक कॉर्पोरेट, पुणे द्वारा अंतर सी-डैक स्तर पर ऑनलाइन मोड में आयोजित की गई विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में भी इस केंद्र के 24 विजेता प्रतिभागियों ने भाग लिया और 08 कर्मचारियों ने पुरस्कार हासिल करके इस केन्द्र को गौरवान्वित किया।

**1. वीडियो प्रस्तुति प्रतियोगिता**

1. श्री राहुल मिश्रा, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, ई. एंड टी.
   श्री सौरभ छावड़ा, परियोजना अभियंता, ई. एंड टी. (प्रथम) (संयुक्त विजेता)
2. श्री अमियां मोहंती, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी (द्वितीय)

**2. सेल्फी के साथ स्वरचित घोष/आदर्श वाक्य (slogan)**

1. श्री रंजन कुमार, वेब डिजाइनर, एस.एन.एल.पी (प्रथम)
2. सुश्री बबीता, प्रधान तकनीकी अधिकारी, एस.एन.एल.पी. (द्वितीय)
3. श्री दीपक कुमार आर्य, प्रधान तकनीकी अधिकारी, एस.एन.एल.पी (तृतीय)

**3. 04 पंक्ति की काव्यमय प्रस्तुति प्रतियोगिता**

1. शीर्षक – "आजादी" : लेखक श्री रंजन कुमार, वेब डिज़ाइनर (प्रथम)
2. शीर्षक "आजादी का संग्राम" : लेखक श्री चन्द्र मोहन, परियोजना सहायक (द्वितीय)
3. शीर्षक – "आजादी का कारवां" : सुश्री नीरू शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी (तृतीय)

**4. घोष वाक्य/ब्रीद वाक्य प्रतियोगिता**

1. श्री अमिय मोहंती, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी (केवल एक प्रविष्टि प्राप्त हुई है)

**5 पोस्टर प्रस्तुति (कार्यालयीन पोस्टर) प्रतियोगिता**

1. श्री अमिय मोहंती, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी (प्रथम)
2. श्री दीपक कुमार आर्य, प्रधान तकनीकी अधिकारी, एस.एन.एल.पी (द्वितीय)
3. सुश्री नीरू शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी (पुस्तकालय) (तृतीय)

**6. ऑनलाइन काव्य पाठ (स्वरचित) प्रतियोगिता**

1. श्री अमियां मोहंती, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी (प्रथम)
2. सुश्री सोनाली नारंग, हिन्दी अनुवादक, एस.एन.एल.पी (द्वितीय)
3. सुश्री बबीता, प्रधान तकनीकी अधिकारी, एस.एन.एल.पी (तृतीय)

**7. निबंध लेखन प्रतियोगिता**

1. श्री रवि कुमार सिंह पी.एस.एस., ई. एंड टी. (प्रथम)
2. सुश्री सोनाली नारंग, हिन्दी अनुवादक, एस.एन.एल.पी. (द्वितीय)
3. सुश्री बबीता, प्रधान तकनीकी अधिकारी, एस.एन.एल.पी. (तृतीय)

**8. फ़िल्मी गीत प्रतियोगिता (किसमें कितना है दम)**

(1) "त्रिनेत्र" टीम (प्रथम)

1. सुश्री नीरू शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी, पुस्तकालय
2. सुश्री कृति सरोहा, संयुक्त निदेशक, ई. एंड टी.
3. सुश्री कल्पना जौहरी, संयुक्त निदेशक, ई. एंड टी.

(2) "अनुगीत"टीम (द्वितीय)

1. सुश्री बबिता, प्रधान तकनीकी अधिकारी, एस.एन.एल.पी.
2. सुश्री अनुराधा शर्मा, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी.
3. श्री रिषभ सिंह, परियोजना अभियंता, एस.एन.एल.पी.

(3) "दीवाने" टीम (तृतीय)

1. श्री अनिल कुमार, सचिव, प्रशासन
2. श्री पुष्पेन्द्र पाल सिंह, परियोजना अभियंता, बी.डी.पी.एम.
3. सुश्री अपर्णा राममूर्ती, संयुक्त निदेशक, ई-गवर्नेंस

♦♦♦

हिन्दी को अपनाने का फैसला केवल हिन्दी वालों ने ही नहीं किया। हिन्दी की आवाज पहले अहिन्दी प्रान्तों से उठी। स्वामी दयानंद, महात्मा गाँधी या बंगाल के नेता हिन्दी भाषी नहीं थे। हिन्दी हमारी आजादी के आंदोलन का एक कार्यक्रम बनी।

- अटल बिहारी वाजपेयी

# संसदीय राजभाषा समिति द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति का जायजा लेने के लिए सी-डैक, नोएडा का निरीक्षण

– ओम प्रकाश शर्मा
हिन्दी परामर्शकार

संसदीय राजभाषा समिति का गठन राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा-4 के अधीन वर्ष 1976 में किया गया था। यह उच्चाधिकार प्राप्त संसदीय समिति है। इस समिति में 30 सदस्य होते हैं, जिनमें से 20 लोकसभा के सदस्य और 10 राज्यसभा के सदस्य होते हैं, जो क्रमश: लोकसभा तथा राज्यसभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित किए जाते हैं । माननीय गृह मंत्री जी इस समिति के पदेन अध्यक्ष होते हैं। राजभाषा कार्य की प्रगति के निरीक्षण कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए इस समिति को तीन उप-समितियों में विभाजित किया गया है। समिति की ये तीनों उप-समितियां अब तक 14,000 से अधिक कार्यालयों का निरीक्षण कर चुकी हैं और लगभग 882 गणमान्य व्यक्तियों का मौखिक साक्ष्य भी ले चुकी हैं, जिनमें उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश, राज्यों के मुख्यमंत्री और राज्यपाल शामिल हैं। इसी कार्य के आधार पर समिति अब तक अपने प्रतिवेदन के दस खण्ड राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर चुकी है। इनमें से नौ खण्डों में की गई सिफारिशों पर राष्ट्रपति जी के आदेश जारी हो चुके हैं। इस समिति का मुख्य उद्देश्य सरकार के कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा करना है।

इसी क्रम में 17 दिसम्बर, 2021 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा सी-डैक नोएडा का निरीक्षण किया गया। यह निरीक्षण विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस दौरान श्री विवेक खनेजा, कार्यकारी निदेशक द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया। संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति के माननीय उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब, माननीय संयोजक प्रो० रीता बहुगुणा जोशी एवं अन्य माननीय सदस्यों ने निरीक्षण के संबंध में प्रस्तुतीकरण के दौरान सी-डैक, नोएडा द्वारा किए गए अनुसंधान एवं विकास कार्यों की प्रशंसा की। सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में हुई प्रगति की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि सी-डैक, नोएडा ने राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है। इसके साथ ही माननीय सदस्यों ने राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए कुछ सुझाव भी दिए। इस आलोक में कार्यकारी निदेशक महोदय द्वारा माननीय समिति को कुछ आश्वासन भी दिए गए थे। इन आश्वासनों पर नियत अवधि के भीतर अनुवर्ती कार्रवाई पूर्ण करके अनुपालनात्मक रिपोर्ट निर्धारित माध्यम से माननीय

समिति को प्रस्तुत कर दी गई है। उपरोक्त निरीक्षण से संबंधित प्रमुख झलकियां नीचे देखी जा सकती हैं।

♦♦♦

दिनांक 17.12.2021 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में संसदीय राजभाषा निरीक्षण सफलतापूर्वक संपन्न होने के पश्चात संसदीय राजभाषा समिति के माननीय उपाध्यक्ष कार्यकारी निदेशक महोदय को निरीक्षण प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए।

सी-डैक, नोएडा में 23 मार्च 2022 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागी

सी-डैक, नोएडा में हिन्दी पखवाड़ा- 2022 मनाने के उपलक्ष्य में आयोजितः शुद्ध हिन्दी : किसमें कितना है दम प्रतियोगिता- 2 व्यक्ति 2 मिनट केवल हिंदी के संगः में भाग लेते हुए प्रतिभागी

कवर डिजाइन: मुकुंद कुमार रॉय